bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2081 युगाब्द 5126 कुल पृष्ठ–48 जनवरी प्रथम महाकुम्भ विशेषांक 2025, वर्ष –36 : अंक –11

वर्तमान

कमल ज्योति

महाकुम्भ विशेषांक 2025

₹20

उत्तर प्रदेश सरकार

वेबसाइट
https://kumbh.gov.in/

मोबाइल ऐप
Maha Kumbh Mela 2025

मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर

दिव्य-भव्य-डिजिटल महाकुम्भ 2025

13 जनवरी से 26 फरवरी

प्रयागराज

Kumbh Administration | Emergency Assistance | Hotel and Food | Achievements of UP

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

mahakumbh_25/ upmahakumbh MahaKumbh_2025 https://kumbh.gov.in/

वर्तमान

कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
Vartman Kamaljyoti
@bjpkamaljyoti

मेष राशि गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।
अमावस्या तदा योगः कुम्भाख्य तीर्थनायके।।
मकरे च दिवानाथे ह्यजगे च वृहस्पतौ।
कुम्भ योगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यति दुर्लभः।।

सनातन संस्कृति का अद्भुत समागम ''महाकुंभ''

सम्पादकीय

सत्य सनातन भारतीय संस्कृति में सर्वपंथ समागम का अद्भुत संगम होता है, कुंभ में जिसमें धार्मिक, समाजिक, आध्यात्मिक चुनौतियों के समाधान की सर्वमान्य ''राह'' निकाली जाती है। संत समाज, आमजन बिना भेदभाव के समरस हो साथ संगम में डुबकी लगाकर ''लोकमंगल'' सर्वे भवन्तु सुखिनः की साधना करता है। 2025 का महाकुम्भ 144 वर्षों बाद विशेष शुभ मुहूर्त लिये लगा है।

सनातन संस्कृति के सबसे बड़े समागम महाकुंभ का आयोजन प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी के मध्य हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के 117वें एपिसोड में 'महाकुंभ–2025' की दिव्यता, भव्यता की चर्चा करते हुए देशवासियों को बताया कि संगम तट पर अद्भुत तैयारियां चल रही हैं। जब प्रयागराज गया था तो हेलीकाप्टर से पूरा कुम्भ क्षेत्र देखकर मन प्रसन्न हो गया। विशाल, सुन्दर, भव्यता, दिव्यता वाला कुम्भ अगर कम शब्दों में कहें तो 'महाकुंभ का संदेश, एक हो पूरा देश' और दूसरे तरीके से कहूंगा 'गंगा की अविरल धारा, न बंटे समाज हमारा'। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने देश–दुनिया के श्रद्धालुओं को महाकुंभ में आमंत्रित भी किया।

केवल इसकी विशालता में ही नहीं, बल्कि इसकी विविधता में भी है। इस आयोजन में करोड़ों लोग एक साथ एकत्र होते हैं। लाखों संत, हजारों परंपराएं, सैकड़ों संप्रदाय, अनेक अखाड़े इसका हिस्सा बनते है। कहीं कोई भेदभाव नहीं दिखता है। यहां कोई बड़ा–छोटा नहीं होता। 'अनेकता में एकता' का ऐसा दृष्य विश्व में कहीं और देखने को नहीं मिलेगा, इसलिए हमारा कुम्भ 'एकता का महाकुंभ' भी होता है। इस बार का महाकुंभ भी एकता के महाकुंभ के मंत्र को सशक्त करेगा। पीएम ने अपील की कि जब हम कुम्भ में शामिल हों तो एकता के इस संकल्प को अपने साथ लेकर वापस आएं और समाज में विभाजन–विद्वेष के भाव को नष्ट करने का संकल्प भी लें।

आधुनिक, वैज्ञानिक, डिजिटल महाकुंभ व्यवस्था

प्रयागराज में देश–दुनिया के श्रद्धालु डिजिटल महाकुंभ के भी साक्षी बनेंगे। डिजिटल नेविगेशन की मदद से आगंतुकों को अलग–अलग घाट, मंदिर, साधुओं के अखाड़े तक पहुंचने का रास्ता मिलेगा, यही नेविगेशन सिस्टम पार्किंग तक पहुंचने में भी मदद करेगा। पहली बार कुम्भ आयोजन में एआई चैटबॉट का प्रयोग होगा। इसके माध्यम से 11 भारतीय भाषाओं में कुम्भ से जुड़ी हर जानकारी हासिल की जा सकेगी। इस चैट बॉट से टेक्स्ट टाइप करके या बोलकर किसी भी तरह की मदद मांग सकते हैं। मेला क्षेत्र को एआई पावर्ड कैमरा से कवर किया जा रहा है। कुम्भ में कोई बिछड़ जाएगा तो इन कैमरों से उन्हें खोजने में भी मदद मिलेगी। श्रद्धालुओं को डिजिटल लॉस्ट एंड फाउंड सेंटर की सुविधा भी मिलेगी। श्रद्धालुओं को मोबाइल पर गवर्नमेंट अप्रूव्ड टूर पैकेजेस ठहरने की जगह और होमस्टे के बारे में भी जानकारी दी जाएगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वयं महाकुंभ की कमान संभाल रखी है। वे नियमित रूप से प्रयागराज पहुंचकर तैयारियों का जायजा लेने के साथ ही कार्यों की समीक्षा कर रहे हैं।

योगी जी स्वयं विशिष्ठ अतिथियों को महाकुंभ का आमंत्रण मिलकर दे रहे हैं। मुख्यमंत्री ने राष्ट्रपति मा0 द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, स्वास्थ्य मंत्री–भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, मिजोरम के राज्यपाल जनरल वीके सिंह आदि से मिलकर उन्हें आमंत्रित किया है। इसके साथ ही योगी सरकार के मंत्रियों ने अन्य राज्यों में पहुंचकर मुख्यमंत्रियों, राज्यपाल व अन्य गणमान्य लोगों को महाकुंभ में आमंत्रित किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसके साथ विश्व के सैकड़ों देशों के प्रतिनिधि आ रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश, देश व समूची दुनिया के श्रद्धालुओं को 'महाकुंभ–2025' में आमंत्रित किया।

सभी अखाड़ों की पेशवाई के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी त्रिवेणी 'महाकुम्भ' संगम क्षेत्र की व्यवस्थाओं का निरिक्षण किया आधुनिक घाट, स्वच्छता, सुरक्षा के साथ–साथ सभी अखाड़ों में जाकर साधु संतों से आर्शिवाद लिया। यह महाकुम्भ ''विश्व का कल्याण हो'' के उद्घोष संकल्प के साथ अद्भुत भव्य अनुष्ठान है।

राजकुमार

हम सब मिलकर विकसित भारत बनायेंगे : मोदी

18वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन में भारतवंशी प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भगवान जगन्नाथ और भगवान लिंगराज की इस पावन धरती पर, मैं पूरे विश्व से आए अपने भारतवंशी परिवार का स्वागत करता हूं।

आप जिस ओडिशा की महान धरती पर जुटे हैं, वो भी भारत की समृद्ध विरासत का प्रतिबिंब है। ओडिशा में कदम–कदम पर हमारी हैरिटेज के दर्शन होते हैं। उदयगिरी–खंडगिरी की historical caves हों, कोणार्क का सूर्य मंदिर हो, तम्रलिप्ति, मणिकपटना और पलूर के प्राचीन पोर्ट्स हों, ये देखकर हर कोई गौरव से भर उठता है। सैकड़ों वर्ष पहले भी ओडिशा से हमारे व्यापारी–कारोबारी लंबा समुद्री सफर करके बाली, सुमात्रा, जावा जैसे स्थानों तक जाते थे। उसी स्मृति में आज भी ओडिशा में बाली जात्रा का आयोजन होता है। यहीं ओडिशा में धौली नाम का वो स्थान है, जो शांति का बड़ा प्रतीक है। दुनिया में जब तलवार के जोर पर सम्राज्य बढ़ाने का दौर था, तब हमारे सम्राट अशोक ने यहां शांति का रास्ता चुना था। हमारी विरासत का ये वही बल है, जिसकी प्रेरणा से आज भारत दुनिया को कह पाता है कि– भविष्य युद्ध में नहीं है, बुद्ध में है। इसलिए ओडिशा की इस धरती पर आपका स्वागत करना मेरे लिए बहुत विशेष हो जाता है।

मैंने हमेशा भारतीय डायस्पोरा को भारत का राष्ट्रदूत माना है। मुझे बहुत खुशी होती है जब पूरी दुनिया में आप सभी साथियों से मिलता हूं, आपसे बातचीत करता हूं। जो प्यार मुझे मिलता है, वो मैं भूल नहीं सकता। आपका वो स्नेह, वो आशीर्वाद, हमेशा मेरे साथ रहता है।

18 प्रवासी भारतीय सम्मेलन, उड़ीसा

आज मैं आप सभी को व्यक्तिगत तौर पर आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूं, आपको जेंदा लवन भी बोलना चाहता हूं। Thank you इसलिए क्योंकि आपकी वजह से मुझे दुनिया में गर्व से सिर ऊंचा रखने का मौका मिलता है। बीते 10 वर्षों में मेरी दुनिया के अनेक लीडर्स से मुलाकात हुई है। दुनिया का हर लीडर अपने देश के भारतीय डायस्पोरा की, आप सभी की बहुत प्रशंसा करता है।

इसका एक बड़ा रीजन वो सोशल वैल्यूज हैं, जो आप सभी वहां की सोसायटी में ऐड करते हैं। हम सिर्फ मदर ऑफ डेमोक्रेसी ही नहीं हैं, बल्कि डेमोक्रेसी हमारी लाइफ का हिस्सा है। हमारी जीवन पद्धति है। हमें डायवर्सिटी सिखानी नहीं पड़ती, हमारा जीवन ही डायवर्सिटी से चलता है। इसलिए भारतीय जहां भी जाते हैं, वहां की सोसायटी के साथ जुड़ जाते हैं। हम जहां जाते हैं, वहां के रूल्स, वहां के ट्रेडिशन्स की रिस्पेक्ट करते हैं। हम पूरी ईमानदारी से उस देश की, उस सोसायटी की सेवा करते हैं, वहां की ग्रोथ और प्रॉसपैरिटी में कंट्रीब्यूट करते हैं और इन सबके साथ ही, हमारे दिल में, भारत भी धड़कता रहता है हम भारत की हर खुशी के साथ खुश होते हैं, भारत की हर उपलब्धि के साथ उत्सव मनाते हैं।

21st सेंचुरी का भारत, आज जिस स्पीड से आगे बढ़ रहा है, जिस स्केल पर आज भारत में डवलपमेंट के काम हो रहे हैं, वो अभूतपूर्व है।

सिर्फ 10 साल में भारत ने अपने यहां 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। सिर्फ 10 सालों में भारत, दुनिया की 10th largest economy से ऊपर उठकर 5th largest economy बन गया है। वो दिन दूर

नहीं, जब भारत, दुनिया की third largest economy बनेगा। भारत की सफलता आज दुनिया देख रही है। आज जब भारत का चंद्रयान शिव–शक्ति प्वाइंट पर पहुंचता है, तो हम सबको गर्व होता है। आज जब दुनिया डिजिटल इंडिया की ताकत देखकर हैरान होती है, तो हम सबको गर्व होता है, आज भारत का हर सेक्टर आसमान की ऊंचाई छूने के लिए आगे बढ़ रहा है। रीन्यूएबल एनर्जी हो, एविएशन इकोसिस्टम हो, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी हो, मेट्रो का विशाल नेटवर्क हो, बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट हो, भारत की प्रगति की गति सारे रिकॉर्ड तोड़ रही है। आज भारत, मेड इन इंडिया फाइटर जेट बना रहा है। ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट बना रहा रोल का विस्तार कर रहा है।

भारत के टैलेंट का डंका आज पूरी दुनिया में बज रहा है, आज हमारे प्रोफेशनल्स दुनिया की बड़ी कंपनियों के जरिए ग्लोबल ग्रोथ में कंट्रीब्यूट कर रहे हैं। भारत की राष्ट्रपति आदरणीया द्रौपदी मुर्मू जी के हाथों कल कई साथियों को प्रवासी भारतीय सम्मान भी दिया जाएगा। मैं सम्मान पाने वाले सभी महानुभावों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

आप जानते हैं, आने वाले कई दशकों तक भारत, दुनिया का सबसे यंग और स्किल्ड पॉपुलेशन वाला देश बना रहेगा। ये भारत ही है, जहां से दुनिया की एक बड़ी स्किल डिमांड पूरी होगी। आपने देखा होगा, दुनिया के

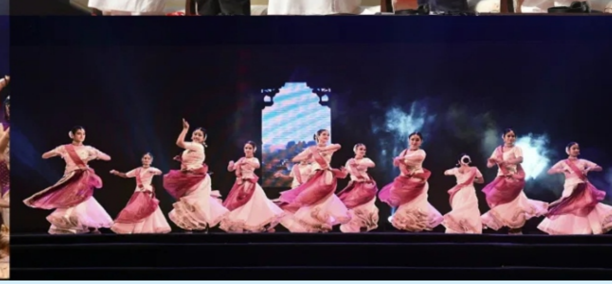

है, और वो दिन भी दूर नहीं, जब आप किसी मेड इन इंडिया प्लेन से ही प्रवासी भारतीय दिवस मनाने भारत आएंगे।

भारत के ये जो अचीवमेंट्स हैं, ये जो prospects आज भारत में दिख रहे हैं, इसके कारण भारत की वैश्विक भूमिका बढ़ रही है। भारत की बात को आज दुनिया ध्यान से सुनती है। आज का भारत, अपना पॉइन्ट तो स्ट्रॉन्गली रखता ही है, ग्लोबल साउथ की आवाज को भी पूरी ताकत से उठाता है। जब भारत ने अफ्रीकन यूनियन को जी–20 का परमानेंट मेंबर बनाने का प्रपोजल रखा, तो सभी मेंबर्स ने इसका समर्थन किया। ह्यूमेनिटी फर्स्ट के भाव के साथ, भारत अपने ग्लोबल अनेक देश अब, भारत के स्किल्ड यूथ का दोनों हाथों से स्वागत कर रहे हैं। ऐसे में भारत सरकार का भी प्रयास है कि कोई भी भारतीय विदेश जाए, तो वो बेहतरीन स्किल के साथ ही जाए। इसलिए हम अपने यूथ की लगातार skilling, re-skilling और up-skilling कर रहे हैं।

We give great importance to your convenience and comfort- Your safety and welfare are a top priority- We consider it our responsibility to help our diaspora during crisis situations, no matter where they are- This is one of the guiding principles of

India's foreign policy today- Over the last decade] our embassies and offices worldwide have been sensitive and proactive-Earlier, in many countries, people had to travel long distances to access consular facilities- They had to wait for days for help- Now, these problems are being solved- In just the last two years, fourteen embassies and consulates have been opened- The scope of OCI cards is also being expanded- It has been extended to PIOs of the 7th generation of Mauritius and 6th generation of सूरीनाम, मार्टीनिक और गुआदुल।

दुनिया भर में फैले भारतीय डास्पोरा का इतिहास, उनके उस देश में पहुंचने और वहां अपना परचम लहराने की गाथाएं, भारत की अहम विरासत है। आपकी ऐसी अनेक interesting और inspiring stories हैं। जिन्हें सुनाया जाये। वे भारत के किस किस गांव से, किस शहर से गए, इसकी पहचान हो। वे कहाँ–कहाँ जाकर बसे, उन जगहों को भी identify किया जाए। उनकी लाइफ कैसी रही, उन्होंने कैसे challenges को opportunities में बदला, इसे सामने लाने के लिए फिल्म बन सकती है, डॉक्यूमेंट्री बन सकती है। गिरमिटिया लैगेसी पर स्टडी हो, इस पर रिसर्च हो, इसके लिए यूनिवर्सिटी में चेयर स्थापित की जा सकती है, रेग्यूलर इंटरवल पर वर्ल्ड गिरमिटिया कॉन्फ्रेंस भी कराई जा सकती है।

हम बड़े गर्व से यहां काशी–तमिल संगमम, काशी तेलुगू संगमम, सौराष्ट्र तमिल संगमम जैसे आयोजन करते हैं। अभी कुछ दिन बाद ही संत थिरूवल्लुवर दिवस है। हमारी सरकार ने संत थिरूवल्लुवर के विचारों के प्रसार के लिए थिरूवल्लुवर कल्चर सेंटर्स की स्थापना का निर्णय लिया है। सिंगापुर में ऐसे पहले सेंटर का काम शुरू हो गया है। अमेरिका की ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी में थिरूवल्लुवर चेयर की स्थापना भी की जा रही है। ये

जाना, दिखाया जाना, संजोया जाना जरूरी है। ये हमारी, shared legacy है, shared heritage है। अभी कुछ दिन पहले मैंने मन की बात में, इससे जुड़े एक प्रयास पर विस्तार से बात की थी। कुछ सेंचुरीज पहले गुजरात से कई परिवार ओमान में जाकर बस गए थे। 250 years की उनकी जर्नी काफी inspiring है। यहां इससे जुड़ी एक एग्जीबिशन भी लगाई गई है। इसमें इस कम्यूनिटी से जुड़े thousands of documents को digitise करके दिखाया गया है। साथ ही उनके साथ एक Oral History Project भी किया गया है। यानि कम्यूनिटी के जो सीनियर लोग हैं, जिनकी काफी हम हो चुकी है, उन्होंने अपने experience share किए हैं। मुझे खुशी है कि इनमें से कई फैमिलीज आज यहां हमारे बीच मौजूद भी हैं। साथियों, इसी तरह के प्रयास हमें अलग–अलग देशों में गए डायस्पोरा के साथ भी करने चाहिए। जैसे एक उदाहरण हमारे ''गिरमिटिया'' भाई–बहन हैं। क्यों ना, हमारे गिरमिटिया साथियों का एक डेटाबेस create किया सारे प्रयास, तमिल भाषा को, तमिल विरासत को, भारत की विरासत को दुनिया के कोने–कोने में ले जा रहे हैं।

भारत में हैरिटेज से जुड़े अपने स्थानों को कनेक्ट करने के लिए भी हमने अनेक कदम उठाए हैं। जैसे भगवान राम और सीता माता से जुड़े स्थानों के दर्शन के लिए स्पेशल रामायण एक्सप्रेस ट्रेन है। भारत गौरव ट्रेनें भी, देश के important heritage places को जोड़ती हैं। अपनी सेमी हाईस्पीड, वंदे भारत ट्रेन्स से भी हमने देश के बड़े हेरिटेज सेंटर्स को जोड़ा है।

मुझे विश्वास है कि आप जब भारत से लौटकर जाएंगे, तो विकसित भारत का रेजोल्यूशन, ये संकल्प भी आपके साथ जाएगा। हम सब मिलकर विकसित भारत बनाएंगे। साल 2025 आप सभी के लिए, मंगलमय हो, हेल्थ हो या वेल्थ, आप समृद्ध रहें।

इसी कामना के साथ, आप सभी का फिर से भारत में स्वागत है, अभिनंदन है।

बहुत बहुत शुभकामनाएं। बहुत बहुत धन्यवाद !

भारतीय संस्कृति का गौरव 'महाकुंभ'

महाकुम्भ को लेकर प्रधानमंत्री जी का हृदय का यह स्पन्दन स्पष्ट सुना जा सकता था। मैंने प्रधानमंत्री जी की उदात्त भावनाओं को समझ उनके मन्तव्य को हृदयंगम किया। पिछला कुम्भ भी मुख्यमंत्री के रूप में मेरे समक्ष था वे भी दैनन्दिन प्राशासनिक क्रियाकलापों के साथ–साथ विश्व के सबसे विशाल धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन प्रयागराज महाकुम्भ को अद्वितीय बनाने का लक्ष्य भी सुनिश्चित हो चुका था। मैं संकल्प ले चुका था कि करोड़ों लोगों की श्रद्धा और आस्था के प्रतीक तथा भारतीय संस्कृति के गौरव पूर्ण महापर्व को विश्व पटल पर चमकाना है।

मैंने भारतीय संस्कृति के गौरव को बढ़ाने सम्बन्धी एक प्रसंग के दौरान कह दिया था कि 'हमारी सरकार में प्रयागराज का कुम्भ माँ गंगा, यमुना एवं सरस्वती की महिमा तथा अपरम्पार कृपा से यह संकल्प निरन्तर भव्य होता जा रहा है।

इलाहाबाद को उसकी पौराणिक पहचान मिले, यह आमजन की भावना रही है। मैनें हमेशा से ही इलाहाबाद को उसके पौराणिक नाम प्रयागराज से ही सम्बोधित किया। वर्तमान में इलाहाबाद का नामकरण भी प्रयागराज कर दिया गया। इस दिशा में सर्वप्रथम हम लोगों ने प्रयागराज में होने वाले भारतीय संस्कृति के महापर्व महाकुम्भ अब अपनी दिव्यता की ओर है।

माँ गंगा की अविरलता एवं निर्मलता सबसे बड़ी चुनौती थी। माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के नमामि गंगा मिशन और सरकार की प्रतिबद्धता के कारण अविरल गंगा, निर्मल गंगा का यह संकल्प भी पूर्ण हुआ। यही नहीं कुम्भ में आने वाले प्रत्येक श्रद्धालु की त्रिवेणी में डुबकी इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण भी होगा। माँ गंगा के स्वच्छ एवं अविरल जल प्रवाह के साथ–साथ प्रत्येक घाट की स्वच्छता एवं सुन्दरता ने भी देशी–विदेशी सभी श्रद्धालुओं का मन मोह रहा है।

प्रधानमंत्री जी के सत्प्रयासों से ही हमारा यह पवित्र कुम्भ यूनेस्को द्वारा 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' के रूप में भी मान्यता प्राप्त कर चुका है। इसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में भारतवर्ष का सांस्कृतिक गौरव और सुदृढ़ हुआ है। मेरा आरम्भ से ही प्रयास था कि कोटि–कोटि धर्मप्राण जनता की आस्था के प्रतीक कुम्भ की दिव्यता और भव्यवता के ऐसे प्रबन्ध किए जाएं जिससे इस मेले में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की कठिनाईयों का सामना न करना पड़े। साथ ही, प्रयागराजवासियों को स्थाई विकास का लाभ भी प्राप्त हो सके।

समयबद्ध रूप से तैयारियों को पूर्ण करना एवं उनका समुचित प्रबन्धन एक पहाड़ जैसा लक्ष्य था। मैं स्वयं प्रत्येक पखवाड़े प्रयागराज जाकर तैयारियों का निरीक्षण करता था और छोटी से छोटी कमी की ओर इंगित कर जन समागम को किसी भी कठिनाई का सामना न करना पड़े, इसके लिए दिशा–निर्देश देता था। हमारे अधिकारियों ने भी मेरी मनोभावना को भलीभाति समझते हुए पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा और लगनशीलता के साथ इस पवित्र कार्य को गति प्रदान की, जिस कारण सभी कार्य समय से पूर्व पूर्ण हो सके।

शास्त्रों में प्रयागराज को सभी तीर्थों का राजा कहा गया है। 'तीरथ पतिहिं आव सब कोई' की मान्यता अकारण नहीं है। इसके पीछे एक निगूढ़ दर्शन छिपा हुआ है। यह पर्व अपने आप में विभिन्न वैविध्य एवं वैशिष्ट्य समेटे अनेकता में एकता का शंखनाद करता है। यह पर्व 'एकोहं बहु स्याम' की भावना का साक्षात् निदर्शन हैं। प्रयागराज कुम्भ का सारस्वत और धार्मिक अनुष्ठान प्रयाग स्थित त्रिवेणी संगमत तट पर 49 दिनों तक अनवरत रूप से संचालित होता रहा। इस महापर्व में 42 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने प्रमुख 6 स्नान पर्वो– मकर संक्रान्ति, पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या, बसन्त पंचमी, माघ पूर्णिमा और महाशिवरात्रि पर संगमस्नान का पुण्य लाभ अर्जित करेंगे।

कुम्भ के अवसर पर जितने अपार जनसमूह ने संगम में स्नान करेंगे, वह संख्या विश्व के कई देशों को छोड़कर शेष देशों की जनसंख्या से अधिक है। तीर्थयात्रा के साथ–साथ पर्यटन का भी सुखद अनुभव कराने में कुम्भ अभूतपूर्व रूप से सफल सिद्ध होगा। कुम्भ के अन्तिम स्नान महाशिवरात्रि तक प्रयागराज पधारे करोड़ों श्रद्धालु सुखद स्मृतियाँ लेकर सुरक्षित वापस लौटेंगे।

पिछले कुम्भ में जहाँ अनेक कीर्तिमान रचे गए तो वहीं अनेक तोड़े भी गए। इस बार का कुम्भ कई अर्थों में उल्लेखनीय और स्मरणीय होगा। इस कुम्भ में भारत ही नहीं, विश्व के तमाम देशों की संस्कृति और सभ्यताओं के भी दर्शन हुए। कुम्भ का निमन्त्रण भी सरकार ने अनेक गणमान्य लोगों को भेजा है। अनामन्त्रित ही करोड़ों की संख्या में धर्मप्राण जनसमूह यहाँ पहुंचता था तथा स्नान–दान आदि के पश्चात् अपने गंतव्य को लौट जाता था किन्तु इस बार केन्द्र और राज्य सरकार दोनों के प्रयास से कुम्भ का न्यौता संसार भर में भेजा गया और इसका लाभ यह मिला कि विश्व के प्रत्येक कोने से कुम्भ में सहभागिता होगी।

पिछले 2019 कुम्भ की सफलता की बात अगर की जाय तो वो भी अद्भुत रहा लेकर उससे कई बातों में ये महाकुम्भ अलग है पिछले कुम्भ में मा0 प्रधानमंत्री जी ने इस अवसर पर कहा कि नए एयरपोर्ट के निर्माण से प्रयागराज में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। उन्होंने केवल 11 माह में सिविल एन्कलेव एयरपोर्ट बनाने के लिए अधिकारियों की पीठ भी थपथपाई। इसी दिन माननीय प्रधानमंत्री जी ने कुम्भ की ऐतिहासिक तैयारियां देखने के साथ ही त्रिवेणी संगमत तट पर पूजन किया एवं अक्षयवट का दर्शन एवं पूजन करने के पश्चात् इसे सभी श्रद्धालुओं के लिए खोलने की घोषणा भी की। 400 वर्षों अक्षयवट का यह दर्शन आम श्रद्धालुओं को सुलभ हुआ। उन्होंने इन्टीग्रेटेड कन्ट्रोल एण्ड कमाण्ड सेन्टर तथा सम्पूर्ण मेले पर नियन्त्रण एवं निरीक्षण हेतु आर्टीफिशियल इन्टेलीजेन्स प्रणाली का लोकार्पण भी किया। कमाण्ड सेन्टर की सहायता 1100 से अधिक सी0सी0टी0वी0 कैमरों के द्वारा सम्पूर्ण मेला क्षेत्र की निगरानी की गई। कुम्भ के सभी महत्वपूर्ण कार्यों में डिजिटल तकनीक के प्रयोग से जो समयबद्धता और गुणवत्ता प्राप्त हुई, उसने इसे **'डिजिटल कुम्भ'** की संज्ञा से भी सुशोभित किया।

आस्था की डुबकी :– भारत के माननीय राष्ट्रपति, माननीय उपराष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री, माननीय केन्द्रीय मंत्रिगण, 1500 से अधिक मा0 न्यायाधीषगण के साथ ही प्रथम बार उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्रिमण्डल के सदस्यों ने भी कुम्भ में डुबकी लगाई। प्रतिपक्ष के नेता भी पवित्र त्रिवेणी संगम में गोते लगाने में पीछे नहीं रहे। अन्य देशों के प्रतिनिधिगण, देशों के राजदूत, प्रवासी भारतीयों का कुम्भ में आगमन महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा। देशों ने कुम्भ में अपने राष्ट्रध्वज लगाए। यूएनओ के सदस्यों ने कुम्भ में भाग लिया एवं प्रायशः देश के छः लाख गांवों के 24 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने कुम्भ में प्रतिभाग किया।

सभी ने देखा कि शुद्ध अन्तःकरण से इतने विशाल महापर्व का सफल आयोजन कैसे होता है, जबकि पूर्व में कुम्भ का अर्थ अव्यवस्था, गन्दगी एवं अराजकता से भरे मात्र एक मेले हो गया था। प्रवासी भारतीयों ने बदलते हुए उत्तर प्रदेश को अनुभूत किया। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार ने किस तरह इस पर्व का आयोजन किया वह निश्चय ही प्रशंसनीय है। प्रवासी भारतीयों ने माना कि आज उत्तर प्रदेश बड़े से बड़ा आयोजन कर सकने में समर्थ है।

2019 के कुम्भ में भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आकर विधि–विधान से संगम–स्नान किया और स्वच्छता के प्रहरी, स्वच्छाग्रहियों/स्वच्छता कर्मियों के पाँव पखार कर त्रेता युग का स्मरण करवाकर अभिनव उदाहरण प्रस्तुत किया। मॉरिशस के माननीय प्रधानमंत्री श्री प्रविन्द जगन्नाथ भी अपने परिवार और प्रतिनिधियों के साथ कुम्भ के अलौकिक आयोजन में उपस्थित हुए। उन्होंने संगम में डुबकी लगाने के साथ ही माँ गंगा की आरती तो की ही, साथ ही लेटे हुए हनुमान जी के दर्शन भी किए। कुम्भ विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक, सांस्कृतिक और शाश्वत अनुश्ठान है, इस आयोजन में इस बात को प्रमाणित कर दिया है।

नयनाभिराम कुम्भः– संगम के 3200 हेक्टेयर क्षेत्र में कुम्भ

नगरी बसाई गई थी। ऐसा लगता था कि जैसे पूरा प्रयागराज ही टैण्ट सिटी में परिवर्तित होकर रह गया है। उसे देखते ही लोगों को दैवीय अनुभूति तो हुई ही, प्रयागराज के आध्यात्मिक वैभव और गौरव की अनुभूति भी हुई। पांच किलोमीटर के क्षेत्र में 35 घाटों पर हेलीकॉप्टरों से की गई पुश्प–वर्शा ने भी श्रद्धालुओं को इस बात की अनुभूति कराई कि शासन और प्रशासन के श्रद्धाभाव में कोई कमी नहीं है। 6000 से अधिक विभिन्न संस्थाओं ने कुम्भ आयोजन में भागीदारी की। पेण्ट माई सिटी अभियान के तहत लगभग बीस लाख वर्ग फुट में वॉल पेण्टिंग कराकर शहर को सजाया गया। इससे प्रयागराज के प्राचीन इतिहास एवं भव्य–भूगोल का भी ज्ञान हुआ। प्रयागराज की कार्य संस्कृति और आचार–विचार की झलक भी लोगों को देखने को मिली। प्रयागराज की ऋषि परम्परा, गुरू–शिष्य परम्परा और ज्ञान–वैराग्य यहां की दीवारों पर भी नजर आए। दीवारों और सड़ाकों पर अलग–अलग कलाकृतियां उकेरी गई। सड़क

पर लगी हेलोजन लाइट्स और प्रशंसनीय विद्युत–व्यवस्था के आलोक में प्रयागराज का आकर्षण देखते ही बनता था।

विश्व कीर्तिमान :– संसार भर में होने वाले इस प्रकार के अद्वितीय आयोजन में इस वर्ष अनेक नए कीर्तिमान रचे गए जो **'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड'** में अंकित हुए। पहला रिकॉर्ड परिवहन विभाग द्वारा बनाया गया। जिसमें सोरांव–नवाबगंज राजमार्ग पर 503 शटल बसों की परेड कराई गई। इतनी बसों ने एक साथ 3.2 किमी. तक का सफर बिना रूके तय किया। दूसरा रिकॉर्ड गंगा पण्डाल में लगातार आठ घंटे तक सात हजार से अधिक लोगों ने हाथों की छाप लगाकर बनाया। तिसरा रिकॉर्ड दस हजार सफाई कर्मियों ने पहली बार एक साथ झाडू लगाकर स्वच्छता के सन्देश को रेखांकित किया।

भारत के इतिहास में प्रथम बार प्रयागराज में उत्तर प्रदेश सरकार की कैबिनेट बैठक हुई। आजादी के बाद पहली बार अक्षयवट एवं सरस्वती कूप को जनता के दर्शनार्थ खोला गया। प्रथम बार भारत के किसी प्रधानमंत्री ने स्वच्छताकर्मियों के पैर पखारे और उनकी अहर्निश सेवाओं के लिए उनका सम्मान किया। पहली बार इस महापर्व में किन्नर समाज के साधु–संतों ने भी पेशवाई निकाली और संगम में स्नान किया।

एक भारत – श्रेष्ठ भारत :– कुम्भ में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'कला ग्राम' स्थापित किया गया था। देश के विभिन्न प्रान्तों के सांस्कृतिक वैशिष्ट्य की मनोरम झाँकियों ने 'एक भारत–श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना को साकार किया। उत्तर–मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र तथा देश भर में स्थापित क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के साथ संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी आदि के मंच स्थापित किए गए। देश के विभिन्न प्रान्तों के हस्तकला उत्पाद, निरन्तर कार्यक्रमों की प्रस्तुति ने राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को बल प्रदान किया तथा सांस्कृतिक–वैशिष्टय की जीवन्त झांकी के दिग्दर्शन हुए।

शिविर एवं प्रदर्शनियां :– कुम्भ के दौरान अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, युवा चित्रकार शिविर एवं प्रदर्शनी अभिलेखों में कुम्भ विशयक उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार की प्रदर्शनी तथा मेला क्षेत्र में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उ0प्र0 की प्रदर्शनी के साथ ही विभिन्न विभागों की प्रदर्शनियों ने कुम्भ में उद्देश्यपरक सहभागिता की । अयोध्या शोध संस्थान द्वारा श्रीराम की विश्व यात्रा की प्रदर्शनी अक्षयवट पण्डाल में लगाई गई। उ0प्र0 संग्रहालय निदेशालय द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी, असम के कलाकारों द्वारा लगाई गई मुखौटों की प्रदर्शनी तथा देश के प्रसिद्ध कलाकार बाबा सत्यनारायण वर्मा द्वारा गंगा प्रदर्शनी आदि भी लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनी।

वैचारिक कुम्भ :– कुम्भ के अवसर पर विभिन्न वैचारिक संगोष्ठियों के माध्यम से वृहद् सांस्कृतिक–विमर्श के आयोजन हुए, जिनमें देश की नामचीन विभूतियों ने विषयाधारित वैचारिक–सत्रों में अपने विचार व्यक्त किए। प्रयागराज कुम्भ के सामानान्तर विचार कुम्भ का आयोजन स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, महाऋषि अरविन्द जैसे महापुरूषों के वैचारिक अधिष्ठान को आगे बढ़ाने का पुनीत प्रयास रहा। विचार कुम्भ के अन्तर्गत 'पर्यावरण कुम्भ (काशी), 'नारीशक्ति कुम्भ (वृन्दावन)', 'समरसता कुम्भ (अयोध्या), 'युवा कुम्भ (प्रयागराज)', में आयोजित किए गए। इनके अलावा 'नेत्र कुम्भ और 'संस्कृति कुम्भ' भी प्रयागराज में संगत तट पर सम्पन्न हुए।

कुम्भ के बृहद आयोजन को देखते हुए प्रयागराज में बाहर से

आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं/पर्यटकों के लिए सुविधाजनक व्यवस्था करने के साथ ही प्रयागराज वासियों को किसी तरह की मुश्किल का सामना न करना पड़े, इसके लिए प्रयागराज में स्थायी विकास कार्य भी कराए गए। इसमें 264 सड़कों का सुदृढ़ीकरण व चौड़ीकरण करने के साथ ही 60 चौराहे भी चौड़े और सुन्दर कराए गए। इसके अलावा 9 फ्लाईओवर, प्रयागराज नगर क्षेत्र में माननीय उच्च न्यायालय के सामने एक ही पिलर पर 4 लेन चौड़ाई में 1325 मी. लम्बे फ्लाईओवर का निर्माण किया गया। 16मी. की ऊँचाई पर 01 किमी. लम्बाई आर.ओ.बी. का निर्माण 01 वर्ष में पूरा कर कीर्तिमान स्थापित किया गया। नगर के सघन आबादी वाले क्षेत्रों में 06 डॉट के पुल (रेलवे अण्डरपास) केवल 01 वर्ष के भीतर 4 लेन तक चौड़े कर दिए गए। इससे प्रयागराज के आम नागरिकों का यातायात सुगम हो गया है। कुम्भ के अवसर पर प्रयागराज के तीर्थों को पर्यटन से जोड़ने के भी कई कार्य कराये गये। इनमें द्वादश माधव के साथ प्रयाग की पंचकोसी परिक्रमा भी शामिल रही।

अन्य सेवाएं :– मेला क्षेत्र में स्वच्छता के प्रति जागरूकता को दृष्टिगत रखते हुए 1500 स्वच्छाग्रही तैनात किए गए। पहली बार 1.22 लाख से अधिक शौचालयों का प्रबंध उत्तर प्रदेश सरकार ने किया। आधुनिक संचार तकनीकी का उपयोग करके कुम्भ को विश्व भर में प्रचारित व प्रसारित करने का कार्य किया गया। सुगम यातायात कुम्भ के लिए 800 स्पेशल ट्रेनें संचालित की गई। इनमें से 332 ट्रेने एसी कोच वाली थीं। भीड़ प्रबन्धन की दृष्टि से प्रयाग व समीपवर्ती स्टेशनों पर विशेष यात्री सुविधाओं का प्रबन्ध किया गया। प्रयागराज को देश के 14 शहरों से सीधे हवाई–मार्ग से जोड़ा गया था। कुम्भ के लिए उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों एवं गांवों से 6000 बसें चलवाई गई। बड़े स्नान–पर्वों के दौरान 500 निःशुल्क शटल सेवाएं भी संचालित की गई।

इसके अलावा कल्पवासियों और कुम्भ के दौरान श्रद्धालुओं को आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से मेला क्षेत्र में टेण्ट सिटी का निर्माण कराया गया था। प्रयाग व समीपवर्ती स्टेशनों पर यात्रियों के लिए रैन–बसेरा आदि के प्रबन्ध भी किए गए। किसी भी श्रद्धालु को शीत ऋतु में खुले आकाश के नीचे न सोना पड़े, इसका विशेष ध्यान रखा गया। श्रद्धालुओं के लिए शुद्ध पेयजल की व्यवस्था के साथ ही भरपूर विद्युत आपूर्ति भी की गई। श्रद्धालुओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी आकस्मिक आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए समुचित प्रबन्ध किए गए। खाद्य आपूर्ति के लिए कुम्भ के अवसर पर प्रायशः 10 लाख से भी अधिक कल्पवासियों तक नागरिक आपूर्ति के लिए राशन कार्ड की व्यवस्था की गई थी। उन्हें राशन मिलने में गैस सिलेंडर के कनेक्शन मिलने में कोई कठिनाई न हो इसका बराबर ध्यान रखा गया और मॉनीटरिंग की गई।

कुम्भ के समय प्रायशः 6 लाख से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए। प्रयागराज के स्थानीय दुकानदार तो कुम्भ मेले से लाभान्वित हुए ही, ठेला–खोमचा लगाने वालों, खाद्य–सामग्री बेचने वालों, गंगा–जल के लिए पिपिया बेचने वालों, केवटों, पंडों और मेला क्षेत्र में फूल–माला बेचने वालों को भी पर्याप्त लाभ हुआ।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कुम्भ के आयोजन से पहले कहा था कि – ''पारम्परिक रूप से जो कुम्भ में आते हैं उनके लिए दिव्य, भव्य और सुरक्षित कुम्भ की व्यवस्था की जाए परन्तु जो पारम्परिक रूप से नहीं भी आते हैं, उन्हें भी इस महापर्व में आने के लिए प्रेरित किया जाए तथा आने पर उनके लिए सर्वांगीण व्यवस्थाएं की जाएं। प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन एवं भरपूर सहयोग से यह कार्य सम्भव भी हुआ।

इस बार के महाकुम्भ को डिजिटल कुम्भ की व्यवस्था से जोड़ा गया है इस बार 40 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु संगम पर डुबकी लगायेगें। 25 लाख लगभग कल्पवासी होंगे तेरह अखाड़े स्थापित हो चुके हैं।

10 हजार एकड़ में मेला बसाया गया है। 12 किमी में 44 स्नानघाट बनाये गये हैं। लगभग पाँच हजार एकड़ में 103 पार्किंग स्थल बनाये गये हैं। तीन हजार ट्रेनें, आठ हजार बसें लगायी गयी हैं।

इस महाकुम्भ में आस्था आधुनिकता का समागम रहेगा। प्रयागराज महाकुंभ से अर्थ व्यवस्था में दो लाख करोड़ के ग्रोथ का अनुमान है। आइये कुम्भ में सहभागी हों।

अमृत प्यास का कुम्भ

अमृत प्राचीन प्यास है। कोई मरना नहीं चाहता लेकिन सभी जीव मरते है। मृत्यु को शाश्वत सत्य कहा गया है। जीव मृत्यु बंधु है। मृत और अमृत परस्पर विरोधी जान पड़ते हैं पर हैं दोनों साथ–साथ। पूर्वज बता गए हें कि शरीर नाशवान है। क्षरणशील है, क्षर है। लेकिन जीवन में क्षर के साथ अक्षर भी उपस्थित रहता है। अक्षर अविनाशी है। सदा से है। अक्षर विश्वचेतना है। यह चेतना हम सब के भीतर रहती है। मनुष्य में इकाई बनती है लेकिन अनंत बनी रहती है। अविनाशी अक्षर का बोध उपनिषद् काल का ध्येय था। गीता का संदेश है कि यह अविनाशी सदा रहता हे। वैदिक ऋषि जानते थे कि ''मनुष्य मृत्यु बंधु है और देवता अमृत बंधु।'' वे यथार्थवादी थे। सो पूर्वज ऋषियों की कामना में दीर्घजीवन था। वे संसार को आनंदमगन देखना चाहते थे। उनका जीवन प्राकृतिक था तो भी उन्हें पता था कि एक दिन मृत्यु को आना ही है। उन्होंने 100 शरद् जीवन की अभिलाशा की। **''जीवेम शरदः शत''** की स्तुति में दीर्घजीवन की ही कामना है। लेकिन अमृत नाम का अज्ञात द्रव्य सबकी जिज्ञासा था। क्या अमृत वास्तव में कोई द्रव्य था या विचार था। क्या कल्पना ही था? वह प्रकृति में सहज सुलभ कोई पदार्थ नहीं था। क्या देवों को इसका रहस्य ज्ञात था? ऐसे अनेक प्रश्न भारतीय मनीषा की चुनौती है। लेकिन मृत्यु के समय शरीर छोड़ देने वाला कोई अविनाशी अमृत तत्व सबकी जिज्ञासा था।

'अमृत' के रासायनिक संगठन की जानकारी न पहले थी और न आज तक ही ज्ञात है लेकिन हमारे पूर्वजों की रूचि अमृत में थी। आश्चर्य है कि जिसे हम नहीं जानते उसे ही खोज रहे थे। विज्ञान और दर्शन के विकास जिज्ञासा से ही हुए हैं। सागर मंथन की कथा सुंदर है। पौराणिक कथाओं के अनुसार 'सागर मंथन' से विश और अमृत दोनों ही निकले थे। यहाँ सागर का एक अर्थ संसार भी हो सकता है। संसार सागर है भी। संसार में अमृत और विश दोनों हैं। लोकमंगल के देवाधिदेव महादेव विष पी गए। वे संसार का कल्याण चाहते थे। बचा अमृत। अमृत कुम्भ पर युद्ध हो गया। एक विचार है कि जयंत अमृत कुम्भ लेकर भाग निकले। दूसरा विचार है कि गरूण अमृत कुम्भ लेकर उड़ चले। जो भी हो, भागम भाग में अमृत कुम्भ छलका और चार स्थानों पर अमृत गिरा। स्कंद पुराण के अनुसार –**''हरिद्वारे, प्रयागे, च धारा गोदावरी तटे''** – हरिद्वार, प्रयाग, धारानगरी उज्जैन व नासिक में गोदावरी तट पर यह अमृत गिरा। कथा प्राचीन है, पौराणिक है। संभव है कि इस घटना को लोक ने देखा भी हो। तब सब भागे होंगे–चारों स्थानों की ओर। यह बात दीगर है कि अमृत मिला कि नहीं मिला लेकिन अमृत की प्यास हजारों वर्ष से बढ़ती जा रही है।

मनुष्य मरणशील है लेकिन आधुनिक काल में अमृत की प्यास

bjpkamaljyoti@gmail.com https://up.bjp.org/kamal-jyoti

और भी बढ़ी हे। वैज्ञानिक शरीर की मृतधर्मा कोशिकाओं को अमृत बनाने के लिए जुटे हुए हैं। भारतीय संस्कृति और दर्शन आत्मा को अजर अमर अमृत मानते हैं। प्रयाग में इन दिनों सारी दुनिया के अमृत अभीप्सु संगमन कर रहे हैं। गंगा, यमुना और सरस्वती यहाँ हजारों वर्ष पहले से ही मिल रही है। इस समय दिक्काल भी प्रयाग संगम में है। शीत दुलार दे रहा है। सूर्य देव मुस्कुराते हुए ऊष्ण कर रहे हैं। प्रीति अमृत है। अमृत की प्यास अमृत है। काल अमृत प्यास का क्या बिगाड़ लेगा। सूर्य उगते है, अस्त होते हैं। मास, वर्ष, युग बीतते हैं। मरूद्गण बहते रहते हैं। वे हैं। जीवन को गति देते हैं। ऋतुए आती हैं। प्रीति अजर अमर रहती है। अमृत अभिलाषा चिरंतन है। भारतवासियों की इस अमृत अभिलाषा में धन, संपन्नता, तरूणाई आदि परिवर्तनशील समृद्धि तत्वों की भी प्यास हे। कुम्भ में द्वैतवासी है तो वेदांती भी आए है। तमाम तरह की उपासनाओं वाले साधु संतों का समागम है। माताएं–बहने अपने पुत्रों, अभिभावकों के साथ आ रही है। सबकी अभिलाशा स्थायी आनंद है। अमृत की प्यास। सुख, स्वस्ति, आनंद का अमृत तत्व। प्रयाग में यह होना ही चाहिए। प्रयाग, तीर्थ राज जो है।

अमृत कुम्भ की अनुभूति कोई छोटी बात नहीं। सोचता हूँ कि ऋग्वेद के मंत्र–ऋचाएं भी यहाँ टहल रहे होंगे। सोचता हूँ कि ऋग्वेद के मंत्र–ऋचाएं भी यहाँ टहल रहे होंगे। ऋग्वेद में ऋचा मंत्रों के स्वभाव का वर्णन है–ऋचाएं परम आकाश में रहती है और जागृत बोध वाले लोगों के पास आने की कामना करती हैं।

कुम्भ समागम भारत का प्रतिष्ठित जागरण है। अमृत अभिलाशा का यह संगमन दुनिया का सबसे बड़ा मेला है। मेले भारतीय पूर्वजों के ही आयोजन है, बाजार नहीं। मिले तो मेला, खरीदें बेचे तो बाजार। अमृत के प्यासे मिलें तो कुम्भ पर्व। कुम्भ मेला प्राचीन हैं लेकिन इस बार के मेले की बात ही दूसरी हैं। पहले की सरकारें मेले की व्यवस्था करती थीं। इस दफा उत्तर प्रदेश की सरकार निमंत्रणदाता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वागतकर्ता की भूमिका में हैं।

सारी दुनिया में कुम्भ की धूम रही। संगम पर जल आचमन और स्नान अमृत की यात्रा है। जल हम सबका आदि देवता है। चार्ल्स डारविन ने सृष्टि का विकास जल से बताया था, उसके भी बहुत पहले (ईसा पूर्व 600 वर्ष)। प्राचीन यूनानी दार्शनिक थेल्स ने जल को आदि तत्व बताया था। ऋग्वेद में भी जल को सभी जीवों की जननी बताया गया है। मनुष्य शरीर जल से भरा कुम्भ है। यह संसार सागर का भाग है। मनुष्य कुम्भ सागर में तैर रहा है। कुम्भ के भीतर जल और बाहर भी जल। कबीर ने गाया है कि कुम्भ फूटता है, इसका जल संसार के जल से मिल जाता है–

''जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है भीतर बाहर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहिं समाना, यह तल कह्यो गियानी।''

सृष्टि का आदि भूत जल है। मनुष्य शरीर मिट्टी है। जल भरे कुम्भ जैसी है मानव काया। कुम्भ ज्योर्तिविज्ञान की 12 राशियों में एक राशि भी है। यह भारत के लोकमंगल का सांस्कृतिक प्रतीक है। प्रत्येक मंगल अवसर पर भारत में कलश की स्थापना–पूजा होती है। कुम्भ संगमन सबको खींच रहा है। सम्प्रति प्रयाग में लघु भारत समवेत हो रहा है। जगत गतिशील है। इस सृष्टि का प्रत्येक अंश गतिशील है। गति ही प्रगति बनती है। अपनी सम्पूर्णता में यही सद्गति है। ग्रह गतिशील है। पृथ्वी गतिशील है। हम पृथ्वी पुत्र गतिशील हैं। बैठे होते हैं तब भी हमारा रक्त गतिशील है। हमारे भीतर–बाहर वायु गतिशील है। मन गतिशील है ही। सोचता हूँ कि ब्रह्माण्ड के प्रत्येक अणु–परमाणु की गतिशीलता का कोई ईंधन पेट्रोल भी होना चाहिए। अपने संरक्षक सूर्य करोड़ों वर्ष से तप रहे हैं, इनका ईंधन क्या अनंत हैं? मेरे जैसे विद्यार्थी के लिए 'अनंत' बड़ी चुनौती है। दुःख अंतहीन है। सुख अंतहीन है। आकाश अंतहीन है ही। जल राशि अनंत है। अग्निताप अनंत है। सिर्फ मनुष्य जीवन अनंत नहीं है। इसका अंत अवश्यमभावी है। शेष सब अनंत। अंतहीन, विराट, अज्ञेय लेकिन मनुष्य सहित सभी जीवों का अंत होता है।

संभवतः इसी कमी को पूरा करने के लिए हमारी अभिलाषाएं कामनाएं अनंत है। मिर्जा गालिब ने सही फरमाया है–

''हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश में दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।''

भारतीय संस्कृति दर्शन में इसीलिए 'अमृत' की अभिलाषा है। भारत और विश्व को अमृत मधुमयता से भरने वाले लोग प्रयाग में संगमन कर रहे हैं। उन्हें उनके परिजनों व प्रयाग को प्रणाम।

कुंभ का महाविज्ञान पंच महाभूतों का त्रिगुण संपन्न आधार

प्रयागराज में संगम का तट पुनः ऊर्जा लिए प्रतीक्षा में है। 12 वर्ष बीत चुके। पृथ्वी, पवन, पानी, आकाश, वायु और अग्नि अपनी अपनी गति से रचना और विलय की यात्रा कर रहे हैं। जो निर्मिति है उसका शोधन होना है। इसी निर्माति में समस्त चराचर जगत है। इस निर्मिति का एक लय है, आधार है, अध्यात्म है, दर्शन है जिसे सनातन मनीषा महाविज्ञान की संज्ञा देती है। यह अद्भुत है। अद्वितीय है। विश्व की किसी सभ्यता के पास इसको समझने की सामर्थ्य नहीं। सनातन भारत की मनीषा ने इसका गूढ़ जान लिया है और सृष्टि के साथ ही इसके संस्कारयुक्त आकार, प्रकार और आयोजनों को स्थापित भी कर लिया है। सृष्टि में पिंड की स्थापना का आधार प्रति बारहवें वर्ष संशोधित और परिमार्जित होता है। यही कुंभ है।

सृष्टि के साथ साथ तीर्थ की यात्रा। अमृत घट का रहस्यमय स्वरूप। सृष्टि में तीन लोक। इन तीन में से एक लोक। इस एक लोक में तीर्थराज प्रयागराज। यहां गंगा, यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी का पवित्र संगम। ऐसे संगम तट पर महाकुंभ का अलौकिक समागम। समुद्र मंथन के कुंभ घट से जुड़े इस तीर्थ क्रम में अब तक लाखों पड़ाव बीत चुके हैं। युगों और कल्पों की इस यात्रा में यह संगम स्वरूप भारत के तीन घाटों की यात्रा कर अपनी संपूर्णता में प्रत्येक 12 वर्ष पर प्रयागराज में अवतरित होता है। गंगा, यमुना और सरस्वती के पावन संगम को यह साक्षी मान कर मासोपरांत विदा होता है। पृथ्वी पर उपस्थित मानव जाति इसके मर्म को समझने का प्रयास करती है। सनातन की यह अवधारणा नित प्रति नई व्याख्याओं के साथ आगे बढ़ती जाती है।

इस महाकुंभ के आयोजन का आधार सृष्टि के वे ही त्रिगुणात्मक अवयव हैं जिन्हें वेदों ने भी गाया है और गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी। तीन की इस आधार आंकिक योग से इतर इस सृष्टि और पूरे ब्रह्मांड में कुछ भी शेष है ही नहीं। इसी लिए सनातन संस्कृति और इसके समस्त शास्त्रों में सृष्टि और प्रकृति को त्रिगुणात्मक कहा गया है। इस त्रिगुणात्मक स्वरूप की व्याख्या आगे करेंगे लेकिन इसके तीन अंग कितने और किस रूप में व्यवस्थित हैं, उसको समझना जरूरी है।

यह कुंभ क्या है? एक घट। यानी घड़ा। अमृत से भरा हुआ घट ही समुद्रंथन से प्राप्त हुआ था। उस घट में विद्यमान अमृत की प्राप्ति की इच्छा ने ही सुर और असुर संघर्ष को जन्म दिया। प्रत्येक 12 वें वर्ष, इस ब्रह्मांड की इस सृष्टि में पृथ्वी पर एक मात्र गंगा, यमुना और सरस्वती का यह संगम स्थल है जहां उस घट की अमृत की कुछ बूंदें यहां प्राप्त हो जाने की संभावना प्रबल रहती है। इन बारह वर्षों की अवधि के भीतर प्रत्येक तीन वर्ष पर यह आंशिक स्थिति हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में बनती है। इसीलिए इन तीन स्थानों पर क्रम से प्रत्येक तीन वर्ष के अंतराल पर अर्ध कुंभ आयोजित होते हैं।

कुंभ और ब्रह्माण्ड

कुंभ और इस ब्रह्मांड के संबंधों को भी समझने की जरूरत है। अंड शब्द का आशय एक कोष से है। ऐसा कोष जिसमें जगदनियंता परम ब्रह्म विराजमान हो। ब्रह्म जो अजन्मा है। अविनाशी है। उसी के कोष को ब्रह्मांड कहते हैं। अर्थात ब्रह्मांड में जो है वह ब्रह्म है, अविनाशी है, अमर है। इसीलिए सनातन शास्त्रों ने मनुष्य की व्याख्या करते समय इसे अमृतस्य पुत्राः की संज्ञा प्रदान की है।

उस ब्रह्मांड का जो आकार है वह घट जैसा है। ऐसे घट के आकार वाले ब्रह्मांड का ही स्वरूप महाकुंभ अथवा कुंभ का आयोजन भी है। इस कुंभ में भरे हुए अमृत की बूंद पाने को लालायित प्रेमी ही इस आयोजन के भागीदार होते हैं।

सनातन संस्कृति में कुंभ अर्थात घट या कलश का बहुत महत्व है। जन्म से मृत्यु तक के सभी शुभाशुभ संस्कारों में कुम्भ (कलश) को स्थापित करने के पश्चात् ही देव पूजन कर्म करने का विधान है। कलश या घट ही कुम्भ है। ज्योतिष शास्त्र में बारह राशियों में से कुम्भ एक राशि भी है। कुम्भ का आध्यात्मिक अर्थ है ज्ञान का संचय करना, ज्ञान की प्राप्ति प्रकाश से होती है और कुम्भ स्नान, दर्शन, पूजन से आत्म तत्व का बोध होता है। हमारे अन्दर ब्रह्माण्ड की समस्त रचना व्यापत है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार 'यत् पिण्डे, तत् ब्रह्माण्डे, तत् ब्रह्माण्डे, यत् पिण्डे' अर्थात् जो

मानव पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड है और जो ब्रह्माण्ड में है, वही मानव पिण्ड में है। कुम्भ, 'घट' का सूचक है और घट शरीर का, जिसमें घट–घट व्यापी आत्मा का अमृत रस व्याप्त रहता है।

अंड अर्थात अणु और इसके अंग

जब कुंभ के आकार वाले ब्रह्मांड की चर्चा करते हैं तो इसके सूक्ष्म स्वरूप से चिंतन आरंभ होता है। सृष्टि में जो भी साकार है उसका निर्माण अणुओं से हुआ है। सनातन संस्कृति में प्रत्येक सूक्ष्म के तीन गुण बताए गए हैं। इसी आधार पर प्रकृति और सृष्टि को त्रिगुणी कहा गया। रज, तम, सत की संज्ञा वाले इन गुणों पर आगे चर्चा करेंगे। अभी इतना संज्ञान में लेना आवश्यक है कि पश्चिम के आधुनिक विज्ञान ने भी सृष्टि के सूक्ष्म को तोड़ कर तीन हो गुण प्राप्त किया है जिन्हें आधुनिक विज्ञान की भाषा में हम इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन की संज्ञा देते हैं। इन्हीं तीन के आधार पर आज की आधुनिक दुनिया दौड़ रही है। सनातन संस्कृति में सृष्टि के आधार कारक स्वरूप तीन देव सुनिश्चित किए गए हैं जिन्हें क्रम से ब्रह्मा, विष्णु और महेश की संज्ञा दी गई है। जन्म के कारक ब्रह्मा जी हैं। जीवन के पोषक विष्णु जी हैं। मृत्यु के देव महेश हैं। आधुनिक विज्ञान के आधार अन्वेषण में प्राप्त इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के गुणों की विवेचना से स्पष्ट हो जाएगा कि हमारे सनातन शास्त्रों ने प्रकृति और सृष्टि को त्रिगुणी क्यों कहा होगा।

हमारे पूज्य ब्रह्मा, विष्णु और महेश की निरंतर उपस्थिति के कारण क्या हैं और ब्रह्माण्ड का सृष्टि पर्व कुंभ ही क्यों है।

शास्त्र कहते हैं, कण कण में भगवान की उपस्थिति है। आधुनिक विज्ञान कहता है, प्रत्येक अणु में इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, और न्यूट्रॉन की उपस्थिति है। फिर यह कुंभ क्या है और इस कुंभ के भीतर जो अमृत तत्व निर्धारित किया जाता है वह क्या है। आधुनिक विज्ञान की नवीनतम खोज के रूप में इलेक्ट्रॉन को चेतना या प्रकाश के रूप में देखा जा सकता है। यह जीवन और सृजनशीलता का प्रतीक है। यही गुण तो ब्रह्मा का भी है। प्रोटॉन को शक्ति या ऊर्जा के रूप में देखा जा सकता है। यह शक्ति और स्थिरता का प्रतीक है। न्यूट्रॉन को सद्भाव या शांति के रूप में देखा जा सकता है। यह संतुलन और एकता का प्रतीक है। इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, और न्यूट्रॉन से ही पदार्थ का अस्तित्व है। इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, और न्यूट्रॉन से परे होकर मोक्ष की अवस्था प्राप्त की जा सकती है। इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, और न्यूट्रॉन से जुड़े गुणों का क्रम ब्रह्मा, विष्णु, और शिव के क्रम के समान है। ब्रह्मा निर्माण करते हैं, इसलिए इलेक्ट्रॉन निर्माण का आधार है। विष्णु पालनकर्ता हैं, इसलिए न्यूट्रॉन के कारण पदार्थ के स्वरूप और उपयोग का निर्धारण होता है। शिव संहारकर्ता हैं, इसलिए प्रोटॉन के कारण परमाणु का विघटन या विनाश हो जाता है।

सृष्टि, कुंभ और तीन का संगम

कुंभ को सृष्टि पर्व भी कहा जाता है क्योंकि यह एक मात्र अवसर है जिसमें सृष्टि के उदय से लेकर अवसान तक की यात्रा को समझा जा सकता है। यह समझ केवल सनातन की यात्रा से जुड़ कर ही आती है। भारत से बाहर की दुनिया को यह आयोजन बहुत ही रहस्यमय और अद्भुत लगता है। धर्म, पंथ, मजहब, अध्यात्म और दुनिया के सांस्कृतिक एवं भौतिकवादी चिंतन के विद्वान इसमें कुछ गूढ़ की तलाश करते हैं। भारत यह ठीक से समझता है कि लाखों वर्षों की सनातन यात्रा में उत्पन्न आध्यात्मिक, सांस्कृतिक परिवेश का समुच्चय बन कर यह कुंभ कुछ नए संदेशों के साथ प्रत्येक अंतराल पर अवतरित होता है। यह एक मात्र समागम है जिसमें सनातन को स्वीकार कर अपनी यात्रा कर रहे तीन अनियों, 13 अखाड़ों और 147 संप्रदायों को प्रयागराज में संगम तट पर एक साथ देखा और जाना जा सकता है। इन अनियों, अखाड़ों और संप्रदायों के बारे में विस्तार से आगे चर्चा करेंगे।

जन्म , जीवन और मृत्यु

सृष्टि में जो कुछ भी है, इतने में ही समाहित है। जन्म प्राप्त करना, जीवन जीना और फिर मृत्यु का वरण। इसके अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं। त्रिगुण प्रकृति के भी तीन गुण हैं। ब्रह्मांड पुरुष (चेतना) और प्रकृति (प्रकृति) का मिलन है। प्रकृति ब्रह्मांड में जीवित और निर्जीव, स्थूल और सूक्ष्म पदार्थ में खुद को प्रकट करती है। पुरुष उस पदार्थ के क्षण या जीवन के पीछे का कारण है। ये तीन जैविक तत्व अथवा त्रिदोष मानव शरीर के घटक भी हैं वात, पित्त और कफ। यह प्रकृति है। जबकि मनुष्य के जन्मजात गुणों को तीन अलग–अलग श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है जिन्हें त्रिगुण के रूप में जाना जाता है। यह आध्यात्मिक पक्ष है। त्रिगुण मन के अभिन्न अंग हैं। सत्व, रजस और तमस, इन तीनों को मानसिक संरचना में मनसा दोष के नाम से भी जाना जाता है।

तमस निष्क्रिय अवस्था है जो सबसे कम है। यह भ्रमपूर्ण, आलसी, भ्रमित, अधिकार जताने वाला, सुस्त और लालची, अज्ञानता, आसक्ति है।

रजस सक्रिय अवस्था है जो अति सक्रिय है। इसकी विशेषता बेचैन, काम में डूबे रहने वाला, आत्मकेंद्रित, उपलब्धि प्राप्त करने वाला, आक्रामक, बेचैन, महत्वाकांक्षी है।

सत्व क्रियाशीलता और जड़ता के बीच संतुलन है। सत्व अवस्था खुशी, शांति, आत्मीयता, ध्यान, संतुष्टि और देखभाल करने वाली होती है।

सृष्टि में जो कुछ भी है उसमें में ये तीन गुण अवश्य होंगे। वह सजीव हो अथवा निर्जीव। हमारे शरीर में रक्त का निरंतर प्रवाह रजोगुण कहलाता है। हमारा मन कभी–कभी बेतहाशा बहता है और यह रजोगुण है, और जब हम उस उतार–चढ़ाव को रोक पाते हैं, तो यह तमोगुण होता है। गहन ध्यान के दौरान, जब हम आत्म प्रेम और आनंद महसूस करते हैं, तो यह सत्व गुण है जो संतुलन है। त्रिगुण हमारे अंदर भौतिक और अभौतिक विशेषताओं को आकार देते हैं। तीन अलग–अलग त्रिगुणों का अनुपात हमें अलग–अलग तरीके से व्यवहार करने, प्रतिक्रिया करने, अवधारणा बनाने और आसपास की प्रकृति को समझने के लिए प्रेरित करेगा। विरासत में मिले गुण को शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव के कारण बदला जा सकता है।

किसी निश्चित समय में गुणों के प्रमुख होने से व्यवहार का आकार निर्धारित होता है। प्रमुख गुण व्यक्तित्व को तब प्रभावित करेगा जब 5 तत्वों को हमारी 5 इंद्रियों द्वारा अनुभव किया जाएगा और मन के माध्यम से प्रक्रिया की जाएगी तथा प्रमुख गुण द्वारा संशोधित किया जाएगा। इसलिए, गुण अंतिम तत्व हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पास संचित जाएं से अपनी बुद्धि का समर्थन करने के लिए अहंकार होता है। अहंकार से उत्पन्न होने वाले त्रिगुण उस व्यक्तित्व को निर्धारित करेंगे जिसके माध्यम से किसी विशेष समय पर प्रभुत्व होगा। सत्व गुण वाला व्यक्ति आध्यात्मिक गुणों से युक्त शुद्ध और सकारात्मक होता है। जब काम की बात आती है, तो वह वांछनीय और अवांछनीय स्थितियों के बीच अंतर करते हुए शांत रहता है। जितना अधिक सत्व स्वभाव होगा, उतना ही अधिक प्रेम, करुणा, दया और खुशी के प्रति लगाव होगा। अच्छे स्वास्थ्य की स्थिति यहीं है।

राजसिक व्यक्ति इच्छाओं और आसक्तियों से भरा होता है। चूंकि वे बहुत आत्म–केंद्रित होते हैं, इसलिए वे कभी–कभी सही और गलत में अंतर नहीं कर पाते। जब कोई उत्साही, गहरी दिलचस्पी रखने वाला, काम के प्रति समर्पित, सफल व्यक्ति होता है, तो वह संतुलित राज अवस्था में होता है।

यह सत्व और तम के बीच का पुल है, और उन्हें संतुलित करता है। चूंकि यह जुनून को संदर्भित करता है, यह बेहतर बदलाव के लिए प्रेरणा, आंदोलन, सही कार्रवाई, रचनात्मकता पैदा करता है। यदि यह असंतुलन है, तो व्यक्ति में क्रोध, चिंता और उत्तेजना होगी।

तम अंधकार से संबंधित है। यह भ्रम, नकारात्मकता, सुस्ती और निष्क्रियता से घिरा हुआ है। संतुलित तम अवस्था में, व्यक्ति समय पर सोएगा, संतुलित आहार लेगा, प्रकृति की सराहना करेगा, दूसरों के बारे में चिंता करेगा। हालाँकि, अगर यह असंतुलन है, तो व्यक्ति अधिकार जताने वाला, दूसरों को नुकसान पहुँचाने की इच्छा रखने वाला, अल्पकालिक सुखी होता है। इसमें 7 संयोजन हैं: प्रमुख सत्व गुण, प्रमुख तम गुण, प्रमुख रज गुण, प्रमुख सत्व–रज गुण, प्रमुख सत्व–तम गुण, प्रमुख रज–तम गुण, संतुलित सत्व–रज–तम गुण।

त्रिगुण की उपस्थिति को हम जो कार्य करते हैं, उस कार्य के पीछे का इरादा और प्रतिक्रिया के माध्यम से देखा जा सकता है। कार्य और इरादे के लिए, हमें हर कार्य के लिए खुद से पूछना होगा: मैं यह क्यों कर रहा हूँ (इरादा) और मैं यह कैसे कर रहा हूँ (अभिव्यक्ति)। यह अलग–अलग गुण हो सकते हैं जो इरादे और अभिव्यक्ति दोनों पर हावी होते हैं, और अगर आप इस पर ध्यान दें तो हम प्रमुख को संतुलित कर सकते हैं। जहाँ तक प्रतिक्रिया की बात है तो यह की गई कार्रवाई का परिणाम है, आप कैसा महसूस करते हैं या प्रतिक्रिया करते हैं। हमें हमेशा संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है।

तम से रज की ओर बढ़ते हुए हम अधिक शारीरिक आसन क्रियाकलापों में संलग्न हो सकते हैं, सकारात्मक लोगों के साथ घुलमिल सकते हैं, नए स्थानों की यात्रा कर सकते हैं, हल्का भोजन कर सकते हैं। ये हमारे ऊर्जा स्तर को ऊपर उठाएंगे और राज अवस्था में ले जाएंगे। यहाँ से, सत्व की ओर बढ़ने के लिए, हम ध्यान, पढ़ना, गैर–लाभकारी कार्य कर सकते हैं और अत्यधिक ऊर्जा को संतुलित करने के लिए यम का पालन कर सकते हैं। निरीक्षण करना और बदलाव करना ही कुंजी है।

प्रयागराज का माहात्म्य

गंगा, यमुना, सरस्वती का संगम यानि ''त्रिवेणी'' जहाँ सरस्वती अन्तः सलिला है। यहाँ पर निवास, स्थान दान सभी पुण्य कार्य है। चारों कुंभ स्थलों में प्रयागराज त्रिवेणी का अपना अलग महत्व है।

तीर्थराज प्रयाग का बड़ा माहात्म्य है। प्रति वर्ष माघ में स्नान तथा मास पर्यन्त कल्पवास का बहुत फल कहा है। यहां गंगा तथा यमुना का संगम है और गुप्त रूप से सरस्वती ज्ञानस्वरूपा, गंगा भक्ति स्वरूपा और यमुना कर्म स्वरूपिणी है। इस प्रकार कर्म, भक्ति और ज्ञान का संगम यहां है। इसमें अवगाहन करने से सभी कामनायें पूरी होती है। 'सूत संहिता' में कहा हैः

प्रयागाख्यं महातीर्थं भवरोगस्य भेषजम्।
भरण्यां कृत्तिकायां तु रोहिण्यां व विशेषतः।।
तत्र स्नात्वा रवौ मेषे वर्तमाने मुनीश्वराः।
यथाशक्तिं धनं दत्वा विमुक्तो मानवो भवेत्।।

''प्रयाग नामक महातीर्थ हैं, वह संसार रूपी रोग की औषधि है। भरणी, कृन्तिका तथा विशेषरूप से रोहिणी नक्षत्र में स्नान कर अथवा मेष राशि में सूर्य के आने पर जो यथाशक्ति धन–दान करता है, हे मुनीश्वरों! वह मानव मुक्त हो जाता है।'' वट वृक्ष, भरद्वाज आश्रम आदि अनेक प्राचीन दर्शनीय स्थान कहां है। प्रयाग में हर बारह वर्ष में 'कुम्भ पर्व' होता है और छः वर्ष में 'अर्ध कुम्भ'।

तीर्थ–सेवन का फल किसे मिलता है और किसे नहीं –

तीर्थ यात्रा, स्नान, दान, उपवास, व्रत आदि का अधिकार सभी को है। किन्तु जो असंयमी, कामी, क्रोधी, लोभी और परदोश निन्दक हैं, अश्रद्धालु, अभिमानी तथा दूषित अन्तःकरण वाले हैं, उनको तीर्थ का वास्तविक फल नहीं मिलता। ऐसे मनुष्य तो तीर्थ में स्नान करने की इच्छा भी नहीं करते। 'महाभारत' में कहा हैः

नावृती नाकृतात्मा च नाशुचिर्न च तस्करः।
स्नाति तीर्थेषु कौरव न च वक्रमतिर्वरः।।

(महा0वन0 55।108.109)

''हे कुरूनन्दन! जो ब्रह्मचर्य आदि व्रतों का पालन नहीं करता, जिसने अपने मन को वश में नहीं किया, जो अपवित्र आचार विचारशील है, चोर है और जिसकी बुद्धि वक्र उलटी है, वह मनुष्य श्रद्धा न करने के कारण तीर्थों में स्नान नहीं करता।'' किन्तु जो श्रद्धावान्, पवित्र आस्तिक, परोपकारी, इन्द्रियनिग्रही और तपस्वी है, उसे तीर्थ का पूर्ण फल प्राप्त होता है। कहा हैः

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसयतम्।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते।।
प्रतिग्रहादपावृत्तः संतुष्टो येन केनचित्।
अहंकारनिवृत्तश्च स तीर्थफलमश्नुते।।
अकल्कको निरारम्भो अघ्वाहारो जितेन्द्रियः।
विमुक्तः सर्वपापेभ्यः सतीर्थफलमश्नुते।।
अक्रोधनश्च राजेन्द्र सत्यशीलो द्दढवृतः।
आत्मोपमश्च भूतेषु स तीर्थफलमश्नुते।।

(महा0वन0 82।9–12)

जिसके हाथ, पैर और मन अच्छी प्रकार वश में हों यानी मन से वृथा चिन्तन, किसी के लिये अनिष्ट चिन्तन आदि न करता हो, हाथ पैर व्यर्थ हिलाता चलाता न हो तथा विद्या 'भाग वद्वक्ति, तप शारीरक ईश्वर निमित्त कष्ट और कीर्ति सत्कर्म से प्रसिद्ध हो, वही तीर्थ का फल पाता है। जो प्रति ग्रह–संग्रह आदि से रहित तथा जो कुछ अपने पास हो, उससे सन्तुष्ट रहे और जिसमें अहंकार का अभाव हो यानी धन, शरीर, मन, प्रतिष्ठा, उच्च आदि में 'अहं' भाव न हो, वही तीर्थ सेवन का फल पाता है। दम्भ, मद आदि दोषों से रहित, कर्तापन के अहंकार से शून्य, अल्प भोजन करने वाला, सब इन्द्रियों को अपने वश में करने वाला और समस्त निषिद्ध

पापकर्मों के न करने वाला हो, वही तीर्थ का फल पाता है। जो क्रोध न करता हो, सत्यशील हो; व्रत पालन में दृढ़ हो और समस्त प्राणियों में अपने समान भाव रखता हो, वही वास्तव में तीर्थ का फल प्राप्त करता है।

शास्त्रोंक्त यज्ञ साधारण मनुष्य नहीं कर सकते। इसे राजा या समृद्धशाली ही कर सकते हैं। क्योंकि इसमें अधिक धन और बहुत सहायकों की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में निर्धनी मनुष्य यज्ञ नहीं कर सकते। यज्ञ के फल से निर्धन वंचित न हो, इसलिये शास्त्रकारों ने उसके लिये भी उपाय कहे हैं। 'महाभारत' के कहा हैः

ॠवीणां परमं गुह्यमिदं भरतसत्तम।
तीर्थाभिगमनं पुण्यं यज्ञैरपि विशिष्यते।।
अनुपोष्य त्रिरात्राणि तीर्थान्यनभिगम्य च।
आदत्तवा कांचनं गाश्च दरिद्रो नाम जायते।।
अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्ट्वा विपुलदक्षिणैः।
न तत् फलमवाप्नोति तीर्थाभिगमनेन यत्।।

(महा0वन0 42।17-19)

''भरतश्रेष्ठ! यह ऋषियों का परम गोपनीय रहस्य है कि तीर्थ यात्रा अत्यन्त पुण्यकारक है और यज्ञों से भी बढ़कर है। मनुष्य दरिद्र निर्धन इसी लिये होता है कि वह तीर्थों में तीन दिन उपवास नहीं करता, तीर्थों की यात्रा नहीं करता और सुवर्ण दान, गोदान आदि नहीं करता। मनुष्य तीर्थ यात्रा से जो फल पाता है, उसे बहुत दक्षिणा वाले अग्निष्टोम आदि यज्ञ कर भी नहीं सकता। विधिपूर्वक और नियम से तीर्थ सेवन करनेवाला व्यक्ति जिस फल को पाता है, उसे यज्ञ द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता। तीर्थ में तीन रात्रि या कम से कम एक रात्रि उपवास करना चाहिये। गंगा आदि में तीन बार गोता लगाकर स्नान करें, किन्तु शरीर का मैल गंगा में न छुड़ावें। फिर ब्राह्मण को यथाशक्ति दान है। व्यर्थ मिथ्या भाषण, निन्दा, उपहास, जुआ, चोरी आदि से दूर, रहना चाहिये। सब समय साधु, महात्मा, सत्संग, कथा, कीर्तन आदि में व्यतीत करना चाहिये। काम क्रोधादि का परित्याग भी करना चाहिये, तभी वास्तविक फल होता है। कहा भी हैः

कामं क्रोधं च लोभं च यो जित्वा तीर्थमावसेत्।
न तेन किंचिन्न प्राप्तं तीर्थाभिगमनाद् भवेत्।।

(महा0अनु0 25।65)

''जो काम, क्रोध तथा लोभ को जीत कर तीर्थों में स्नान करता है। उसे तीर्थ यात्रा के पुण्य से कोई वस्तु दुर्लभ नहीं रहती।

कभी–कभी कोई यह सोचने लगते हैं कि हम बड़े पापी हैं, जीवन में हमने कोई अच्छा कर्म नहीं किया। इस लिये तीर्थ यात्रा से क्या लाभ होगा? उन्हें ऐसा न सोचना चाहिये, क्योंकि तीर्थों की बड़ी महिमा है। वह बड़े से बड़े पापों को भी भस्म कर देते हैं।

यही कहा हैः

यद्यकार्यशतं कृत्वा कृतं गंगाभिषेचनम्।
सर्वं तत् तस्य गंगाम्भो दहत्यग्निरिवेन्धनम्।।
सर्वं कृतयुगे पुण्यं त्रेतायां पुष्करं स्मृतम्।
द्वापरेऽपि कुरूक्षेत्रं गंगा कलियुगे स्मृता।।

(महा0वन0 85।89-90)

''जैसे अग्नि इंधन को जला देती है, वैसे ही सैकड़ों निशिद्ध पाप कर्म करके भी यदि गंगा स्नान किया जाय, तो उसका गंगा जल उन सब पापों को भस्म कर देता है। सत्ययुग में सभी तीर्थ पुण्य दायक होते हैं। त्रेता में पुष्कर तीर्थ का महत्व है। द्वापर में कुरूक्षेत्र का माहात्म्य है, किन्तु कलियुग में गंगा जी की अधिक महिमा कही गई है।'' गंगा जी का नाम लेने मात्र से वह समस्त पाप नष्ट कर देती है। दर्शन करने पर वह कल्याण प्रदान करती हैं, स्नान और ध्यान करने पर वह मनुष्य की सत पीढ़ियों को पावन बना देती है–

पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति।
अवगाढा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलम्।।

(महा0वन0 85।93)

सनामल परम्परा का यह महापर्व विश्व में सुख, शांति, समृद्धि का आध्यात्मिक अनुष्ठान है। जिसमेंसंत समाज मानवता के कल्याण के लिए साधना करता है।

कुम्भ-महापर्वः माहात्म्य

राजकुमार

2025 प्रयागराज का महाकुंभ ऐसे शुभमुर्हुत में हो रहा है जो 144 वर्षों बाद आया। समुद्र मंथन में रत्नों के साथ अमृत निकला, जिसके वितरण में जो चार स्थानों पर अमृत गिरा जहाँ पर कुम्भ लगता है। सत्यसनातन सिद्धान्त के अनुसार परब्रह्म, परमात्मा, अखण्ड, अनन्त हैं। वह ईश्वर, भगवान् आदि नामें से कहा जाता है। उसे प्राप्त करना परम पुरूषार्थ है। उसके प्राप्त करने के अनेक साधन हें। तीर्थ–यात्रा, ब्रत, गंगा–स्थान आदि। किन्तु इन सब से अधिक महात्मय 'कुम्भ–महापर्व' का है। कहा हैः–

सूर्यग्रहे कुरूक्षेत्रे कार्तिक्याञ्च त्रिपुष्करे ।

माघमासे प्रयागे च यः स्नायात्सोऽतिपुण्यवान्।।

''सूर्यग्रहण में कुरूक्षेत्र और कार्तिक मास में त्रिपुष्कर क्षेत्र में जो स्नान का फल होता है, उससे अति पौष माघ मास में प्रयाग स्नान से होता है।''

सहस्त्रे कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च।

वैशाखे नर्मदास्नानं कुम्भस्नानेन तत्फलम्।।

''हजारों बार कार्तिक मास में स्नान करने का, सैकड़ों बार माघ मास में स्नान करने का और वैशाख में नर्मदा स्नान का जो फल होता है, वह फल कुम्भ स्नान के एक बार करने पर होता है।''

'कुम्भ महापर्व' के स्नान से, पाप ताप, दुःख निवृत्ति तथा ईश्वर को प्राप्त करने की योग्यता आती है। 'कुम्भ' का अर्थ है **''कुं कुत्सितम्, उम्भति दूरयति''** यानी जो कुत्सित पापमय कुविचारों को दूर करे, वह 'कुम्भ पर्व' है।

'कुम्भ महापर्व' अनादि और ऐतिहासिक है। सृष्टि के आदि में सृष्टि कर्ता भगवान् ब्रह्मा ने कश्यप, दक्ष आदि को मन के संकल्प से उत्पन्न किया। इन मानसिक पुत्रों से कहा 'तुम लोग सृष्टि की वृद्धि करो। दक्ष प्रजापति के अनेक कन्यायें थीं। उन्होंने कश्यप आदि प्रजापति के साथ उनका विवाह कर दिया। कश्यप के दिति तथा अदिति नाम की पत्नी थीं। दिति से दैत्य उत्पन्न हुये और अदिति से देवता। देवताओं को स्वर्ग का स्वामी और दैत्यों को पाताल का स्वामी बनाया। इससे दैत्य प्रसन्न न हुये, वह स्वर्ग का राज्य चाहते थे। दैत्यों ने तपस्या और भौतिक बल एकत्रित कर, देवताओं से स्वर्ग का राज्य छीन लिया। देवता राज्य भ्रष्ट हो गये। वह भगवान् विष्णु की शरण गये। भगवान् ने उन्हें उपाय बतलाया कि **''दैत्यों से सन्धि करो ओर उन्हें साथ लेकर अमृत के लिए समुद्र मंथन करो''**। देवताओं ने यही किया। दैत्य समुद्र मंथन के लिए तैयार हो गये। सुमेरू पर्वकी की मथानी और वासुकि नाग की रस्सी बनाई गई। स्वयं भगवान् कच्छप रूप धारण कर, समुद्र में अपनी पीठ पर सुमेरू पर्वत को धारण किये थे। समुद्र मंथन से अनेक वस्तुये निकलीं। उन्हें देवता और दैत्य लेते गये। फिर 'अमृत कुम्भ' निकला। उसे देवता दैत्य दोनों लेना चाहते थे। इस पर दोनों में विवाद हो गया। कोई **'अमृत कुम्भ'** लेता, उससे दूसरा छीनता।

इस प्रकार बारह दिव्य दिनों तक छीना झपटी होती रही। देवताओं का एक दिन, मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है। अतः यह विवाद बारह वर्ष तक चला।

विवादे काश्यपेयानां यत्र यत्रावनिस्थले।

कलशोऽभ्यपतद्यत्र कुम्भपर्वस्तदुच्यते।।

''कश्यप पुत्र देव दानवों में 'अमृत कलश' के विवाद में, जहाँ–जहाँ भूमि पर कलश रखा गया, वहां–वहां 'कुम्भ पर्व होता है।

चन्द्रः प्रस्रतवणाद्रक्षां सूर्यो विष्फोटनाद्दधौ। दैत्येभ्यश्च गुरू रक्षा सौरिर्देवेन्द्रजाद्भयाल्।।

''देव–दानवों के युद्ध से 'अमृतकुम्भ' की रक्षा चन्द्र, सूर्य, वृहस्पति और भगवान् विष्णु ने की यानी अमृत भूमि में गिर न पड़े, इसकी रक्षा चन्द्र ने की, कुम्भ के फूटने की रक्षा सूर्य ने की, दैत्यों से रक्षा गुरू ने और इन्द्र पुत्र जयन्त से रक्षा भगवान् ने की।

सूर्येन्दुगुरूसंयोगस्तद् राशौ यत्र वत्सरे।

सुधाकुम्भ प्लवे भूमौ कुम्भो भवति नान्यथा।।

''जब भूमि में सुधा कुम्भ गिरा था, उस समय एक राशि में यानी जिस–जिस राशि में सूर्य, चन्द्र तथा गुरू का संयोग था, उसी प्रकार जिस वर्ष में यह योग होता है, तब कुम्भ पर्व होता है, अन्य वर्ष में नहीं।''

देवानां द्वादशाऽहोभिः मर्त्यैद्वादशवत्सरैः।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादशसंख्यया।।
तत्राद्यनुत्तये नृणां चत्वारि भुवि भारते।
अष्टौ लोकान्तरे प्रोक्ता देवैर्गम्या न चेतरैः।।

''देवों के बारह दिन के समान मनुष्यों के बारह वर्ष होते हैं। इसलिये 'कुम्भ पर्व' भी बारह संख्या वाले होते हैं। उन बारह 'कुम्भ पर्व में प्रथम चार कुम्भ पर्व मनुष्यों के पाप नाश के लिए भारत भूमि में होते हैं और आठ अन्य लोकों में कहे गये हैं। वहां देवता ही जा सकते हैं और कोई नहीं।

''भारत भूमि में चार कुम्भ पर्व कहां–कहां होते हैं?'' इसे बतलाते हैं–

पृथिव्यां कुम्भपर्वस्य चतुर्वा भेव उच्यते।
चतुः स्थले निषदनात् सुधाकुम्भस्य भारते।।
गंगाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरीतटे।
कुम्भाख्यो यस्तु योगोऽयं प्रोच्यते शंकरादिभिः।।

''भारत भूमि में अमृत कुम्भ के रखने का या गिरने के चार स्थान हैं, अतः पृथिवी में कुम्भ पर्व के चार भेद हैं। हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और गोदावरी तट पर नासिक में कुम्भ पर्व होते है। जो यह कुम्भ संज्ञक योग है, इसे भगवान् शंकर आदि ने स्वीकार कर, कहा है।''

तान्येति यःपुमान् लोके सोऽमृतत्वाय कल्पते।
देवा नर्मान्त तत्रस्थान् यथा रंका धनाधिपान्।।
अश्वमेघसहस्त्रेभ्यो वाजपेयशतादपि।
पृथिवीदानलक्षाच्च कुम्भयोगो विशिष्यते।।

''जो लोग कुम्भ पर्व पर स्नान करते हैं, वह देवलोकों को प्राप्त होते हैं और अमृतत्व प्राप्त करने की योग्यता आ जाती है। जैसे निर्धन तथा धनवान सभी लोग आते हैं, वैसे ही देवता भी इस स्थान को नमस्कार करते हैं और भेष बदल कर आते है, हजारों अश्वमेघ यज्ञ, सैकड़ों वाजपेय यज्ञ और लाखों बार पृथवी दान से भी, कुम्भ स्नान का फल विशेष होता है।''

''यह कुम्भ–पर्व कहां–किस समय होते हैं?'' इस जिज्ञासा पर बतलाया गया है–

पद्मिनीनायके मेषे कुम्भराशिगते गुरौ।
गंगाद्वारे भवेद्योगः कुम्भकामा जदीत्तमाः।।
मकरे च दिवानाथे वृषराशिस्थिते गुरो।
प्रयागे कुम्भयोगोऽयं माघमासे विधुक्षये।।
सिंहे गुरौ तथा सूर्ये सिंहे चैव दिशाकरे।
तदाऽमायां स धारायां कुम्भो भवति मुक्तिदः।।
कर्के गुरूस्थता भानुश्चन्द्रश्चन्द्रक्षयो यदा।
गोदावर्या तदा कुम्भी जायतेऽवनिमण्डले।।

''जब मेश राशि में सूर्य और कुम्भ राशि में वृहस्पति हों, तब पुण्यकाल संक्रान्ति के समय हरिद्वार में उत्तम 'कुम्भ' नामक योग होता है। मकर राशि में सूर्य, वृष राशि में स्थित वृहस्पति और माघमास की अमावस्या होने पर प्रयाग में यह 'कुम्भ' योग होता है। जब सिंह राशि में वृहस्पति, सिंह राशि में सूर्य और चन्द्र भी सिंह राशि में हो, अमावस्या तिथि ही, तब उज्जैन में क्षिप्रा तट पर मुक्ति दाता कुम्भ होता है। जब कर्क राशि में वृहस्पति और इसी में सूर्य तथा चन्द्रमा हों, अमावस्या तिथि हो, तब भूमिमण्डल पर गोदावरी तट नासिक में कुम्भ होता है।

गंगा जी का माहात्मय

इस प्रकार एक–एक स्थान में, बारह वर्ष पर कुम्भ योग आता है। इसमें समस्त देश के आस्तिक लोग स्नान, दान, कथा, सत्संग आदि से लाभ प्राप्त करते हैं। इस अवसर पर साधु, संन्यासी, योगी, तपस्वी, भक्त आदि पर्वत तथा एकान्त वासियों के दुर्लभ दर्शन भी होते हैं। चार कुम्भ पर्व में दो कुम्भ पर्व उत्तरीय भारत के उत्तर प्रदेश में होते हैं। प्रथम प्रसिद्ध स्थान हैं हरिद्वार और दूसरा प्रयाग दोनों स्थानों में पाप, ताप, हारिणी श्री गंगा जी में स्नान होता है। गंगा जी साक्षात् ब्रह्म, द्रव, स्वरूपिणी हैं। इसमें श्रद्धापूर्वक शास्त्रोक्त विधि में स्नान करना चाहिये। महाभारत में कहा है:

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।
विद्या तपश्च योर्निश्च स तीर्थफलमश्नुते।।

''जिसके हाथ पैर चंचल न हों, इन्द्रियां तथा मन अच्छी प्रकार अपने वश में हो और जो शास्त्र विद्या में विश्वास रखता हो, तीर्थ प्राप्ति के लिये शारीरिक कष्ट उठाता हो एवं सचरित्र माता पिता का पुत्र हो, यह तीर्थ का पूर्ण फल प्राप्त करता है।'' गंगा तट पर चौदह कार्य नहीं करना चाहिये :

गंगा पुण्यजलां प्राप्य चतुर्दश विवर्जयेत्।
शौचमाचमनं केशं निर्माल्यमघमर्षणम्।।
गात्रसंवाहनं क्रीड़ा प्रतिग्रहमथो रतिम्।
अन्यतीर्थरतिं चैव अन्यतीर्थप्रशंसनम्।।
वस्त्रत्यागमथाघातं संतारं च विशेषतः।

''पुण्यसलिला श्री गंगा जी के समीप जाकर, विशेष रूप से चौदह कार्य कभी नहीं करने चाहियें समीप में मल मूत्र त्याग, गंगा जी में आचमन (कुल्ला), बाल झाड़ना, निर्माल्य छोड़ना, मैल छुड़ाना, शरीर मलना, खेल करना, दान लेना, रति क्रिया, दूसरे तीर्थ में अनुराग, दूसरे तीर्थ की प्रशंसा, कपड़ा धोना या छोड़ना, जल पीटना तथा तैरना।'' तात्पर्य तीर्थ–यात्रा में अत्यन्त सरलता, सादगी तथा श्रद्धापूर्वक रहना चाहिये। जैसी भावना होती है, वैसा ही फल होता है।

आज तीर्थ सीनों को भी पर्यटन स्थल के रूप में समाज व्यवहार कर रहा है। जिसके कारण पर्यावरण पर संकट खड़ा है। आज स्वच्छता में प्लास्टिक, कूड़ा भी गम्भीर समस्या बन रहा है। नदियों के जल में भी दूषित जल मिलने के कारण समस्या है। हम इनकी पवित्रता बनायें।

महाकुंभ : आध्यात्मिकता में समृध्दि का मार्ग

डॉ. हरनाम सिंह

आस्था–विश्वास का सबसे बड़ा जनसैलाब और सामाजिक–सांस्कृतिक अवधारणाओं का जीवंत प्रतीककुंभ भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना से जुड़ा है। कुंभ के पीछे आस्था और निष्ठा का जिवंत भाव कार्यशील रहाता है। यह 'स्व' से निकालकर खुले मैदान में, शीत की चिंता न करते हुए नदियों के तटों पर खींचलाती है। मौसम की कष्टपूर्ण परिस्थिति में भी लोगों को जीवन ध्येय के साथ ही जीवन जीने की सार्थकता का अनुभव होता है। सामाजिक–सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के अवमूल्यन के माहौल में कुंभ सरीखे सांस्कृतिक उत्सवों की महती आवश्यकता प्रतीत होती है। भारत दर्शन के लिए जो लोग आना चाहते हैं उन्हें पूरे भारत की विविधता एक जगह सिमटी हुई मिल जाती है। जो आध्यात्मिक लाभ के लिए आना चाहते है उनके लिए तो इससे भव्य आयोजन कोई हो ही नहीं सकता। ऐसे अवसरों पर समाज और सरकार अपने जन–जागरण के कर्तव्यों को गहराई तक समझते हुए सोचें कि **'सुरसरि सम सबकर हित'** करने वाली भावना का प्रचार–प्रसार कैसे हो? लोक–मंगल की भावना वाले कुंभ की सार्थकता तभी बढ़ सकती है जब देश के लोगों में सेवा धर्म, परोपकार और नैतिकता की भावना बढ़े और लोगों को दुख, दरिद्रता से मुक्ति मिले।

कुंभ को देखने समझने के अलग–अलग दृष्टिकोण हैं। कुंभ सनातन संदेशों को संप्रेषित करने का एक महा आयोजन है। प्रश्न यह है कि हम भारतीय कुंभ के मंतव्य को लेकर कितने सजग हैं? जब पर्यावरण, जल, वायु, धरती और सभी खाद्य पदार्थ जहरीले होते जा रहें हो तो कुंभ महापर्व की भूमिका क्या हो ? डुबकी लगाने पुण्य कमाने की आपाधापी में कुम्भ के सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक सरोकार के बारे में सोचने के लिए हमारे पास कितना समय है? कुम्भ में हम जिस अमरता की चाहत रहकर डुबकी लगाते हैं उसका स्वरूप क्या है? क्या कुंभ के वास्तविक स्वरूप से हमारा परिचय आज देश समाज के सामने खड़ी चुनौतियों का समाधान करने में सहायक हो सकता है? भारत में कुंभजहाँ सांस्कृतिक एकता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के भाव बढ़ता है वही आर्थिक गतिविधियों का पोषक भी है। तत्व और विचार के संरक्षण और संवर्धन का माध्यम कुम्भ को बनाया गया है। कुंभ संघर्ष समाधान की सनातन परंपरा है और संघर्षो के समाधान की संभावनाएं अब भी इसने बची हुई है। वर्तमान दौर में कुंभ जैसे आयोजनों के मूल भाव को पुनर्जीवित किया जाना बहुत आवश्यक है क्योंकि कुंभ व्यवस्था व्यक्तिगत – सामाजिक घटकों के बीच संवाद का एक बृहद पारंपरिक प्लेटफार्म रहा है। भारतीय संस्कृति संवाद से ही सत्य के उपलब्ध होने की बात करती है। आप अध्यात्म के सूत्रों को पहचान करना चाहते हैं अथवा एक बेहतर व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं इसके लिए संवाद से बढ़कर कोई मानवीय और समग्र तरीका नहीं हो सकता। संवाद की अवधारणा के आधार पर ही लोकतांत्रिक मूल्य पनपते हैं और सहज लोकमानस भी बनता है। किसी भी समस्या से जुड़े सभी पक्षों की पहचान और समाधान के लिए अधिकतम सुझाव, संवाद की प्रक्रिया के द्वारा ही प्राप्त होता है। संवाद की अतिशय परंपरा को ध्यान में रखकर कुंभ संवाद की संस्थानिक स्वरूप है। नित नवीन और चिर पुरातन के बीच संतुलन बिंदुओं की खोज और उनकी साधने की प्रक्रिया में कुंभ जैसे आयोजनों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

जब हम परिवर्तन के दौर में जी रहे हैं तब संतुलन के नवीन सूत्रों की खोज अपेक्षाकृत अधिक आवश्यक हो गई हैं। कुंभ व्यवस्था को संवाद के प्लेटफार्म के मूल रूप में स्थापित करने में सफल हो जाते हैं, तो निश्चित रूप से सम्यक दिशा की ओर अग्रसर है। अपनी संस्कृतिक धारा को अक्षय बनाए रखने के लिए कुंभ जैसे वृहत्तर आयोजन के जरिए मूल्य और संवाद की संस्कृति को पुनः स्थापित किया जाना आवश्यक है। यदि ऐसा हो सके तो हम निश्चित रूप से सनातन संस्कृति को पोषित करने की स्थिति में होंगे, क्योंकि सनातन संस्कृति की अमरता की बूंदे साश्वत मूल्य और संवाद की संस्कृति से ही मिलती है। राग–विराग, प्राप्ति व परेशानी के चक्कर गिन्नी से निकल कर, एक जीवन से विरागी सन्यासी दूसरा गृहस्थ वृत्ति एक साथ होते हैं त्रिवेणी पर अद्भुत संयोग जो सनातन

समाज ने तय किए हैं जिसमें साधु, सन्यासी, बाल–वृद्ध, छोटे–बड़े सभी की कामनाओं के साथ एक जगह खड़े हो गंगा की धारा में अपने–अपने संकल्पों की अद्‌भुत परंपरा को चलाता है यही कुंभ है।

अंतरराष्ट्रीय मीडिया के लिए यह कुम्भ पर्व का दृष्टिकोण ही अलग होता है जिसके लिए नागा साधु इसके केंद्र बिंदु होते हैं। नागा साधुओं की राख से लिपटी नग्न फोटो लेना और फिर उस फोटो को नागा साधुओं का अपने हित के लिए प्रयोग करना उनका यही एजेंडा रहता है। पश्चिमी मीडिया कुम्भ में आए श्रद्धालुओं की गंदी, अजीबोगरीब तस्वीरें लेना, जिसमें किसी के लंबे बाल, दाढ़ी जिनके शरीर पर कपड़े ना हो, राख से लिपटे शरीर हो, जिनका माथा टीके और चंदन से भरा हो, जिसे वे इसे आदिवासी रूप में दिखा सके। उनके रहन सहन खान–पान को ऐसे दिखाना जैसे वह किसी दूसरी दुनिया के लोग हैं, लंगर में बैठे साधु जिनकी अपनी अलग वेशभूषा होती है, साधुओं के चिलम पीते हुए तस्वीरें लेना, ताकि उन्हें नशेड़ी साबित कर सकें। साधुओं के हाथ में तलवार त्रिशूल व डंडो के फोटो जो मात्र आकर्षण का केंद्र बने। अंतरराष्ट्रीय मीडिया कवरेज का उद्देश्य व केंद्र भारतीय संस्कृति मान्यताओं का महत्व और परिणाम रहती ही नहीं है।

कुंभ आयोजन का महत्व केवल स्नान तक नहीं है, यह संवाद व चर्चा के लिहाज से भारतीय संस्कृति हिंदू धर्म की मान्यताओं को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सबसे बड़ा प्लेटफॉर्म है। बिना कोई निमंत्रण दिए, बिना किसी प्रलोभन के, कुंभ में इतने बड़े जनसैलाब का उमड़ आना, कड़ाके की ठंड में भी गंगा में डुबकी लगाना, साधु–संतों के ताप–त्याग को समझना, कुंभ के प्रति भक्ति की भावनाओं को समझ पाना यह अंतरराष्ट्रीय मीडिया के लिए दूर की कौड़ी है। क्योंकि उनकी यहां ऐसा अद्‌भुत संगम ना तो कभी देखने को मिला है और ना ही कभी मिलेगा। यह संगम मात्र नदियों का नहीं है यह तो विचारों का है, मान्यताओं का है, आस्थाओं का है। सामान्य व्यक्ति से लेकर साधु–संतों और विभिन्न जाति, लिंग, आयु का संगम है। कुंभ मेला भारत की प्राचीन संस्कृति का प्रतीक है, वैश्विक स्तर पर कुंभ ने अपना परचम लहराया है। कुंभ के महत्व का अंदाजा इस बात से लगाना चाहिए कि यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया है।

आध्यात्मिक व सांस्कृतिक धरोहर, पर्व–त्यौहारों के पीछे छिपे विज्ञान और संभावनाओं जो जीवन में लेकर आते हैं समझने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति के सभी पहलुओं को इस तरह से गढ़ा गया है कि ये हमें मुक्ति की तरफ ले जाएँ। मुक्ति क्या है? शायद हम समझ सकें कि जैसे जेल में वर्षों से कैद किसी कैदी की अचानक रिहाई उसकी दुनिया बदल देती है। उसे मिलती है एक नयी जमीन, एक नया आसमान। इसी तरह हम मानसिक स्तर पर भी कई तरह से कैद हैं। हमारे मन में नफरत, ईर्ष्या, घृणा, कपट, डर जैसी न जाने कितनी गांठें पड़ी हैं। कभी ऐसा होता है कि हम जिस शख्स से नफरत करते थे, उसे प्रेम करने करने लगते हैं और अचानक मन की कुछ गांठें खुल जाती हैं और एक सुकून भरा एहसास होता है– हृदय पटल विस्तार पाता है और जिंदगी थोड़ी सुहानी लगने लगती है। कर्म के स्तर पर भी कई तरह की गांठें पड़ी रहती हैं जिसे कार्मिक गांठ कहते हैं। कार्मिक गांठों ने मनुष्य जैसे एक असीम प्राणी को सीमाओं और सरहदों में बांध रखा है। ठीक वैसे ही जैसे किसी खुले आसमान के पक्षी को पिंजड़े में कैद कर दिया गया हो। इंसान के संपूर्ण जीवन की आकुलता व फड़फड़ाहट इन्हीं कार्मिक गांठों के पिंजड़े से बाहर निकलने की भी रहती है है। हमारी संस्कृति में मनाए जाने वाले सभी पर्व–त्यौहार हमें अपनी कार्मिक गांठों को खोलने या कम से कम ढ़ीला करने का एक अवसर प्रदान करते हैं। कुंभ का यह महापर्व एक ऐसा ही दुर्लभ अवसर है, जहां हम अपनी गांठों को विसर्जित करके मुक्ति की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

प्रयागराज अस्थाई जिला की चकाचौंध देखकर कोई भी अंदाज़ा लगा सकता है कि इस पूरी व्यवस्था के लिए सरकार ने अरबों रुपए खंर्च किए है। प्रश्न उठता है आख़िर इतने बड़े आयोजन और ख़र्च के ज़रिए सरकार को क्या हासिल होता है? उसे कितनी आय होती है या फिर राजस्व के लिहाज़ से उसे कोई लाभ होता है या नहीं? सरकार को प्रत्यक्ष लाभ भले ही न हो लेकिन परोक्ष रूप से घाटे का सौदा तो नहीं होता होगा। भारतीय उद्योग परिसंघ यानी सीआईआई के अनुमान के मुताबिक 50 दिन तक चलने वाले इस मेले से राज्य सरकार को पिछले अर्ध कुम्भ में क़रीब एक लाख 20 हज़ार करोड़ रुपए का राजस्व मिला था। सरकार को यह आय दो तरह से होती है, एक तो प्राधिकरण की आय है और दूसरी जो कई तरीक़े से होते हुए राज्य के राजस्व खाते में जाती है। सीआईआई के

अनुसार "प्राधिकरण मेला क्षेत्र में जो दुकानें आवंटित करता है, तमाम कार्यक्रमों की अनुमति दी जाती है, कुछ व्यापारिक क्षेत्रों का आवंटन किया जाता है, इन सबसे आय होती है। सीआईआई की रिपोर्ट के अनुसार मेले के आयोजन से जुड़े कार्यों में छह लाख से ज़्यादा कामगारों के लिए रोज़गार उत्पन्न हुए थे परिपोर्ट में अलग–अलग मदों पर होने वाले राजस्व का आंकलन किया गया था जिसमें आतिथ्य क्षेत्र, एयरलाइंस, पर्यटन, इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों से होने वाली आय को शामिल किया गया। इन सबसे सरकारी एजेंसियों और व्यापारियों की कमाई बढ़ेगी। कुंभ में जगह–जगह लक्ज़री टेंट, बड़ी कंपनियों के स्टॉल इत्यादि की वजह से भी आय की संभावना बढ़ गयी है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने पिछले 50 दिनों के अर्धकुंभ मेले के लिए 4,200 करोड़ रुपये का आवंटन किया था, जो कि 2013 महाकुंभ मेले की तुलना में तीन गुना अधिक था। प्रयागराज में वर्तमान पूर्ण महाकुम्भ का आयोजन 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 के मध्य निर्धारित है। विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक समागम–महाकुम्भ–2025 के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के अनुरोध पर केंद्र सरकार ने 2100 करोड़ रुपए की विशेष अनुदान सहायता राशि स्वीकृत की है। इसकी पहली किस्त के रूप में 1050 करोड़ रुपए निर्गत भी कर दिये हैं। उत्तर प्रदेश सरकार पहले ही 5435.68 करोड़ रुपए भव्य, दिव्य और डिजिटल महाकुम्भ के आयोजन पर खर्च कर रही है। सरकार द्वारा महाकुम्भ के लिए 421 परियोजनाओं पर यह धनराशि खर्च की जा रही है। प्रदेश सरकार की ओर से अब तक 3461.99 लाख की वित्तीय स्वीकृति निर्गत की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विभागों, जिसमें लोक निर्माण विभाग, आवास एवं शहरी नियोजन विभाग, सेतु निगम, पर्यटन विभाग, सिंचाई, नगर निगम प्रयागराज, द्वारा विभागीय बजट मद से 1636.00 करोड़ रुपए की 125 परियोजनाओं को क्रियान्वित कराया जा रहा है। **'प्रयागराज महाकुंभ–2025'** न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि भारत की ग्लोबल ब्रांडिंग का माध्यम बनेगा। इसका ध्येय **'सर्वसिद्धिप्रदः कुंभ'** है जो विश्व का सबसे बड़ा 4,000 हेक्टेयर का 'टेंट सिटी' उत्तर प्रदेश (यूपी) में चल रहा है, जो कि प्रयागराज महाकुंभ 2025 में अनुमानित 400 मिलियन तीर्थयात्रियों की दुनिया की सबसे बड़ी सभा की मेजबानी करेगा। जनवरी–फरवरी 2025 में महाकुंभ के शुभ 45 दिनों के दौरान, अमेरिका और ब्रिटेन की संयुक्त आबादी के बराबर, 400 मिलियन लोगों का एकत्रीकरण, यूपी की वर्तमान जनसंख्या का 1.6 गुना होगा, जो 250 मिलियन आंकी गई है। यूपी सरकार के अनुसार, 67,000 स्ट्रीटलाइट्स से जगमगाते टेंट सिटी में पर्यटकों की सेवा के लिए 2,000 टेंट और 25,000 सार्वजनिक आवास शामिल होंगे।

यदी प्रश्न है कि इतना खर्च करने का क्या फायदा होगा? तो वास्तविकता यह भी है, कि भारतीय त्यौहार, कुम्भ और अन्य मेले भारत के ग्रामीण इलाकों और शहरों में आर्थिक क्रियाओं को प्रोत्साहित करतें हैं। बहुत बड़ी आबादी मेलों और त्यौहारों के आयोजन का बेसब्री से इंतज़ार करती रहती है। वैसे भी इस बार का महाकुम्भ सबसे अलग है जिसकी प्रयागराज **'सर्वसिद्धिप्रदः कुंभ'** के नाम से ब्रांडिंग की गई है। पिछले अर्ध कुम्भ में पन्द्रह करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु और 180 से ज्यादा देशों से लोग और देश के हर गांव से लोगो को बुलाया गया था। ध्यान रहे की अगर 400 मिलियन तीर्थयात्री आ रहे हैं, तो वे घूमेंगे भी, रहेंगे भी, खाएंगे–पीएंगे भी, अन्य खर्च भी करेंगे। इंडस्ट्री बॉडी कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (सीआईआई) के अनुसार पिछले अर्धकुम्भ के आयोजन से उत्तर प्रदेश के लिए 1.2 लाख करोड़ रुपये का राजस्व उत्पन्न हुआ था जो कुल खर्च का 30 गुना था। सीआईआई के अनुसार हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में 2.5 लाख लोगों को रोजगार मिला तो एयरलाइन्स और एयरपोर्ट्स पर करीब 1.5 लाख लोगों के लिए अवसर पैदा हुए। इसके अलावा टूर ऑपरेटर्स ने 45 हजार लोगों को काम पर रखा था। इको–टूरिजम और मेडिकल टूरिजम में 85 हजार को रोजगार मिला था। टूर गाइड्स, टैक्सी ड्राइवर्स, उद्यमी सहित असंगठित क्षेत्र में 50 हजार नई नौकरियां उत्पन्न हुई थी।

इस बार तो पूर्ण कुम्भ है तो इस आकडें से भी अनुमान लगाया जा सकता है कि कितनी राजस्व और रोजगार सृजित होंगे। कुम्भ–मेले सबको बिना भेदभाव के रोज़गार देते हैं। कुंभ मेला हालांकि धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन है फिर भी यह आर्थिक क्रियाओं का संवाहक भी है। श्रद्धालु हिंदू प्रयागराज को सबसे पवित्र शहरों में से एक मानते हैं, जहां संगम में स्नान करने पर मान्यता है कि मोक्ष मिलता है। महाकुंभ 2025 को दिव्य महाकुंभ, भव्य महाकुंभ के साथ–साथ स्वच्छ महाकुंभ, सुरक्षित महाकुंभ, सुगम महाकुंभ, डिजिटल महाकुंभ, ग्रीन महाकुंभ की अवधारणा के रूप में विकसित किये जाने का लक्ष्य है। यह कुंभ मानव–मात्र के जीवन में संभावनाओं के द्वार खोले इस कामना के साथ आइए हम अपनी संस्कृति के इस महापर्व में शामिल हो जाएं।

महाकुंभ का पौराणिक महत्व

चेत नारायण

महाकुंभ मेला (पवित्र घड़े का त्यौहार) हिंदू पौराणिक कथाओं में निहित है। यह दुनिया का सबसे बड़ा सार्वजनिक समागम और आस्था का सामूहिक आयोजन है। इस समागम में मुख्य रूप से तपस्वी, संत, साधु, साध्वियाँ, कल्पवासी और सभी क्षेत्रों के तीर्थयात्री शामिल होते हैं।

हिंदू धर्म में कुंभ मेला एक धार्मिक तीर्थयात्रा है जो 12 वर्षों के दौरान चार बार मनाई जाती है। कुंभ मेले का भौगोलिक स्थान भारत में चार स्थानों पर फैला हुआ है और मेला स्थल चार पवित्र नदियों पर स्थित चार तीर्थस्थलों में से एक के बीच घूमता रहता है, जैसा कि नीचे सूचीबद्ध है:

- **हरिद्वार, उत्तराखंड में, गंगा के तट पर**
- **मध्य प्रदेश के उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर**
- **नासिक, महाराष्ट्र में गोदावरी के तट पर**
- **उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में गंगा, यमुना और पौराणिक अदृश्य सरस्वती के संगम पर**

प्रत्येक स्थल का उत्सव सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति की ज्योतिषीय स्थितियों के एक अलग सेट पर आधारित है। उत्सव ठीक उसी समय होता है जब ये स्थितियाँ पूरी तरह से व्याप्त होती हैं, क्योंकि इसे हिंदू धर्म में सबसे पवित्र समय माना जाता है। कुंभ मेला एक ऐसा आयोजन है जो आंतरिक रूप से खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्मिकता, अनुष्ठानिक परंपराओं और सामाजिक–सांस्कृतिक रीति–रिवाजों और प्रथाओं के विज्ञान को समाहित करता है, जिससे यह ज्ञान में बेहद समृद्ध हो जाता है। कुंभ मेले में सभी धर्मों के लोग आते हैं, जिनमें साधु और नागा साधु शामिल हैं, जो साधना करते हैं और आध्यात्मिक अनुशासन के कठोर मार्ग का अनुसरण करते हैं, संन्यासी जो अपना एकांतवास छोड़कर केवल कुंभ मेले के दौरान ही सभ्यता का भ्रमण करने आते हैं, अध्यात्म के साधक और हिंदू धर्म का पालन करने वाले आम लोग भी शामिल हैं।

कुंभ मेले के दौरान अनेक समारोह आयोजित होते हैं; हाथी, घोड़े और रथों पर अखाड़ों का पारंपरिक जुलूस, जिसे 'पेशवाई' कहा जाता है, 'शाही स्नान' के दौरान चमचमाती तलवारें और नागा साधुओं की रस्में, तथा अनेक अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां, जो लाखों तीर्थयात्रियों को कुंभ मेले में भाग लेने के लिए आकर्षित करती हैं।

सुरक्षा व्यवस्था प्रयागराज के संगम तट पर आयोजित होने वाले दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजन महाकुंभ 2025 की तैयारियां जोरों पर हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाकुंभ को दिव्य और भव्य बनाने के लिए खुद इसकी तैयारियों की मॉनिटरिंग कर रहे हैं।

महाकुंभ को अंतरराष्ट्रीय स्तर की बुनियादी सुविधाओं से परिपूर्ण करने के साथ ही सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी इसे अभेद्य बनाने के लिए रणनीतियां तैयार कर ली गई हैं। इस बार महाकुंभ में श्रद्धालुओं को सात स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था के चक्रव्यूह से सुरक्षित किया जा रहा है, जिसमें 37 हजार से अधिक पुलिसकर्मी तैनात होंगे। इसके साथ ही संपूर्ण मेला अवधि के दौरान 10 प्रकार के सुरक्षा ऑपरेशन भी चलाए जाएंगे।

महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का विशेष फोकस है। हाल ही में महाकुंभ की तैयारियों का जायजा लेने सीएम योगी ने खुद प्रयागराज का दौरा किया था, जहां उन्होंने श्रद्धालुओं की सुरक्षा को लेकर आलाधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक कर तैयारी की समीक्षा की भी थी।

आधुनिक के सात चक्र

पहला चक्र– मूल स्थल (प्वाइंट ऑफओरीजन) पर चेकिंग दूसरा चक्र– ट्रेन, बस और निजी वाहनों की चेकिंग तीसरा चक्र– प्रदेश की सीमाओं पर व्यापक चेकिंग चौथा चक्र– जोन की सीमाओं और टोलप्लाजा पर चेकिंग पांचवा चक्र– प्रयागराज कमिश्नरेट की सीमा पर चेकिंग छठा

चक्र– मेला क्षेत्र आउटर में चेकिंग सातवां चक्र– इनर व आइसोलेशन कार्डन पर चेकिंग

तैनात होंगे 37 हजार से अधिक पुलिसकर्मी महाकुंभ 2025 में शामिल होने के लिए श्रद्धालुओं की सुरक्षा में कुल 37,611 पुलिसकर्मी रहेंगे मुस्तैद। जिनमें से महाकुंभ मेला क्षेत्र के लिए 22,953 पुलिस कर्मी, कमिश्नरेट के लिए 6887 और जीआरपी के 7771 पुलिसकर्मियों की तैनाती की जाएगी। वहीं महिला श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए 1378 महिला पुलिसकर्मी तैनात रहेंगी।

पिछले कुंभों से ज्यादा तगड़ी रहेगी निगेहबानी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाकुंभ 2025 की सुरक्षा के लिहाज से पिछले कुंभों की तुलना में अधिक सख्त बनाने के निर्देश पर इस बार बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों की तैनाती रहेगी। पुलिस के अलग-अलग विभागों की भागीदारी के लिहाज से 2013 के महाकुंभ के 22,998 पुलिसकर्मियों की तुलना में इस बार 14,713 पुलिसकर्मियों की तैनाती होगी। वहीं अर्धकुंभ 2019 की 27,550 पुलिसकर्मियों की तुलना में 10,061 अधिक पुलिसकर्मियों की तैनाती की जाएगी।

अलग–अलग इकाईयों की पुलिस जनशक्ति का विवरण

- नागरिक पुलिस– 18479, परिवहन शाखा– 230
- महिला पुलिस– 1378, एलआईयू– 510
- यातायात पुलिस– 1405, जल पुलिस– 340
- सशस्त्र पुलिस– 1158, होमगार्ड्स– 13,965
- घुड़सवार पुलिस– 146

इंटेलिजेंस यूनिट से मिलेगी पल पल की खूफिया रिपोर्ट महाकुंभ 2025 सुरक्षा के लिहाज से श्रद्धालुओं को कोई असुविधा का सामना न करना पड़े और वो निर्भीक रूप से तीर्थयात्रा संपन्न कर सकें इसके लिए सुरक्षा की तगड़ी रणनीति तैयार की गई है। भीड़ प्रबंधन के साथ–साथ प्रयागराज पहुंचने वाले हर व्यक्ति की गतिविधियों पर सुरक्षाकर्मियों की नजर होगी। इसके लिए लोकल इंटेलिजेंस यूनिट्स के साथ पुलिसकर्मियों के अलग–अलग विभाग निरंतर संपर्क में रहेंगे।

इसके लिए संपूर्ण मेला अवधि के दौरान 10 प्रकार के सुरक्षा ऑपरेशन भी चलाए जाएंगे, जिससे श्रद्धालुओं को हर कदम पर सुरक्षा का एहसास होता रहे। इसके लिए अभिसूचना आधारित एकीकृत नियंत्रण और कमान केंद्र (आईसीसीसी) के माध्यम से आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस (एआई) युक्त सीसीटीवी कैमरों द्वारा फोटो, पहचान के चिह्न और टीएसपी (तकनीकी सेवा प्रदाता) के माध्यम से निगरानी की जाएगी।

महाकुंभ और पर्यावरण संरक्षण पर्यावरण संरक्षण का एजेंडा हुआ शामिल, प्रयागराज महाकुंभ को प्लास्टिक फ्री और ग्रीन कुंभ के रूप में आयोजित करने का योगी सरकार ने संकल्प लिया है। एक तरफ जहां कुंभ मेला प्रशासन इसके लिए निरंतर प्रयत्न कर रहा है तो वहीं दूसरी तरफ अखाड़ों और संतों के महाकुंभ के एजेंडे में भी सनातन धर्म के प्रचार प्रसार के साथ पर्यावरण संरक्षण का एजेंडा शामिल हो गया है। निरंजनी अखाड़े के प्रयागराज स्थित मुख्यालय में 5 अक्टूबर 2024 को आयोजित हुई अखाड़ा परिषद की बैठक में पारित संकल्प प्रस्ताव में पर्यावरण संरक्षण भी एक बिंदु था। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत रविंद्र पुरी बताते हैं कि प्रकृति हैं तो मनुष्य है। इसलिए प्रकृति को बचाए रखने के लिए पर्यावरण संरक्षण का विषय महत्वपूर्ण है। महाकुंभ में इस बार अखाड़ों के संत भी लोगों को इसके लिए जागरूक करेंगे। इसके अलावा महाकुंभ में संतों और श्रद्धालुओं से प्लास्टिक और थर्मोकोल के बर्तनों के बजाय दोना पत्तल और मिट्टी के बर्तनों को बढ़ावा देने की अपील की गई है और इसके लिए योजना बनाई जा रही है।

विविधता में एकता महाकुंभ कई जातियों, पंथों और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से लाखों लोगों को एक साथ लाता है, जिससे सामाजिक सद्भाव और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा मिलता है। 2025 में महाकुंभ मेला सिर्फ़ एक मेले से कहीं ज़्यादा है; यह खुद की ओर एक यात्रा है। अनुष्ठानों और प्रतीकात्मक कर्मों से परे, यह तीर्थयात्रियों को आंतरिक विचारों में संलग्न होने और पवित्रता के साथ अपने संबंध को गहरा करने का अवसर देता है। आधुनिक जीवन की माँगों से भरी दुनिया में, महाकुंभ मेला एकजुटता, पवित्रता और ज्ञान के प्रतीक के रूप में सामने आता है। यह शाश्वत यात्रा एक मजबूत अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है। मानवता के विविध मार्गों के बावजूद, हम मौलिक रूप से एकजुट हैं – शांति, आत्म–साक्षात्कार और पवित्रता के लिए एक अटूट सम्मान की एक आम खोज है।

अथातो कुम्भ जिज्ञासा

डा. बिपिन पाण्डेय

संसार की सारी सभ्यताएं और संस्कृतियां नदियों के तट पर बसीं। नदी प्राणिजगत का आधार रहा है । भारत की सनातन संस्कृति ने नदी के तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन किया, वैदिक काल से लेकर ब्राह्मण काल, आरण्यक, उपनिषद, रामायण, महाभारत काल से लेकर इस 21वी. सदी तक कुम्भ महापर्व अपनी लोकप्रियता बनाये हुए है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में कुम्भ के वैदिक आयाम से लेकर अधुनातन तक के भौतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक पक्षों को प्रस्तुत किया गया है। अगले 100 से अधिक वर्षों तक के कुम्भ की तिथियां भी ग्रहगणित के द्वारा निकलाकर प्रस्तुत की जा रही है।

कुम्भ विश्व का प्राचीनतम और श्रेष्ठतम तीर्थपर्व और मेला है। सनातन धर्म मे चार आश्रम स्वीकृत है – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। "यतोऽभ्युदयेनि:श्रेयशसिद्धि: स धर्म:" कुम्भ में सम्मिलित होने से स्लोक में भौतिक उन्नति और परलोक में मुक्ति होती है। कुम्भ पर्व में सांसारिक अर्थ सिद्धि भी होती है। व्यापारिक कंपनियां अपने प्रचार प्रसार हेतु कुम्भ में आती हैं। कुम्भ मेले में आने वालो कि मनौतियां, कामनाएं भी पूर्ण होती है। श्रद्धालु अपनी मन कि इच्छाओं की पूर्ति के लिए स्नान–दान और सत्संग करने आता है। मानव जन्म का उद्देश्य जन्म मरण के बंधन से मुक्त होना है, भारत का श्रद्धालु सांसारिक जीवन से मोक्ष हेतु यहां आता है। कुम्भ मेले में सत्संग करने से मुक्ति प्राप्त होती है, मोक्ष मिलता है। इस प्रकार कुम्भ पर्व चार पुरुषार्थ की प्राप्ति का पुण्यस्थल है। सनातन धर्म परम्परा में चार आश्रम स्वीकृत है–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। कुम्भ पर्व पर ब्रह्मचारियों को दीक्षा दी जाती है। गृहस्थ कुम्भ में स्नान, दान और सत्संग के द्वारा पापक्षय और पुण्यसंचय करते है। वानप्रस्थ आश्रम के लोग सत्संग में समय व्यतीत करते हैं। सन्यासी अपना निरपेक्ष प्रागनुभविक और इंद्रियातीत ज्ञान का प्रसार करने आते हैं। इस प्रकार कुम्भ चारों आश्रम का आधार है। आदि शंकराचार्य ने इस पर्व को बृहद स्वरूप प्रदान किया था। तब से आधुनिक युग मे यह पर्व अपनी विशालता को बढ़ाता जा रहा है, 2019 में प्रयाग में हुआ अर्धकुम्भ अब तक का सर्वाधिक जनसंख्या वाला मेला रहा। 2025 के कुम्भ महापर्व में इसका रिकॉर्ड टूटेगा।

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ "**कं जलं उम्भति पूरयति**" अर्थात जल से सूखे और दुर्भिक्ष दूर करने वाला पात्र कुम्भ है। अन्य व्युत्पत्ति के अनुसार **"कु: पृथ्वीं उभ्यतेअनुगृह्यते यस्मिन् महात्मभि: तेषां हितोपदेशैश्च"** पृथ्वी के उपकार के लिए महात्माओं के संगम का स्थान कुम्भ है । यह व्यष्टि से समष्टि की अनुभूति है , अंश–अंश का अंशी से अद्वैत हो जाना कुम्भ है। यह व्यक्ति का समूह में हो जाने का प्रयास है।मैं से हम हो जाने की अभिलाषा है कुम्भ। **"तत्त्वमसि"** (छान्दोग्य उपनिषद 6/8/7) की अपरोक्षानुभूति है कुम्भ महापर्व । जीव का ब्रह्म से **"अभेद दर्शनं ज्ञानं"** की प्रतीति कुम्भ है।

ऋग्वेद के 10/89/7 में कुम्भ शब्द घट के लिए प्रयुक्त हुआ है। यजुर्वेद में कुम्भ शब्द पुरुष के लिए और कुम्भी शब्द स्त्री के लिए प्रयुक्त हुआ है–

कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिरॉयस्मिन्नग्रे योज्यांगर्भो अंत:।
प्लाशिर्व्यक्त: शतधार: उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधांपितृभ्य: ।।

यजुर्वेद संहिता 19/47

यहां आशय है कि कुम्भ के समान शौर्यादि गुणों से सम्पन्न शक्तिशाली पुरुष और स्त्री परिवार के वयोबृद्ध जनों का भरण पोषण करते हुए नए सन्तति का जन्म, विकास और संस्कारित करते हैं। अथर्ववेद में कुम्भ उत्सव का रूप ले चुका है–

पूर्णकुम्भो अधिकाल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा न सन्नत:।।

अथर्ववेद 19/53/3.

अर्थात पूर्णकुम्भ के महान उत्सव का पर्व आ गया है। उसे हम

सभी समवेत होकर देख रहे हैं। पारस्कर गृह्यसूत्र में कुम्भ की पूजा की गई है–

त्वत्तोये कुम्भ तीर्थानि, देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।

पारस्कर गृह्य सूत्र 1/14/5.

अर्थात है कुम्भ तुम्हारे जल में सभी तीर्थ स्थित है, सभी देवता तुममे स्थित हैं, सभी प्राणी तुम्हारे अंदर बैठे हैं, सारे प्राणियों के प्राण भी तुम्हारे अंदर प्रतिष्ठित हैं। मनुस्मृति में कुम्भ शब्द घट परिमाण के अर्थ में प्रयुक्त है–

घृत कुम्भ वराहे तु तिल द्रोणां तुतित्तिरौ।

मनुस्मृति 11/134

अर्थात वराह या सूकर मारने वाले को प्रायश्चित के लिए कुम्भ भरकर घी का दान करने चाहिए। अरुण स्मृति में गृहोपकरणों के दान में उदक कुम्भ का उल्लेख आया है–

गृहोपकरणान् सर्वान् गोमहिष्यादिभूषणान्।
कण्डनी पेषणी चुल्हो उदककुम्भः प्रमार्जिनी ।।

अरुण स्मृति 1/38.

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में रंगमंच के मध्य में कुम्भ प्रतिष्ठित करने के लिए कहा गया है–

कुम्भं सलिलसम्पूर्णं पुष्पमाला पुरस्कृतम्।
स्थापयेद् रंगमध्ये तु सुवर्णं चात्र दापयेत्।।

नाट्यशास्त्र 3/72.

अर्थात जल से भरे कुम्भ को पुष्पमाला से अलंकृत करके ,सोना डालकर रंगमंच के मध्य में स्थापित करना चाहिये। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में ही समुद्र में अमृतमंथन का भी उल्लेख है।

नाट्यशास्त्र 4/2.

महाभारत 13/149/81 में कुम्भ शब्द शुद्धात्मा और विष्णु के पर्याय के रूप में प्रयुक्त है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र में राशिचक्र की 11वीं राशि कुम्भ है जिसमे स्वामी शनि है, यह शनि की मूल त्रिकोण राशि भी है। सारावली के अनुसार **"कुम्भः कुम्भधरो"** कुम्भ राशि का स्वरूप–एक मनुष्य घडा लेकर लोगों को पानी पिलाने के लिये जाता हुआ सा दिखाई देता है। कुम्भ राशि मे कोई ग्रह उच्च का नही होता। कुम्भ राशि का रंग–वभ्रुव, जाति–शूद्र, धातु–सम, स्वभाव– स्थिर, लिङ्ग–पुरुष, प्रकृति–जलचर, संज्ञा–शीर्षोदय, बली– दिनबली, अंग–जंघाद्वय, प्लवत्व/दिशा–पश्चिम, आकृति–ह्रस्व, स्वभाव–क्रूर, निवास–शिल्पगृह, स्थान–भाण्ड पार्श्वे है।

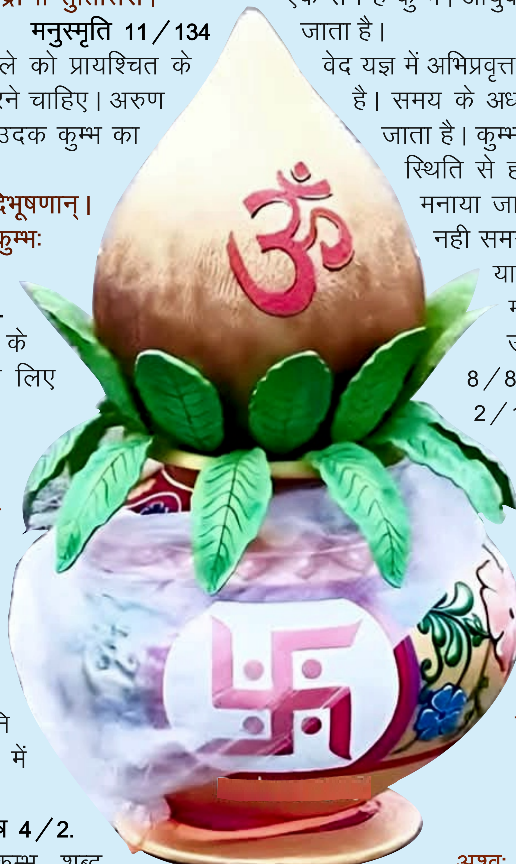

कलश या घट को कुम्भ कहा जाता है। सनातन धर्म के कर्मकाण्ड में कुम्भ या कलश लोकमंगल का पर्याय है ।इस कुम्भ के अंतर्गत ब्रह्मा, विष्णु, महेश, षोडश मातृकाएं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, गायत्री, सावित्री,शान्ति, पुष्टिकरी, गंगा, यमुना, गोदावरी, सारस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी और सभी सागर इसमें समाहित हैं। भारत के मन्दिरों के शीर्ष भाग को भी कुम्भ कहा जाता है। संगीत शास्त्र का एक राग है कुम्भ। आयुर्वेद में शिर या मस्तक को कुम्भ कहा जाता है।

वेद यज्ञ में अभिप्रवृत्त हैं। यज्ञ काल (समय) पर आधारित है। समय के अध्ययन के विज्ञान को ज्योतिष कहा जाता है। कुम्भ पर्व का निर्णय अलग अलग ग्रहीय स्थिति से होता है। प्रयाग में प्रत्येक 12वे वर्ष मनाया जाने वाला कुम्भ पर्व सनातन धर्म ही नही समग्र मानव जाति का श्रेष्ठतम समागम या मेला है। समुद्र मंथन की कथा महाभारत के आदि पर्व 18–19 में उल्लिखित है। भागवत पुराण 8/8/6, पद्म पुराण सृष्टि खण्ड 2/1/4, अग्नि पुराण अवतार खण्ड 1/2, विष्णु पुराण अध्याय 9 में, स्कन्द पुराण 4/1/5 और शिव पुराण 3/21 में समुद्र मंथन की कथा का उल्लेख है। समुद्र मंथन सतयुग के चाक्षुष मन्वन्तर में हुई थी।

समुद्र मंथन में चौदह रत्न निकले ।

लक्ष्मीःकौस्तुभपारिजातकसुराधन्वन्तरिश्चन्द्रमाः।
गावः कामदुहा सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवांगनाः।।
अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंखोमृतं चाम्बुधेः।
रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्यात्सदा मंगलम्।।

यह चतुर्दश रत्न 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार का प्रतीक हैं। इन पर नियंत्रण करना ही कुम्भ का प्रमुख उद्देश्य है। कथा के अनुसार समुद्र मंथन में अमृत कलश निकलते ही देवताओ और दैत्यों में छीना झपटी मच गई। अवसर पाकर देवराज इंद्र के पुत्र जयन्त अमृत कलश लेकर भागे। दैत्यों ने उनका पीछा किया। जयंत के भागते समय अमृत कुम्भ की कुछ बून्दे 12 स्थानों पर गिरीं।

"जायन्ते कुम्भ पर्वाणि तथा द्वादश संख्यया, तत्राधनन्तमे नृणां चत्वारो भुवि भारते, अष्टौ लोकान्तरे प्रोक्ता देवैर्गम्या न चैतरेः" जिनमे चार स्थान पृथ्वी लोक पर और 8 स्थान स्वर्गादि लोको पर स्थित हैं। पृथ्वी पर यह 4 स्थान हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में है अमृत कलश की बून्दे जिस समय (मुहूर्त) में जिस स्थान पर गिरी उस स्थान पर वहां कुम्भ पर्व मनाने की परंपरा विकसित हुई। पृथ्वी पर स्थित चार कुम्भ मेलो की जानकारी सभी मनुष्यों को हो जाती है शेष 8 स्थानों पर कुम्भ पर्व जानकारी केवल देवताओं और दिव्य प्राणियों को ही हो पाती है।

अमृत कुम्भ की बून्दें जिस मुहूर्त में प्रयाग में गिरी उस समय गुरु वृष राशि मे, सूर्य और चंद्रमा मकर राशि मे थे। जिस समय हरिद्वार में अमृत बिंदु गिरे उस समय गुरु कुम्भ राशि मे और सूर्य चंद्रमा मेष राशि पर थे। जिस मुहूर्त में उज्जैन में अमृतबिंदु गिरा उस समय गुरु सिंह राशि मे, सूर्य मेष राशि मे और चंद्रमा तुला राशि मे थे। जब नासिक में अमृत बिंदु गिरा उस मुहूर्त मे गुरु सूर्य और चंद्रमा सिंह राशि मे थे। तब से इन्ही ग्रहीय स्थितियों में कुम्भ पर्व मनाने की परम्परा चल पड़ी।

पद्मिनी नायके मेषे कुम्भ राशि गते गुरौ,
गंगाद्वारे भवेद योगः कुम्भनामा यठोत्तमम्।
माघे वृषगते जीवे मकरे चंद्रभास्करे,
अमायांच तदायोगः कुम्भाख्यास्तीर्थनायके ।

मेष राशिगते सूर्ये सिंह राशौ वृहस्पतौ,
उज्जयिन्यां भवेद कुंभः सदामुक्तिः प्रदायकः।
सिंह राशिगते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ,
गोदावर्यां भवेत् कुम्भो जायते खलु मुक्तिदः।।

प्रयाग कुम्भ पर्व का प्रमुख स्नान माघ मास की अमावस्या को होता है। इसे मौनी अमावस्या भी कहा जाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने राम चरितमानस में प्रतिवर्ष होने वाले कुम्भ मेले का वर्णन किया है–

माघ मकर गति रवि जब होई, तीरथ पतिहि आव सब कोई।
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी, सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी।।

रामचरितमानस/बालकाण्ड 43/3

अर्थात माघ मास में जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं तो तीर्थराज प्रयाग में सब मनुष्य आते हैं , इसमे देवता दानव, किन्नर, नर, श्रेणी सब आकर आदरपूर्वक गंगा यमुना और अव्यक्त सरस्वती की त्रिवेणी में स्नान करते हैं।

महाभारत में प्रयाग में गंगा यमुना और अव्यक्त सरस्वती में स्नान की बड़ी महिमा उल्लिखित है–

तत्राभिषेकं यः कुर्यात् संगमे लोकविश्रुते।
पुण्यं स फलमवाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः।।

महाभारत वनपर्व 85/81.

अर्थात उस प्रयाग के प्रसिद्ध संगम में जो स्नान करते हैं उन्हें राजसूय और अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। स्नान का सर्वोत्तम समय अरुणोदयकाल (ब्रह्म मुहूर्त)होता है। अरुणोदय काल मे भी जिस समय तारे दिखाई पड़ते हों वह सर्वोत्तम मुहूर्त होता है।

उत्तमं तु सनक्षत्रं लुप्ततारं तु मध्यमम्।
सवितुर्युदिते भूप ततौ हीनं प्रकीर्तितम्।।

नारद पुराण में सूर्योदयान्तर स्नान का भी महात्म्य उल्लिखित है।माघ स्नान करके तिल और शर्करा के दान का उल्लेख है जिसमे तीन भाग तिल और चौथाई भाग शर्करा होनी चाहिए।

अहन्यहनि दातव्यास्तिलाः शर्कर्यान्विताः।
त्रिभागस्तु तिलानां हि चतुर्थः शर्कर्यान्वितः।।

आगामी कुम्भ मुहूर्त निम्नवत हैं–

प्रयाग में कुम्भ पर्व का प्रमुख मुहूर्त माघकृष्ण अमावस्या को होता है।

यह मुहूर्त 29 फरवरी 2025, 16 जनवरी 2037, 2 फरवरी 2049, 2 फरवरी 2060, 20 जनवरी 2072, 6 फरवरी 2084, 25 जनवरी 2096, 11 फरवरी 2108 और 30 जनवरी 2120।

प्रयाग अर्धकुम्भ का मुहूर्त – **23 जनवरी 2031, 21 जनवरी 2042, 7 फरवरी 2054, 25 जनवरी 2066, 12 फरवरी 2078, 30 जनवरी 2090, 19 जनवरी 2102, 5 फरवरी 2114 और 23 जनवरी 2126।**

उज्जैन का कुम्भस्नान वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को होता है कभी कभी चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को भी होता है।

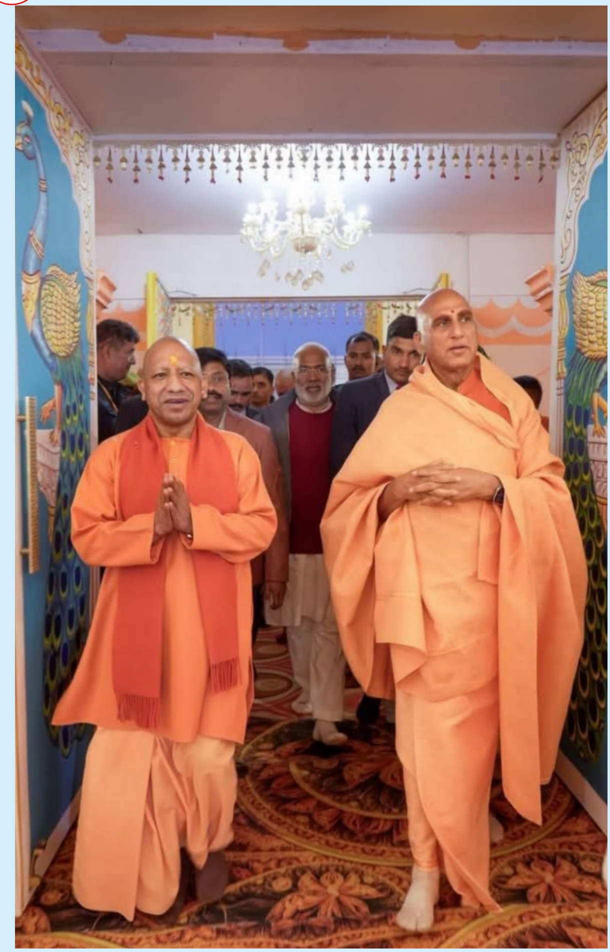

यह मुहूर्त 8 मई 2028 और 27 अप्रैल 2040, 26 अप्रैल 2051, 12 मई 2063, 30 अप्रैल 2075, 18 अप्रैल 2087, 4 मई 2099, 23 अप्रैल 2111, 10 मई 2123, 8 मई 2134, 26 मई 2146 और 13 मई 2158 है।

हरिद्वार का कुम्भस्नान का मुहूर्त वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को होता है

यह मुहूर्त 29 अप्रैल 2033, 11 अप्रैल 2045, 3 मई 2057, 21 अप्रैल 2069, 8 मई 2081, 25 अप्रैल 2093, 25 अप्रैल 2104, 12 मई 2116, 29 मई 2128, 17 अप्रैल 2140 और 4 मई 2152 है।

हरिद्वार के अर्द्धकुम्भ का पर्व वैशाख की अमावस्या को होता है

यह मुहूर्त 24 अप्रैल 2028, 11 मई 2040, 10 मई 2051, 28 अप्रैल 2063, 11 मई 2040, 10 मई 2051, 28 अप्रैल 2063, 15 अप्रैल 2075, 2 मई 2087, 20 अप्रैल 2099, 7 मई 2111, 26 अप्रैल 2123, 24 अप्रैल 2134, 10 मई 2146 और 28 अप्रैल 2158।

नासिक कुंभ स्नान भाद्रपद मास की अमावस्या को पड़ता है।

यह मुहूर्त 31 अगस्त 2027, 19 अगस्त 2039, 5 सितम्बर 2051, 24 अगस्त 2063, 10 सितम्बर 2075, 28 अगस्त 2087, 26 अगस्त 2098, 14 सितम्बर 2110, 21 अगस्त 2122, 18 अगस्त 2134, 6 सितम्बर 2146 और 24 अगस्त 2158 है।

इस कुम्भ पर्व में चार मठ – श्रृंगेरी (रामेश्वरम), जोशी (वादरिकाश्रम), गोवर्धन (जगन्नाथ पुरी) और शारदा मठ (द्वारिका) के सन्यासियों को दीक्षा दी जाती है। दसनामी सन्यासी सम्प्रदाय – गिरि, पुरी, भारती, तीर्थ, वन, अरण्य, पर्वत, आश्रम, सागर, सरस्वती के सभी संत कुम्भ में आते है। तेरह अखाड़े – निरंजनी, जूना, महानिर्वाणी, आनंद, अग्नि, अटल, आह्वान, निर्वाण, अनी, दिगम्बर, निर्मोही, बड़ा पंचायती उदासीन, नया उदासीन अखाड़ा और निर्मल अखाड़े के संता यहां अपने आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करने आते हैं। कुम्भ मेले में पहले अखाड़े के सन्यासी स्नान करते हैं उसके बाद श्रद्धालुजन तीर्थ स्नानकर पुण्यलाभ प्राप्त करते हैं।

प्रयाग शताध्यायी में पांचवे कुम्भस्थल कुम्भकोणम (चेन्नई) का उल्लेख है यहां हर 12 वर्ष पर महामखम उत्सव मनाया जाता है।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति,
पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं कुम्भकोणे विनश्यति।
कुम्भकोणे कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति,
तत्रापि यतकृतं पापं प्रयागे तद्विनश्यति।।
(प्रयाग शताध्यायी –पूर्वार्ध अध्याय 3)

भारत मे कुम्भकोणम, बृन्दावन और जबलपुर में नर्मदा तट पर भी कुंभपर्व मनाने की परम्परा है, किन्तु इन स्थलों को प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन जैसी मान्यता नही मिली। यूनेस्को के अधीनस्थ संगठन **"इण्टर गवर्नमेंटल कमेटी फार द कल्चरल हेरिटेज"** ने दक्षिण कोरिया के जेजू में हुए अपने अपने 12वें सत्र में दिसंबर 2017 में कुम्भ मेले को" मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की प्रतिनिधि सूची" में शामिल किया गया है।

इस प्रकार कुम्भ मानव की चेतना को जाग्रत करने का महापर्व है, प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन का कुम्भ सनातन संस्कृति की अद्भुत उपलब्धि है जिसे भारत ही नही सारा संसार स्वीकार कर रहा है। भारत के बाहर से अन्य अनेक धर्म, जाति, और देश के लोग आकर इसको आश्चर्य से देखते हैं। भौतिकवादी विचारधारा के लोगो के लिए कुम्भ पर्व कौतूहल का विषय है, आध्यात्मिक विचारधारा के लोग इसके माध्यम से संसार सागर को पार करने का मार्ग खोजते हैं।

अमृतत्व, मुक्ति का पर्व 'महाकुंभ'

मीना चौबे

कुम्भ हमारी संस्कृति में कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है, जैसा कि हम जानते है पूर्णता प्राप्त करना हमारा लक्ष्य है, पूर्णता का अर्थ समग्र जीवन के साथ एकता, अंग को पुरे अंगी की प्रतिस्मृति, एक टुकड़े के होते हुए अपने पुरे समूचे रूप का ध्यान करके अपने छुटपन से मुक्ति,इस पूर्णता की अभिव्यक्ति है पूर्ण कुम्भ, यह कुम्भ भारत को जोड़ने का कार्य सहस्त्राब्दियों से कर रहा है, देवता अमृत कलश से अमर हुए देवता जाने, पर आदमी समय समय पर एक विशेष प्रकार की अमरता पाता रहता है, यही महाकुम्भ के आयोजन का चरम उद्देश्य है, यह अमरत्व एक देह में अनंत काल तक बने रहना नही है,

यह अमरत्व नश्वर देह में मृत्यु की लघुता और जीवन की अखंडता का है ।ऐसे पर्व के समय सभी ऐसे क्षण में यही भाव जगता है कि सारी कामनाएं क्षार (भस्म) होकर जल की तरलता से एकाकार हो जाएं।

धर्मशास्त्रों के अनुसार अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष इन चारों दिव्य पुरुषार्थों को प्राप्त करना ही मानव जीवन का उद्देश्य है। जन्म और मृत्यु के चौरासी लाख चक्रों को पार करने के बाद दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त होता है ताकि मनुष्य योनि में प्रभु की भक्ति कर मोक्ष पाकर जन्म और मरण के चक्र से मुक्ति मिल सके और मुक्ति के इस मार्ग को प्रशस्त कर अमृतत्व प्रदान करता है 'कुम्भ पर्व'। 'कुम्भ पर्व' का आयोजन अनादिकाल से होता चला आ रहा है, जो केवल भारतवर्ष का ही नहीं अपितु पूरे विश्व के जनमानस की एकता, मानवता एवं आस्था का संगम है।

भारतीय संस्कृति में जन्म से मृत्यु तक के सभी शुभाशुभ संस्कारों में कुम्भ (कलश) को स्थापित करने के पश्चात् ही देव पूजन कर्म करने का विधान है। कलश या घट कुम्भ का पर्याय है, ज्योतिष शास्त्र में बारह राशियों में से कुम्भ एक राशि भी है। कुम्भ का आध्यात्मिक अर्थ है ज्ञान का संचय करना, ज्ञान की प्राप्ति प्रकाश से होती है और कुम्भ स्नान, दर्शन, पूजन से आत्म तत्व का बोध होता है। हमारे अन्दर ब्रह्माण्ड की समस्त रचना व्यापत है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार **'यत् पिण्डे, तत् ब्रह्माण्डे, तत् ब्रह्माण्डे, यत् पिण्डे'**, अर्थात् जो मानव पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड है और जो ब्रह्माण्ड में है, वही मानव पिण्ड में है। कुम्भ, 'घट' का सूचक है और घट शरीर का, जिसमें घट–घट व्यापी आत्मा का अमृत रस व्याप्त रहता है।

यह मानव पिण्ड में निहित प्रतीकों में इसलिए व्याप्त है, जिसमें संत दर्शन, देव दर्शन आदि के माध्यम से मनुष्य अन्तर्मुखी होकर चिन्तन कर सके एवं समझ सके। 'कुम्भ पर्व' में जिस ऐतिहासिक कुम्भ का स्मरण किया जाता है वह अमृत कुम्भ सुधाकलश है जिसके लिए वैदिक काल में प्रसिद्ध देवासुर संग्राम हुआ था। समुन्द्रमन्थन से प्राप्त चौदह रत्नों में से एक अमृत कुम्भ था। इसी को प्राप्त करने के लिए देवताओं व असुरों में देवासुर संग्राम हुआ था। माना जाता है कि संमुद्र मंथन से जो अमृत कलश निकला था उस कलश से देवता और राक्षसों के युद्ध के दौरान धरती पर अमृत छलक गया था।

जहां–जहां अमृत की बूंद गिरी वहां प्रत्येक बारह वर्षो में एक बार कुंभ का आयोजन किया जाता है। उन चौदह रत्नों में अमृत कुम्भ ही सर्वोपरि महत्व की वस्तु थी, अतः उसी की स्मृति 'कुम्भ पर्व' के रूप में सुरक्षित चली आ रही है। हिंदू धर्मग्रंथ के अनुसार इंद्र के बेटे जयंत के घड़े से अमृत की बूंदे भारत में चार जगहों पर गिरी, हरिद्वार में गंगा नदी में, उज्जैन में शिप्रा नदी में, नासिक में गोदावरी और प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती के त्रिवेणी संगम स्थल पर। कुम्भ के माहात्म्य को जितना भी कहा जाए वह कम है,

"अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च। लक्ष प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलं।।"

एक हजार अश्वमेध यज्ञ, एक सौ वाजपेय यज्ञ एवं एक लाख पृथ्वी की परिक्रमा करने का जो फल प्राप्त होता है वही फल मनुष्य को 'कुम्भ स्नान' से मिलता है। प्रयागराज में 2025 में महाकुम्भ के आयोजन के अवसर पर गंगा, यमुना, सरस्वती के पावन त्रिवेणी संगम पर असंख्य श्रद्धालु मोक्ष की डुबकी लगाऐंगे। धार्मिक विश्वास के अनुसार कुंभ के अवसर पर श्रद्धापूर्वक स्नान करने वाले लोगों के सभी पाप कट जाते हैं और उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। सौभाग्यवश इस बार पुनः उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 2019 के अर्धकुम्भ के बाद इस बार पुनः 2025 में महाकुंभ लग रहा है ।

उत्तर प्रदेश के मा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी 2019 के अर्ध कुम्भ के अद्भुद सफलतम आयोजन के बाद इस बार पुनः प्रयागराज में 2025 के महाकुम्भ का बृहद स्तर पर आयोजन किया गया है ताकि संत सन्यासी व हर किसी भी धर्मनिष्ठ श्रद्धालु सहजता से महाकुम्भ में स्नान कल्पवास कर अमृतपान कर सके।

भारतीय संस्कृति का प्रतीक है महाकुंभ मेला

डॉ. सौरभ मालवीय

महाकुंभ मेला भारत की गौरवशाली संस्कृति का प्रतीक है। यह देश की सांस्कृतिक धरोहर है। यह मेला हमारी गौरवमयी संस्कृति का संवाहक है। यह भारत की आध्यात्मिक शक्ति एवं आस्था को दर्शाता है। यह कला–संस्कृति, गायन, नृत्य, हस्तकला को प्रोत्साहित करता है। इस मेले में संपूर्ण भारत की झलक मिलती है। इसमें प्राचीन भारत के साथ–साथ आधुनिक भारत का भी बोध होता है। मेले में सम्मिलित होने से आत्मा के अजर अमर होने की भारतीय मान्यता पर विश्वास अत्यधिक दृढ़ हो जाता है। यह मेला भारतीय दर्शन का प्रतीक है।

उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 13 जनवरी 2025 को पौष पूर्णिमा स्नान के साथ कुंभ मेले का शुभारंभ होगा तथा 26 फरवरी 2025 को महाशिवरात्रि के अंतिम स्नान के साथ इसका समापन होगा। शाही स्नान 14 जनवरी को मकर संक्रांति पर, 29 जनवरी को मौनी अमावस्या पर, 3 फरवरी को बसंत पंचमी पर, 12 फरवरी को माघी पूर्णिमा पर तथा 26 फरवरी को महाशिवरात्रि पर होगा।

सांस्कृतिक व धार्मिक महत्व प्रयागराज हिंदुओं का अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यहां गंगा, यमुना एवं सरस्वती का अद्भुत संगम होता है जिसे अत्यंत पवित्र माना जाता है। यहां कुंभ मेले का आयोजन होता है। कुंभ मेले के अवसर पर करोड़ों श्रद्धालु प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक में स्नान करके पुण्य अर्जित करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष तथा प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के मध्य छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुंभ मेले का आयोजन होता है। कुंभ का शाब्दिक अर्थ घड़ा एवं मेले का अर्थ एक स्थान पर एकत्रित होना है। कुंभ मेला अमृत उत्सव के नाम से भी प्रसिद्ध है।

खगोल गणनाओं के अनुसार कुंभ मेला मकर संक्रांति के दिन प्रारंभ होता है। उस समय सूर्य एवं चंद्रमा, वृश्चिक राशि में तथा वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। इस दिवस को अति शुभ एवं मंगलकारी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुल जाते हैं। इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति होती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु अमृत से भरा हुआ कुंभ लेकर जा रहे थे तभी असुरों ने उन पर आक्रमण कर दिया। अमृत प्राप्ति के लिए देव एवं दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरंतर युद्ध होता रहा। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के समान होते हैं। इसलिए कुंभ भी बारह होते हैं। इनमें से चार कुंभ पृथ्वी पर होते हैं तथा शेष आठ कुंभ देवलोक में होते हैं। देव एवं दानवों के इस संघर्ष के दौरान भूमि पर अमृत की चार बूंदें गिर गईं। ये बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन में गिरीं। जहां–जहां अमृत की बूंदें गिरीं वहां पर तीर्थ स्थल का निर्माण किया गया। तीर्थ उस स्थान को कहा जाता है जहां मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस प्रकार जहां अमृत की बूंदें गिरीं, उन स्थानों पर तीन–तीन वर्ष के अंतराल पर बारी–बारी से कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। इन तीर्थों में प्रयाग को तीर्थराज के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहां तीन पवित्र नदियों गंगा, यमुना एवं सरस्वती का संगम होता है। इन नदियों में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

भारत में महाकुंभ धार्मिक स्तर पर अत्यंत पवित्र एवं महत्वपूर्ण आयोजन है। इसमें लाखों–करोड़ों श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं। इस बार के महाकुंभ में लगभग 40 करोड़ तीर्थयात्रियों के सम्मिलित होने की संभावना व्यक्त की जा रही है। लगभग डेढ़ मास तक संचालित होने वाले इस आयोजन में तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए व्यवस्था की जाती है। उनके लिए टेंट लगाए जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि एक छोटी सी नगरी अलग से बसा दी गई है। यहां तीर्थयात्रियों के लिए मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। यह आयोजन प्रशासन, स्थानीय प्राधिकरणों एवं पुलिस की सहायता से आयोजित किया जाता है। इस मेले में दूर–दूर से साधु–संत आते हैं। कुंभ योग की गणना कर स्नान का शुभ मुहूर्त निकाला जाता है। स्नान से पूर्व मुहूर्त में नागा साधु स्नान करते हैं। इन साधुओं के शरीर पर भभूत लिपटी रहती है। उनके बाल लंबे होते हैं तथा वे वस्त्रों के स्थान पर शरीर पर मृगचर्म धारण करते हैं। स्नान के लिए विभिन्न नागा साधुओं के अखाड़े भव्य रूप से शोभा यात्रा की भांति संगम तट पर पहुंचते हैं। ये साधु मेले का आकर्षण का केंद्र होते हैं।

उत्तर प्रदेश धर्म, संस्कृति एवं पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत

महत्वपूर्ण राज्य है। महाकुंभ मेले के कारण यहां विश्वभर से तीर्थयात्रियों के साथ–साथ पर्यटक भी आएंगे। इसलिए प्रयागराज के ऐतिहासिक मंदिरों का जीर्णोद्धार एवं नवीनीकरण किया जा रहा है। पर्यटन विभाग, स्मार्ट सिटी एवं प्रयागराज विकास प्राधिकरण मिलकर यह कार्य कर रहे हैं। मेला प्रशासन श्रद्धालुओं और पर्यटकों की आस्था एवं सुविधा को प्राथमिकता दे रहा है, जिससे उन्हें स्मरणीय अनुभव प्राप्त हो सके तथा वे यहां से प्रसन्नतापूर्वक वापस जाएं। पर्यटन विभाग जिन कॉरिडोर एवं नवीनीकरण परियोजनाओं की देखरेख कर रहा है, उनमें से मुख्य रूप से भारद्वाज कॉरिडोर, मनकामेश्वर मंदिर कॉरिडोर, द्वादश माधव मंदिर, पड़िला महादेव मंदिर, अलोप शंकरी मंदिर आदि सम्मिलित हैं। स्मार्ट सिटी परियोजना के अंतर्गत अक्षयवट कॉरिडोर, सरस्वती कूप कॉरिडोर एवं पातालपुरी कॉरिडोर सम्मिलित हैं। प्रयागराज विकास प्राधिकरण नागवासुकी मंदिर का नवीनीकरण कार्य एवं हनुमान मंदिर कॉरिडोर का कार्य करवा रहा है।

पौधारोपण महाकुंभ मेले के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश को हरभरा बनाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। राज्य में हरित क्षेत्र के विस्तार के लिए संपूर्ण राज्य में 2.71 लाख पौधे लगाए जा रहे हैं। इसके लिए वन विभाग, नगर निगम एवं प्रयागराज विकास प्राधिकरण मिलकर कार्य कर रहे हैं तथा संयुक्त रूप से राज्यभर में अभियान चला रहे हैं। वन विभाग द्वारा 29 करोड़ रुपये की लागत से 1.49 लाख पौधे लगाए जाएंगे। वन विभाग संपूर्ण जिले में सड़कों के किनारे पौधे लगाएगा। नगर में आने वाली मुख्य सड़कों पर सघन पौधारोपण किया जा रहा है। सड़कों के किनारे नीम, पीपल, कदंब एवं अमलतास आदि के पौधे लगाए जा रहे हैं। इस अभियान के अंतर्गत सरस्वती हाईटेक सिटी में 20 हेक्टेयर में 87 हजार पौधे लगाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त वन विभाग नगर के कुछ क्षेत्रों में पौधे लगाएगा। नगर में हरित पट्टी बनाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

प्राकृतिक उत्पादों को प्रोत्साहन भारतीय जीवन शैली सदैव से प्रकृति के लिए सुखद रही है। देश के अनेक राज्यों विशेषकर दक्षिण भारत में आज भी केले के पत्तों पर भोजन परोसा जाता है। धार्मिक आयोजनों में होने वाले सामूहिक भोज में भी पत्तलों पर भोजन परोसा जाता है। महाकुंभ मेले में प्राकृतिक उत्पाद जैसे दोना, पत्तल, कुल्हड़ एवं जूट व कपड़े के थैलों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसमें पॉलीथिन एवं सिंगल यूज्ड प्लास्टिक पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेगा। पॉलीथिन एवं प्लास्टिक पर्यावरण के लिए एक गंभीर चुनौती बना हुआ है।

स्वच्छता पर बल हमारे देश में आत्मा की शुद्धि के साथ–साथ शारारिक स्वच्छता पर भी विशेष बल दिया जाता है। महाकुंभ मेले में श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की बड़ी संख्या में आने के दृष्टिगत क्षेत्र में लगभग डेढ़ लाख शौचालय एवं मूत्रालय स्थापित किए जा रहे हैं। इनको स्वच्छ बनाए रखने के लिए भी व्यापक तैयारी की गई है। इसमें तकनीकी का भी प्रयोग किया जा रहा है। इन सभी की निगरानी का दायित्व गंगा सेवा दूतों को सौंपा गया है। वे प्रातः एवं सायं इनकी जांच करेंगे। क्यूआर कोड से स्वच्छता की मॉनीटरिंग की जा रही है। यह ऐप बेस्ड फीडबैक देगा, जिसके माध्यम से शीघ्र से शीघ्र सफाई सुनिश्चित की जाएगी। इस बार मैनुअल शौचालय स्वच्छ करने की आवश्यकता नहीं होगी, अपितु जेट स्प्रे क्लीनिंग सिस्टम से कुछ क्षणों में पूरी तरह उन्हें स्वच्छ कर दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त सेसपूल ऑपरेशन प्लान भी तैयार किया गया है, जिसके माध्यम से मेला क्षेत्र में स्थापित शौचालयों के सेप्टिक टैंक को रिक्त किया जाएगा। सेप्टिक टैंक रिक्त करके यहां से वेस्ट को एसटीपी प्लांट या अन्य स्थान पर स्थानांतरित किया जाएगा।

यातायात सुविधा प्रदेश में आने वाले श्रद्धालुओं की प्रत्येक सुविधा का ध्यान रखा जा रहा है। इसलिए यातावात की भी समुचित व्यवस्था की जा रही है। प्रयागराज आने वाली बसों, रेलगाड़ियों एवं वायुयान की संख्या में वृद्धि की जा रही है। महाकुंभ के लिए रेलवे द्वारा लगभग 1200 रेलगाड़ियां तथा परिवहन विभाग द्वारा सात हजार बसों का संचालन किया जाएगा।

तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए योगी सरकार ने केंद्र की मोदी सरकार ने महाकुंभ के दौरान प्रयागराज में प्रवेश करने पर सात टोल प्लाजा को टैक्स फ्री करने का अनुरोध किया था, जिसे स्वीकृत कर लिया गया है। महाकुंभ के दौरान 45 दिनों तक चित्रकूट मार्ग पर उमापुर टोल प्लाजा, रीवा राजमार्ग पर गन्ने टोल प्लाजा, मिर्जापुर मार्ग पर मुंगारी टोल प्लाजा, वाराणसी मार्ग पर हंडिया टोल प्लाजा, लखनऊ राजमार्ग पर अंधियारी टोल प्लाजा, अयोध्या राजमार्ग पर मऊआइमा टोल प्लाजा निःशुल्क रहेगा। यहां से प्रवेश करने वाले यात्रियों से कोई भी टोल नहीं लिया जाएगा। यह सुविधा 13 जनवरी से 26 फरवरी तक रहेगी। यद्यपि यह सुविधा माल वाहक व्यवसायिक वाहनों को नहीं मिलेगी। इस समयावधि में सरिया, सीमेंट, बालू एवं इलेक्ट्रॉनिक्स सामान से भरे वाहनों से टोल लिया जाएगा। किंतु व्यवसायिक पंजीकृत जीप एवं कार आदि से भी टोल नहीं लिया जाएगा। माना जा रहा है कि इस बार का कुंभ मेला स्वयं में विशेष होगा।

महाकुंभ: अध्यात्म, एकता और मानवता का महासंगम

मृत्युंजय दीक्षित

सनातन हिंदू संस्कृति का महापर्व है दृमहाकुंभ, विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव। सनातन संस्कृति की आस्था का सबसे बड़ा और सर्वोत्तम पर्व महाकुंभ न केवल भारत अपितु संपूर्ण विश्व में सुविख्यात है। यह एकमात्र ऐसा महापर्व है जिसमें सम्पूर्ण विश्व से श्रद्धालु भक्त कुम्भस्थल पर आकर भारत की समन्वित संस्कृति, विश्व बंधुत्व की सद्भावना और जनसामान्य की अपार आस्था का अनुभव करते हैं। वैभव और वैराग्य के मध्य आस्था के इस महाकुम्भ में सनातन समाज नदी के पावन प्रवाह में अपने समस्त विभेदों, विवादों और मतांतरो को विसर्जित कर देता है। इस मेले में मोक्ष व मुक्ति की कामना के साथ ही तन,मन तथा बुद्धि के सभी दोषों की निवृत्ति के लिए करोड़ों श्रद्धालु अमृत धारा में डुबकी लगाते हैं। महाकुंभ में योग, ध्यान और मंत्रोच्चार से वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर जाता है।

हाथी निकले। इसके पश्चात माता लक्ष्मी का प्राकट्य हुआ जिन्होंने भगवान विष्णु का वरण किया। वारुणी और शंख निकले। अन्त में धन्वन्तरि वैद्य अमृत घट लेकर निकले।दैत्यों ने उस अमृत घट को छीन लिया और पीने के लिये आपस में ही लड़ने लगे,तब भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारणकर दैत्यों को रूप सौन्दर्य से आसक्त कर लिया। दैत्यों ने अमृतघट विष्णु रूपी मोहिनी को बांटने के लिये दे दिया। मोहिनी रूपी विष्णु ने देवताओं को अमृत बांटना प्रारम्भ किया, एक असुर को मोहिनी की यह चालाकी समझ आ गयी और उसने देवताओं की पंक्ति में बैठकर अमृत प्राप्त कर लिया। जब देवताओं का ध्यान उसकी ओर गया तो उन्होंने भगवान विष्णु को बताया। भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से उस दैत्य की गर्दन धड़ से अलग कर दी, दैत्य के शरीर के यही दो भाग राहु और केतु हैं। देवों को अमृत पान कराकर भगवान विष्णु

महाकुंभ में समस्त अखाड़े प्रतिभाग करते हैं उनमें से प्रत्येक की महिमा, इतिहास व परम्पराएं अदभुत हैं।

महाकुंभ का इतिहास प्राचीन पौराणिक कथाओं में रचा बसा है। इसकी कथा समुद्र मंथन और देव–दानव संघर्ष से जुड़ी है जिसमें अमृत कलश की प्राप्ति हुई थी। समुद मंथन की कथा के अनुसार राजा बलि के राज्य में शुक्राचार्य के आशीर्वाद एवं सहयोग से असुरों की शक्ति बहुत बढ़ गई थी और देवतागण उनसे भयभीत रहने लगे थे। भगवान विष्णु के सुझाव पर देवताओं ने असुरों से मित्रता कर ली और समुद्र मंथन किया। क्षीर सागर के मन्थन के लिये मन्दराचल पर्वत की मथानी और वासुकी नाग को रस्सी बनाया गया।समुद्र मंथन से सर्वपथम हलाहल विष निकला जिसका पान करके शिव जी ने समस्त सृष्टि की रक्षा की और नीलकंठ कहलाए । तत्पश्चात क्रमशः चन्द्र, कामधेनु गौ,कल्पवृक्ष,पारिजात, आम्रवृक्ष तथा सन्तान ये चार दिव्य वृक्ष, कौस्तुभ मणि, उच्चैश्रवा, अश्व और ऐरावत

अन्तर्धान हो गये। इसके पश्चात देवासुर संग्राम छिड़ गया। देवराज इन्द्र की आज्ञा से उनके पुत्र जयंत अमृत कलश लेकर पलायन कर गए, दैत्य उनका पीछा कर रहे थे इस भागने के क्रम में जिन स्थानों पर अमृत छलककर गिरा उन्हीं स्थानों पर कुम्भ का आयोजन होता है। वे स्थन हैं हरिद्वार, उज्जैन,नासिक और प्रयागराज। अमृतकलश लेकर भागने के दौरान सूर्य,चन्द्र, वृहस्पति तथा शनि ने असुरों से जयन्त की रक्षा की थी, यही कारण है कि इन चारों ग्रहों की विशेष स्थिति होने पर ही कुम्भ का आयोजन होता है। देवासुर संग्राम 12 वर्ष चला था जब देवता बालि पर विजय प्राप्त कर सके थे,अतः प्रत्येक बारह वर्ष में कुम्भ का मेला लगता है।

महाकुम्भ की महिमा का वर्णन स्कंद पुराण में स्पष्ट किया गया है। विष्णु पुराण में भी कुम्भ स्नान की प्रशंसा की गई है। कुंभ की अनेक व्याख्याएं की गई हैं। वेदों में भी कुम्भ की महिमा बताई गई है और ज्योतिष तथा योग में भी कुम्भ है। ऋग्वेद में

कुम्भ शब्द पांच से अधिक बार, अथर्ववेद में दस बार और यजुर्वेद में अनेक बार आया है। ब्रह्माण्ड की रचना को भी कुम्भ के सदृश ही माना गया है।पृथ्वी भी ऐसी ही आकृति ग्रहण करती है। पृथ्वी का परिक्रमण पथ भी कुम्भाकार ही है।कुम्भ का उपयोग घी, अमृत और सोमरस रखने के लिए भी किया जाता था। कुम्भ में ही औषधि संग्रह और निर्माण भी किया जाता था। वेदों में कलश को समुद्रस्थ कहा गया है वहीं अथर्ववेद में पितरों के लिए कुम्भदान का उल्लेख है।

'कुम्भ' का शाब्दिक अर्थ है 'घट, कलश, जलपात्र या करवा। भारतीय संस्कृति में 'कुम्भ' मंगल का प्रतीक है। यह शोभा ,सौन्दर्य एवं पूर्णत्व का वाचक भी है। सनातन संस्कृति में समस्त धार्मिक एवं मांगलिक कार्य स्वास्तिक चिन्ह से अंकित अक्षत, दुर्वा, आम्र पल्लव से युक्त जलपूर्ण कुम्भ के पूजन से प्रारम्भ होते हैं। कुम्भ आदिकाल से हमारी आध्यात्मिक चेतना के रूप में प्रतिष्ठित है।भारतीय संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कारों में कुम्भ का सर्वाधिक महत्व है।मनुष्य जीवन की अन्तिम यात्रा में भी अस्थि कलश अर्थात् कुम्भ और गंगा का ही योग है। ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति तथा अन्य परम्पराओं के अनुसार कुम्भ के तीन प्रकार होते हैं, अर्ध कुम्भ, कुम्भ तथा महाकुम्भ, इस वर्ष प्रयागराज में हो रहा कुम्भ महाकुम्भ है, जिसमें 12 –12 वर्षों की 12 आवृत्तियां पूर्ण हो रही हैं। यह अवसर प्रत्येक 144 वर्ष के उपरांत आता है इसीलिए इसे महाकुम्भ कहा जाता है। महाकुम्भ और प्रयागराज ये दुर्लभ संयोग है क्योंकि कुम्भ दृमहाकुम्भ है और प्रयागराज दृतीर्थराज हैं। प्राचीन काल में प्रयागराज को बहुयज्ञ स्थल के नाम से जाना जाता था। ऐसा इसलिये क्योंकि सृष्टि कार्य पूर्ण होने पर सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने प्रथम यज्ञ यहीं किया था तथा उसके बाद यहां पर अनेक पौराणिक यज्ञ हुए। प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती का त्रिवेणी संगम है। महाकुम्भ के अवसर पर यहां पर स्नान करना सहस्रों अश्वमेध यज्ञों, सैकड़ों वाजपेय यज्ञों तथा एक लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से भी अधिक पुण्य प्रदान करता है। प्रयागराज महाकुंभ –2025 में सम्पूर्ण भारत वर्ष में सनातन धर्म के समस्त मत मतान्तर, समस्त अखाड़े दृआश्रम तथा समस्त महान संतों का आगमन हो रहा है, ऐसे ऐसे संत पधार रहे हैं जो सामान्य रूप से दर्शन नहीं देते इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में सनातन धर्म को मानने वाले विदेशी संतों–महंतों तथा उनके शिष्यों का आगमन भी हो रहा है। यह दृश्य अत्यंत अद्भुत होता है जब आम भारतीय जनमानस को उनके भी दर्शन प्राप्त होते हैं।

प्रयागराज महाकुम्भ–2025 में अनुमानत 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का आगमन संभावित है। मेले की तैयारियां स्वयं प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में की गई हैं । मेले के पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व के अनुरूप ही श्रद्धालुओं का अनुभव रहे इस दृष्टि से महाकुम्भ आयोजन की तैयारियां दो वर्ष पूर्व से आरम्भ कर दी गई थीं। लगभग पचास करोड़ लोगों के आतिथ्य को संभल सकने योग्य अवस्थापना का निर्माण किया गया है। उड्डयन, रेल, सड़क परिवहन ने मिलकर यात्रा सुगम बनाने के लिए अपनी सेवाओं को विस्तार दिया है। प्रयागराज नगर को पौराणिक नगरी की तरह सजाया गया है। महाकुम्भ में इस बार केवल सनानत संस्कृति के अलौकिक आध्यात्मिक पहलुओं का दर्शन ही नहीं होगा अपितु विकसित होते भारत का दर्शन भी होगा। महाकुम्भ मेले के प्रबंधन में प्रत्येक स्थान आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। अन्य प्रान्तों से आ रहे श्रद्धालुओं को कोई कठिनाई न हो इसके लिए सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। डेढ़ लाख टेंटों वाली टेंट सिटी बनाई गयी है। स्वच्छता के विशेष प्रबंध किये जा रहे हैं। मेला परिसर में एक 100 शैय्या वाला चिकित्सालय भी स्थापित किया गया है। महाकुम्भ –2025 में गुलामी की मानसिकता के प्रतीक शब्दों और चिह्नों को हटाने का महाअभियान प्रारम्भ हो रहा है जिसके अंतर्गत सर्वप्रथम शाही स्नान का नाम बदलकर अमृत स्नान कर दिया गया है। अखाड़ों के मेला प्रवेश को अब पेशवाई के स्थान पर अखाड़ा छावनी प्रवेश कहा जाएगा। एक घाट का नाम बदलकर महान क्रांतिकारी शहीद चंद्रशेखर आजाद घाट किया गया है। महाकुम्भ–2025 में डिजिटल क्रांति भी देखने को मिलेगी। महाकुम्भ–2025 पर्यावरण संरक्षण व समाजिक समरसता के व्यापक अभियान के लिए भी स्मरणीय बनाया जायेगा। महाकुम्भ में ज्योतिष कुम्भ से लेकर स्वास्थ्य के विभिन्न क्षेत्रों के महाकुम्भ का भी आयोजन होने जा रहा है। मेले की समाप्ति तक निर्धारित मेला क्षेत्र उत्तर प्रदेश के 76 वें जनपद के रूप में मान्य होगा, यह घोषणा मेले के विस्तार और महत्त्व का प्रमाण है।

सामाजिक समरसता का संगम है- महाकुंभ

अशोक कुमार

कुंभ में दुनिया का सबसे बड़ा सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक समागम होता है। यह परंपरा कबसे है इसका कोई ज्ञात इतिहास नहीं है। कुंभ भारतीय संस्कृति दर्शन एवं अध्यात्म का एक सच्चा रुप है। ऐसी मान्यता है कि समुद्र मंथन के बाद जिन चार स्थानों पर अमृत की बूंदें गिरी थी देश के उन चार स्थानों पर नदियों के किनारे कुंभ लगता है हरिद्वार में गंगा नदी के तट पर,प्रयागराज गंगा यमुना और सरस्वती के पावन त्रिवेणी के तट पर,नासिक में गोदावरी के किनारे, उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर प्रत्येक चार वर्षों के अंतराल पर ।तीर्थराज प्रयाग ऐसा स्थान है जहाँ प्रतिवर्ष माघ मेला भी लगता है ।माघ मेले में या कुंभ मेले में बहुत से गृहस्थ पौष पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक कल्पवास करते हैं।

कुंभ मेला सामाजिक समरसता एवं एकता का प्रतीक है।

कल्पवास के समय कल्पवासी तीन बार गंगा स्नान, पूजन,एक समय भोजन,जमीन पर रात्रि विश्राम पूजा जप तप अनुष्ठान कर कठोर साधना करते हैं। कल्पवास व्यक्ति के अंदर बहुत सी अलौकिक उर्जा शांति एवं सदमार्ग हेतु प्रेरित करता है। हर किसी को अलग अलग अनुभूति होति है लेकिन यह तय मानिए जो एकबार आ जाता है वह बार बार आता है सेवा और साधना के लिए इससे अच्छी भूमि धरती पर कहीं और नहीं है।

भारत एक आध्यात्मिक राष्ट्र है यह ऋषियों मनीषियों एवं पूज्य संतो का देश है ।हमारे देश में आद्यगुरु शंकराचार्य नें देश की एकता अखंडता की रक्षा हेतु चार पीठ एवं अखाड़े बनाए थे वह परंपरा आज भी है कुंभ मेलें के दौरान दिखाई देता है चारों शंकराचार्य देश के तेरहों अखाड़े कुंभ मेले में आते हैं।

विधि विधान से कुंभ में उनका प्रवेश होता है जिसे छावनी प्रवेश कहते हैं,स्नान पर्वों पर,पूज्य जगतगुरु शंकराचार्य भगवान एवं प्रत्येक अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर महामंडलेश्वर और नागा सन्यासी अलग अलग टाइम स्लॉट में जाकर राजशी स्नान करते हैं इन अखाड़ों की भी विशेष संस्कृति और परंपराएं हैं हर अखाड़े का अलग ध्वज,उसमें लगीं मढ़ियां पूरी व्यवस्था संचालन हेतु नागा संन्यासियों को कोतवाल आदि के दायित्व समष्टि भोज आपस में तालमेल आदि अब तो अखाड़ा परिषद बन गया है ।सभी अखाड़े खाक चौक क्षेत्र में अपने भव्य शिविर लगाने का काम करते है सेवा के लिए साधु सेवा, अन्न क्षेत्र,कथाओं आदि का विविध आयोजन करते हैं।

अखाड़ों के द्वारा इस बार सभी जातियों से महामंडलेश्वर बनाने का प्रस्ताव हुआ है वैसे संतो की कोई जाति नहीं होती है।

किन्तु वर्तमान जातीय बहस को मुद्दा बनाने वाले लोगों के लिए यह जरूरी है कि वे जान लें हर बार की तरह इस बार भी 370 से अधिक दलित एवं पिछड़े संतों को महांत, पीठाधीश्वर एवं महामण्डलेश्वर जैसी प्रतिष्ठित जिम्मेदारियाँ सौंपी जायेगी और यह कार्य जूना अखाड़ा के पीठाधीश्वर महेन्द्रानन्द गिरी जी द्वारा किया जायेगा।

हिन्दू समाज में तरह–तरह की कुरीतियाँ रहीं है। समय–समय पर संतों द्वारा इन कुरीतियों पर प्रहार भी किया गया है। तुकाराम, रैदास, सूरदास, रामानन्द, कबीर, चैतन्य स्वामी आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण है।

समाजवादी डॉ0 लोहिया से लेकर मार्क्सवादी शिव कुमार मिश्र तक इस बात को स्वीकार करते हैं, कि कुंभ न सिर्फ सनातन संस्कृति को संरक्षित करता है बल्कि देश की एकता व अखण्डता को भी संरक्षित रखता है। पूरब से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक के लोग बिना किसी भेदभाव के इस समागम का हिस्सा बनते हैं। यही वो तत्व है जो देश को एक सूत्र में पिरोकर रखता है।

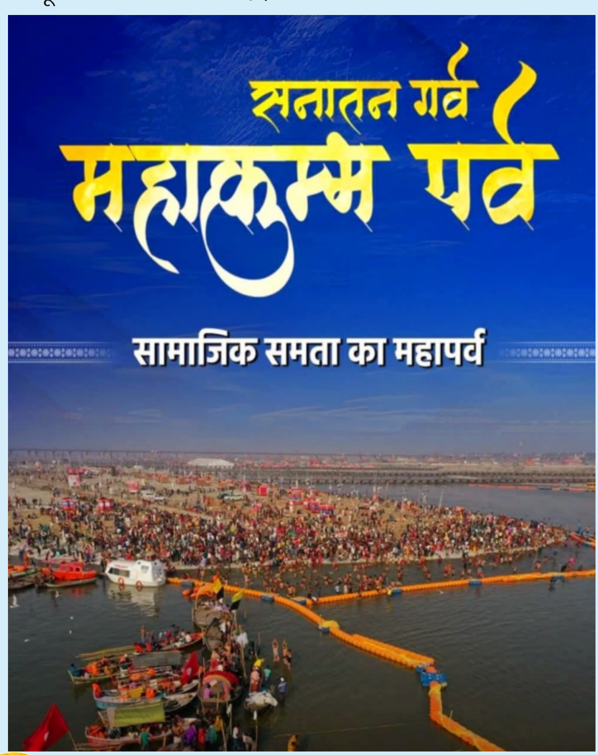

भारतीय संस्कृति, समरसता, आध्यात्म का संगमः महाकुम्भ

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी मौलिक चेतना होती है, जो अपने संस्कृति एवं मूल्यों से सदा जीवंत बनी रहती है। वह संस्कृति ही उस राष्ट्र क्षेत्र में निवास करने वाले जनमानस के संस्कार और सभ्यता को निर्धारित करती है। दुनिया के श्रेष्ठतम् एवं प्राचीनतम संस्कृतियों में अनोखी हमारी भारतीय संस्कृति, जिसका द्योतक सनातन है। सनातन जितना प्राचीन है उतना ही अर्वाचीन भी है, जो हमारी युगीन शाश्वत सांस्कृतिक चेतना की मौलिकता को अलोकित कर उसके सातत्य को संरक्षित एवं संवर्धित करते हुए सतत् गतिमान है। कालांतर में विदेशी आक्रान्ताओं के हमले एवं मुगलों के आतंक तथा धर्मपरिवर्तन की कठोर नीति ने हमारी संस्कृति एवं सभ्यता की आभा को धूमिल नहीं कर सकी क्योंकि हमारे संस्कृति का प्राण तत्व आध्यात्म है, जहाँ त्याग है, तप है, संयम है, अनुशासन है एवं लोक कल्याण की श्रेष्ठ भावना का समावेश है हम अक्सर अपने मंदिरो में आरती आदि के पश्चात् उद्घोष करते है," विश्व का कल्याण हो " ऐसे अमूल्य विचार एवं सकारात्मक भावना केवल भारतीय सनातन संस्कृति में ही सन्निहित है, जिसकी मूल धारणा ही वसुधैव कुटुंम्बक से सम्पोषित होती है। भारतीय सनातन संस्कृति अपने क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित तीर्थ, पर्व एवं त्योहारों से संबद्ध है, यहीं इसकी सजीवता का सशक्त संबल एवं प्राणवायु है। शास्त्रों में तीर्थ से तात्पर्य दैवीय सत्ता के अधीनस्थ पूज्य पवित्र भूमि जहाँ मनुष्यता में तम् एवं रज का उन्मूलन हो सत्व का प्रवाह होता है, और वह स्वतः स्वयं को साक्षात् धर्म के सन्निकट महसूस करता है।

इन्हीं मानवीय मूल्यों एवं आदर्शो से सिंचित सशक्त संकल्प का प्रस्फुटन पर्व सनातन धर्म के सार्वभौमिक अनुष्ठान तीर्थ महाकुम्भ का आयोजन आगामी 13 जनवरी पौष पूर्णिमा से उत्तर प्रदेश की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक राजधानी माँ गंगा यमुना एवं सरस्वती के पवन संगम पर प्रथम अमृत स्नान (पूर्व में शाही स्नान) से प्रारम्भ हो रहा है।

यह वर्तमान विश्व में व्याप्त भौतिकता एवं तकनीकी सुलभता की आपाधापी में आध्यात्मिकता से परिपूर्ण धरती पर जनसमुदाय का सर्वाधिक विशाल संगम है। जहाँ श्रद्धा,

आस्था एवं विश्वास की सदानीरा माँ गंगा, यमुना एवं सरस्वती के जल आचमन से वर्तमान पीढ़ी अपने पूज्य पूर्वजों को कृतज्ञता एवं प्रणाम कर भावी पीढ़ी की मंगलकामना करेगी। धार्मिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का यह महापर्व राष्ट्रीय एकता सद्भाव एवं सामाजिक समरसता के दिव्य भाव के अनुपम सोपान की संसिद्धि है। जहाँ विराट संस्कृति की विविधता के एकता का दर्शन होगा जिसकी भाषा भूषा भजन में भिन्नता तो है पर मूल में एकात्मता का भाव है। वह है श्री हरि नारायण के प्रति अनुराग एवं आसक्ति। महाभारत के वनपर्व में प्रयाग की महिमा इन पक्तियों से उद्धरित है,
"जहाँ स्वयं ब्रह्मा आते हैं, जहाँ देवगण और ऋषि–मुनि एकत्रित होते हैं, वह स्थान प्रयाग है, जो सभी तीर्थो में सबसे पवित्र माना गया है।"

भारत की कालजयी एवं मृत्युंजयी संस्कृति की अभिव्यक्ति इस पर्व में गिरी, कंदरा, मठ, मंदिर और आश्रमों में रहने वाले लाखों पूज्य संतो एवं संन्यासियों के दर्शन व सान्निध्य त्रिविध तापों का शमन करने वाला होता है।

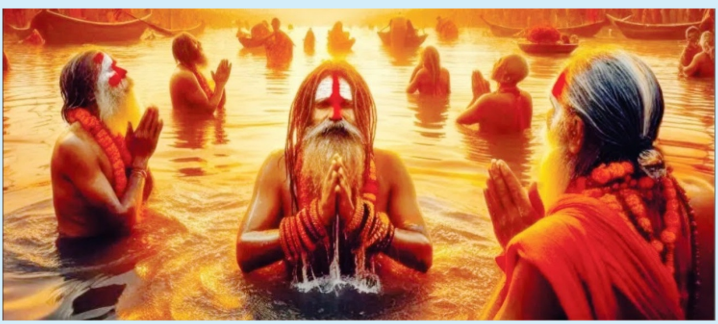

शास्त्रों एवं पौराणिक कथाओं में इस महापर्व की महिमा सतयुग में देवताओं एवं दैत्यों के बीच अमृत प्राप्ति की अभिलाषा हेतु हुए युद्ध से है, जब देवता और दैत्य अमृत की अभिलाषा से समुद्र मंथन किये, तो 14 रत्न प्राप्ति श्रृंखला के अंत में भगवान धन्वंतरि जी अमृत कलश लेकर प्रकट हुए, अमृत पान हेतु देव और दानव में परस्पर द्वन्द्व हुए और देवताओं के संकेत से देवराज इंद्र पुत्र जयंत अमृत कलश लेकर आकाशमार्ग से देवलोक की ओर चले, तब गुरू शुक्राचार्य के कहने पर दैत्यों ने जयंत का पीछा किया, और उसी समय छीनाझपटी में अमृत की बूंदे कलश से छलकर तीर्थराज प्रयाग, हरिद्वार, नाशिक एवं सिंहस्थ भूमि उज्जैन में गिरि, तभी से इन स्थानों पर कुम्भ, अर्धकुम्भ, एवं महाकुम्भ का शुभारम्भ हुआ। अमृत पान हेतु यह देव – दानव युद्ध 12 दिनों तक परस्पर चला, इसलिए यह देवताओं के 12 दिन मनुष्य के 12 वर्ष के तुल्य होते है। उसी समय श्री हरि परम् सुंदरी मनमोहन रूप में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए जिससे समस्त देव और दानव रूप मोहित हो गए और भगवान सर्वप्रथम देवताओं को अमृत पान कराये। देवताओं के मध्य देवभेष में बैठे राहु नाम के दानव को भगवान ने चक्र से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया किन्तु अमृत पान करने से उसकी मृत्यु नहीं हुई बल्कि वह दो भागों में बट गया राहु और केतु। जिस समय जयंत अमृत कलश लेकर आकाश मार्ग से देवलोक जा रहें थे, उस समय चंद्र – सूर्य ने उनकी रक्षा की थी, इसलिए वर्तमान राशियों पर चंद्र – सूर्यादिक ग्रह जब आते है तब कुम्भ का संयोग बनता है, जब देवगुरू बृहस्पति वृषभ राशि में और ग्रहों के राजा मकर राशि में होते हैं तो महाकुम्भ का आयोजन तीर्थराज प्रयाग में किया जाता है।

यह तो इस पर्व की पौराणिक महत्ता है किन्तु वर्तमान में इसकी प्रसंगिकता अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं मनावीय मूल्यों के स्थापत्य से संबंधित है , यह ऐसा मेला है जहाँ वे संत मिलते है, जिन्हे कुछ नहीं चाहिए और वे सांसारिक लोग भी मिलते है जिन्हें बहुत कुछ चाहिए अर्थात् इस महासंगम में पूज्य ऋषि एवं तपस्वी अपने अर्जित पुण्य सब पर बिखेर देते है। यह मेला मात्र निज जीवन की उन्नति ही नहीं अपितु समस्त प्राणी मात्र के प्रति दया भाव एवं अपेक्षित सहयोग की भावना को विस्तार देता है। पौष पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक 45 दिवसीय इस वैश्विक धर्म आयोजन में समस्त सनातन धर्मावलम्बी श्रद्धालु तीर्थ स्नान एवं कल्पवास हेतु पधारेंगे अद्भुत संयोग है कि जिसके सयोजन की सुलभता एवं भव्य आयोजन की महत्वपूर्ण भूमिका में स्वयं एक संत के रूप में नियति द्वारा निर्धारित हुई है, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधिश्वर श्री योगी आदित्यनाथ इस पूरे आयोजन के भागीरथ है जो प्रत्येक व्यवस्था के प्रति पूरी तरह संवेदनशील एवं प्रतिबद्ध है, वह स्वयं पूज्य संतो के सान्निध्य में महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेते है जिससे किसी भी प्रकार की अव्यवस्था एवं असहजता की सम्भवना न हों।

यह मेला दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन माना जाता है, यूनेस्को द्वारा इसे "मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर" का दर्जा भी दिया गया है। इसलिए इसकी सकुशल सम्पन्नता एवं लोकमंगल की भावना के साथ हम सभी श्रद्धा एवं आस्था के इस ज्वार में अपने जीवन के पुण्यांश में वृद्धि हेतु इस महान उत्सव तथा आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को सजोने हेतु महाकुम्भ में सहभागिता सुनिश्चित कर माँ गंगा यमुना एवं सरस्वती के पावन संगम पर डुबकी लगाए।

सर्व सिद्धि प्रदः कुंभः..........!

नाथ परम्परा में ''खिचड़ी''

गुरूगोरखनाथ की तपस्थली पर मकर संक्रांति से शुरू होकर माह भर चलने वाला खिचड़ी मेला बेमिसाल है। पूरी प्रकृति को ऊर्जस्वित करने वाले सूर्यदेव के उत्तरायण होने पर खिचड़ी चढ़ाने की त्रेतायुगीन यह अनूठी परंपरा पूरी तरह लोक आस्था को समर्पित है।

लोक आस्था का उफान देखना हो तो मकर संक्रांति पर चले आइए गोरखपुर के विश्व प्रसिद्ध गोरखनाथ मंदिर। यहां मकर संक्रांति से शुरू होकर माह भर चलने वाला खिचड़ी मेला बेमिसाल है। यह मेला श्रद्धा, मनोरंजन और रोजगार का संगम भी है। पूरी प्रकृति को ऊर्जस्वित करने वाले सूर्यदेव के उत्तरायण होने पर खिचड़ी चढ़ाने की त्रेतायुगीन यह अनूठी परंपरा पूरी तरह लोक को समर्पित है।

खिचड़ी चढ़ाने का परंपरा

गोरखनाथ मंदिर में खिचड़ी के रूप में चढ़ाए जाने वाला अन्न वर्षभर जरूरतमंदों में वितरित किया जाता है। मंदिर के अन्न क्षेत्र में कभी भी कोई जरूरतमंद पहुंचा, खाली हाथ नहीं लौटा है। ठीक वैसे ही जैसे बाबा गोरखनाथ को खिचड़ी चढ़ाकर मन्नत मांगने वाला कभी निराश नहीं होता।

गोरखनाथ मंदिर में खिचड़ी चढ़ाने की परंपरा त्रेतायुगीन मानी जाती है. मान्यता है कि आदि योगी गुरु गोरखनाथ एक बार हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित मां ज्वाला देवी के दरबार मे पहुंचे। मां ने उनके भोजन का प्रबंध किया। कई प्रकार के व्यंजन देख बाबा ने कहा कि वह तो योगी हैं और भिक्षा में प्राप्त चीजों को ही भोजन रूप में ग्रहण करते हैं।

उन्होंने मां ज्वाला देवी से पानी गर्म करने का अनुरोध किया और स्वयं भिक्षाटन को निकल गए। भिक्षा मांगते हुए वह गोरखपुर आ पहुंचे और राप्ती और रोहिन के तट पर जंगलों में बसे इस स्थान पर धूनी रमाकर साधनालीन हो गए। उनका तेज देख तभी से लोग उनके खप्पर में अन्न (चावल, दाल) दान करते रहे। इस दौरान मकर संक्रांति का पर्व आने पर यह परंपरा खिचड़ी पर्व के रूप में परिवर्तित हो गई। तब से बाबा गोरखनाथ को खिचड़ी चढ़ाने का क्रम हर मकर संक्रांति पर अहर्निश जारी है। कहा जाता है कि उधर ज्वाला देवी के दरबार मे बाबा की खिचड़ी पकाने के लिए आज भी पानी उबल रहा है।

मकर संक्रांति के पावन पर्व पर गोरक्ष पीठाधीश्वर नाथ पंथ की विशिष्ट परंपरानुसार शिवावतारी गुरु गोरखनाथ को लोक आस्था की खिचड़ी चढ़ाकर समूचे जनमानस की सुख समृद्धि की मंगलकामना करते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार तथा देश के विभिन्न भागों के साथ–साथ पड़ोसी राष्ट्र नेपाल से भी कुल मिलाकर लाखों की तादाद में श्रद्धालु शिवावतारी बाबा गोरखनाथ को खिचड़ी चढ़ाते हैं।

मकर संक्रांति के दिन भोर में चार बजे सबसे पहले गोरक्षपीठ की तरफ से पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ खिचड़ी चढ़ाकर बाबा को भोग अर्पित करते हैं। तत्पश्चात नेपाल राजपरिवार की ओर से आई खिचड़ी बाबा को चढ़ाई जाती है। इसके बाद मंदिर के कपाट खोल दिए जाते हैं और जनसामान्य की आस्था खिचड़ी के रूप में निवेदित होनी शुरू हो जाती है। खिचड़ी महापर्व को लेकर मंदिर व मेला परिसर सज धजकर तैयार हो रहा है। यहां श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला एक दिन पूर्व ही प्रारम्भ हो जाता है। मंदिर प्रबंधन की तरफ से उनके ठहरने और अन्य सुविधाओं का पूरा इंतज़ाम किया जाता है।

गोरखनाथ मंदिर सामाजिक समरसता का ऐसा केंद्र है जहां जाति, पंथ, महजब की बेड़ियां टूटती नजर आती हैं। इसके परिसर में क्या हिंदू, क्या मुसलमान, सबकी दुकानें हैं। यानी बिना भेदभाव सबकी रोजी रोटी का इंतजाम है। यही नहीं मंदिर परिसर में माहभर से अधिक समय तक लगने वाला खिचड़ी मेला भी जाति–धर्म के बंटवारे से इतर हजारों लोगों की आजीविका का माध्यम बनता है।

मंदिर परिसर में नियमित रोजगार करने वालों से लेकर मेला में दुकान लगाने वालों तक, बड़ी भागीदारी अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों की होती है। उन्होंने कभी कोई भेदभाव नहीं समरसता प्रतीक है यह उत्सव।

मकर संक्रान्ति स्नान : आरोग्य प्रदाता

मकर संक्रांति उल्लास का पर्व है। इसकी परंपरा आरोग्य से भी जुड़ी हुई है। मकर संक्रांति पर खाया जाने वाला प्रसाद न सिर्फ आरोग्यवर्धक होता है बल्कि इम्यूनिटी भी देता है। पतंगबाजी से उत्साह का संचार होता है। सूर्य के उत्तरायण होने के इस पर्व से कई साइंटिफिक फैक्ट्स जुड़े हुए हैं।

मकर संक्रांति बदलाव का पर्व माना जाता है। इस दिन सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण होते हैं। इस वजह से शीत ऋतु का संक्रमण काल धीरे–धीरे कम होने लगता है। इस पर्व पर स्नान–दान की परंपरा पूरे भारतवर्ष में निभाई जाती है। इस दिन के लिए विशेष आहार भी तय है। खिचड़ी, चूड़ा–दही, तिलकुट, तिल के लड्डू इत्यादि खाए जाते हैं, जो हमारे इम्यून सिस्टम और स्वास्थ्य लाभ से जुड़ा हुआ आहार है। इन सब बातों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो इनका काफी महत्व है। आइये जानते हैं इस पर्व का वैज्ञानिक महत्व।

यह पर्व ऐसे समय में आता है जब शीत ऋतु अपने परवान पर होती है। सर्द हवाएं चलती हैं। शीतलहर के प्रकोप से जनजीवन अस्त–व्यस्त रहता है, जिससे कई तरह की संक्रामक बीमारियां होती हैं।

ऐसे में इम्यून सिस्टम को मजबूत करने के लिए पौष्टिक आहार जरूरी है। मकर संक्रांति के दिन प्रसाद के रूप में पौष्टिक आहार, जैसे दही, तिल की बनी सामग्री इत्यादि का सेवन करते हैं। इससे हमारा इम्यून सिस्टम मजबूत होता है।

मकर संक्रांति के दिन ब्रह्म मुहूर्त में जागना चाहिए। इस दिन पवित्र नदियों में स्नान और उसके पश्चात दान का बड़ा महत्व है। इसे आयुर्वेद के दृष्टिकोण से उत्तम माना जाता है। ब्रह्म मुहूर्त में जागना और नदियों के पवित्र जल में स्नान करना हमारे स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से काफी लाभकारी माना जाता है। इसके पश्चात लोग चूड़ा दही, तिल और खिचड़ी का प्रसाद ग्रहण करते हैं। आयुर्वेद के अनुसार ऐसा करना हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। वह भी ऐसे समय में जब सूर्य उत्तरायण हो रहे होते हैं।

मकर संक्रांति के दिन खिचड़ी खाने की परंपरा रही है। लोग मकर संक्रांति का पर्व मनाते हुए खिचड़ी को प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। खिचड़ी को एक सुपाच्य भोजन माना जाता है। इसमें हर तरह के पोषक तत्व मिलते हैं। शीत ऋतु में हमारा इम्यून सिस्टम कमजोर रहता है। संक्रामक बीमारियों का डर रहता है। ऐसे में खिचड़ी को प्रसाद के रूप में ग्रहण करने से कई सारे पोषक तत्व प्राप्त हो जाते हैं, जो हमारे इम्यून सिस्टम को स्ट्रांग बनाते हैं।

सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने पर मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है। इस दिन सूर्य उत्तरायण होते हैं। जिसके बाद से धीरे–धीरे दिन लंबे और रातें छोटी होने का क्रम शुरू हो जाता है। दिन के लंबे होने के बाद हमारी दिनचर्या भी इसके मुताबिक ढालनी जरूरी हो जाती है। इसलिए मकर संक्रांति हमें कुछ बदलावों के अनुसार खुद को ढालने की आदत सीखाता है। इस दिन से हमारी दिनचर्या में ऐसे आहार शामिल हो जाते हैं जो हमें अंदरुनी रूप से मजबूत बनाते हैं।

मकर संक्रांति के मौके पर प्रसाद के रूप में ऐसी चीज खाने की परंपरा है जो जिनकी तासीर गर्म होती है। इस दौरान हम शीत ऋतु के प्रभाव से जूझते रहते हैं। ऐसी अवस्था में गर्म तासीर की चीजों को अपने आहार में शामिल करने से हमें अंदर से मजबूती और शारीरिक तौर पर ठंड से लड़ने की शक्ति मिलती है। इसलिए इस दिन गर्म तासीर वाले तिल व अन्य चीजों का सेवन किया जाता है। यह पुरातन काल से हमारी परंपरा में विद्यमान है।

मकर संक्रांति के दिन से सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं। सूर्य के उत्तरायण होने के बाद वातावरण में गर्मी धीरे–धीरे बढ़ती है। इससे ठंड का प्रभाव आहिस्ता–आहिस्ता खत्म होने लगता है। नदियों व तालाबों में जल वाष्पन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। उत्तरायण हुए सूर्य का ताप ठंड के असर को काम करता है। इस ताप से शीत का प्रभाव जाता रहता है।

इस दिन तिल और गुड़ का सेवन किया जाता है। तिल और गुड़ का सेवन आयुर्वेद के अनुसार स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभकारी माना जाता है। आयुर्वेद में गुड़ के औषधीय गुणों का वर्णन है। इसलिए इस दिन तिल के साथ गुड़ का सेवन करने से हमें शीत ऋतु जनित कई बीमारियों में लाभ मिलता है और हमारा इम्यून सिस्टम मजबूत होता है। इससे हम उन बीमारियों को लड़ने में सक्षम हो पाते हैं।

मकर संक्रांति के पर्व को पतंग उड़ाने की परंपरा से भी जोड़ा गया है। इसके पीछे वैज्ञानिक महत्व यह बताया जाता है कि पतंग उड़ाने के दौरान हमारा शरीर एक्टिव रहता है। सूर्य की रोशनी में चार–पांच घंटे हम गुजरते हैं। इससे सूर्य की एनर्जी हासिल होती है। पतंगबाजी के उत्साहपूर्ण माहौल में हमारे शरीर में इस स्फूर्ति और उल्लास का संचार होता है। इससे मानसिक तौर पर भी फायदा मिलता है।

राष्ट्रधर्म रक्षक 'अखाड़े'

अखाड़ा प्राचीनकाल में भारत के साधु–सन्तों का एक ऐसा समूह होता था जो संकट के समय में राजधर्म के विरुद्ध परिस्थितयों में, राष्ट्र रक्षा और धर्म रक्षा के लिए कार्य करता था। इस प्रकार के संकट से राष्ट्र और धर्म दोनो की रक्षा के लिए अखाड़े के साधु अपनी अस्त्र विद्या का उपयोग भी किया करते थे। इसी लिए अखाड़े के अन्तर्गत पहलवानों के लिए एक मैदान होता था जिसमें सभी अखाड़े के सदस्य शरीर को सुदृढ़ रखने और संकट के समय में सुरक्षा की दृष्टि से खुद को एक से बढ़कर एक दाँव–पेच का अभ्यास किया करते थे। साथ ही अस्त्र विद्या भी सीखते थे। वर्तमान समय में भी अखाड़े होते हैं जो आज भी राष्ट्र को संकट में आने पर ज्ञान आदि से लोगों को सही राह पर लाने के लिए तत्पर रहते हैं।

भारत के सबसे विशाल मेले कुम्भ में ये अखाड़े पूरी तन्मयता से आज भी सम्मलित होते हैं और शाही स्नान किया करते है। इन अखाड़ों का एक अध्यक्ष होता जिसका चुनाव एक जटिल प्रक्रिया के अधीन होता है।

कुल 14 अखाड़े हैं–

शिव संन्यासी सम्प्रदाय के 7 अखाड़े– 1. श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी– दारागंज प्रयाग, उ0प्र0 2. श्री पंच अटल अखाड़ा– चैक हनुमान, वाराणसी, उ0प्र0 3. श्री पंचायती अखाड़ा निरंजनी– दारागंज, प्रयाग, उ0प्र0 4. श्री तपोनिधि आनन्द अखाड़ा पंचायती– त्र्म्केश्वर, नासिक (महाराष्ट्र) 5. श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा– बाबा हनुमान घाट, वाराणसी, उ0प्र0 6. श्री पंचदशनाम आह्वान अखाड़ा– दशस्मेव घाट, वाराणसी, उ0प्र0 7. श्री पंचदशनाम पंच अग्नि अखाड़ा– गिरीनगर, भवनाथ, जूनागढ़ (गुजरात) **किन्नर अखाड़ा**

बैरागी वैष्णव सम्प्रदाय के 3 अखाड़े

8. श्री दिगम्बर अनी अखाड़ा– शामलाजी खाकचौक मन्दिर, सांभर कांथा (गुजरात) 9. श्री निर्वानी आनी अखाड़ा– हनुमान गादी, अयोध्या (उ0प्र0) 10. श्री पंच निर्मोही अनी अखाड़ा– धीर समीर मन्दिर बंसीवट, वृन्दावन, मथुरा (उ0प्र0)

उदासीन संप्रदाय के 4 अखाड़े

11. श्री पंचायती बड़ा उदासीन अखाड़ा– कृष्णनगर, कीटगंज, प्रयाग (उत्तर प्रदेश) 12. श्री पंचायती अखाड़ा नया उदासीन– कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) 13. श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा– कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) 14. अन्तरराष्ट्रीय जगतगुरु दसनाम गुसांई गोस्वामी एकता अखाड़ा परिषद, दिल्ली (गृहस्थ दसनामी गोस्वामी गुसांई का सबसे बड़ा, सामाजिक अखाड़ा)

"पारम्परिक" अखाड़ा के विन्यास और निर्माण की बारीकी से एक मुक्केबाजी की अंगूठी होती है, हालाँकि कुश्ती की अंगूठी में तीन अंगूठी रस्सियां होती हैं, जो मानक मुक्केबाजी रिंग से भी कम होती हैं। (1) इसके अलावा, अंगूठी के रस्सियों को उनके मिडपॉइंट पर एक साथ टिथर नहीं किया जाता है, उन्हें मुक्केबाजी रस्सियों की तुलना में कम तना हुआ है। अधिकांश (यदि सभी नहीं) कुश्ती के छल्ले मुक्केबाजी के छल्ले की तुलना में पैडिंग और सदमे अवशोषित निर्माण के तरीके में अधिक शामिल हैं, हालाँकि यह प्रमोटर की वरीयताओं के अनुसार भिन्न होता है। कुश्ती के छल्ले आम तौर पर एक ऊँचा इस्पात किरण और फोम पैडिंग और एक कैनवास चटाई द्वारा कवर लकड़ी के फलक चरण से बना होते हैं, नीचे के देखने से दर्शकों को रोकने के लिए ऊंचे पक्षों के साथ एक कपड़े स्कर्ट के साथ कवर किया जाता है। अंगूठी के चारों ओर तीन अंगूठी रस्सियां हैं पदोन्नति के आधार पर, इन टुकड़ों का निर्माण अलग है; कुछ लोग, जैसे डब्ल्यूडब्ल्यूई, टेप में लपेटे जाने वाले प्राकृतिक फाइबर रस्सियों का उपयोग करते हैं, दूसरों को रबड़ नली में बँधे हुए इस्पात केबल्स का इस्तेमाल होता है। (2) ये रस्सियों को टर्नबकल्स द्वारा ऊपर रखा गया और तनाव हो गया, जो बदले में, इस्पात बेलनाकार ध्रुवों पर लटका, रिंग पोस्ट अंगूठी में आने वाले टर्नबकल्स की छोरें आमतौर पर भारी संख्या में गद्देदार होती हैं, या तो अमेरिका में, या तीनों के लिए एक बड़े पैड के साथ एक बॉक्सिंग रिंग जैसा, जैसा कि न्यू जापान प्रो–कुश्ती के रूप में है। आम तौर पर आसपास के किनारे के आसपास स्टील के दो सेट (अंगूठी के दोनों तरफ एक) होते हैं जो कुछ पहलवान अंगूठी में प्रवेश करने और बाहर निकलने के लिए उपयोग करते हैं। रिंग के सभी हिस्सों को अक्सर विभिन्न आक्रामक और रक्षात्मक चाल के भाग के रूप में उपयोग किया जाता है।

दिव्य महाकुंभ 2025

भारतीय संस्कृति में नदी - जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण का सन्देश

महाकुंभ 2025 नदी संरक्षण और भारतीय संस्कृति के महत्व को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण आयोजन है। इस आयोजन को भव्य बनाने के लिए योगी आदित्यनाथ सरकार व्यापक इंतजाम कर रही है। आयोजन में कोई कमी नहीं छोडी जा रही है और देश विदेश में सराहना भी हो रही है लेकिन हम इस लेख में पर्यावरण संरक्षण, नदी–जल संरक्षण में इस आयोजन के महत्व की रेखांकित करेंग। इस कार्य में महाकुम्भ बहुत मददगार है।

देश विदेश से आने वाले करोड़ों भक्तों का यह आयोजन न केवल नदी–जल संरक्षण के बारे में जागरूकता फैला रहा है, बल्कि यह हमारी संस्कृति और परंपराओं को भी प्रदर्शित कर रहा है। यह दिव्य आयोजन हमें नदी संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रेरित करने वाला है।वैसे भी महत्व का है, बल्कि यह नदी संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के लिए भी एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करते हुए बड़ा सन्देश देता है।नदियाँ भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। ये न केवल जल के स्रोत हैं, बल्कि ये हमारी संस्कृति, इतिहास और अर्थव्यवस्था का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। लेकिन आजकल नदियों का संरक्षण एक बड़ी चुनौती है। प्रदूषण, अत्यधिक जल दोहन और अन्य मानवीय गतिविधियों के कारण नदियों की सेहत खराब हो रही है। ऐसे में यह महा कुम्भ का यह आयोजन हमें आगे बढ़ कर कुछ करने की प्रेरणा दे रहा है।

पर्यावरण सरंक्षण में महाकुंभ की उपयोगिता उत्तर प्रदेश के प्रयागराज संगम की नगरी में हो रहे इस महाकुंभ जैसे विशाल आयोजन नदी व जल संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण

अपने देश भारत में नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों को पूजने का प्रचलन बहुत पुराना है। यह पूजन न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व का है, बल्कि यह पर्यावरण की दृष्टि से भी बहुत उपयोगी है। पूरी दुनिया को इस आयोजन से जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण की सीख लेने की जरुरत है।

आप सब जानते ही हैं कि हर 12 वर्षों में आयोजित किया जाने वाला महाकुंभ भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह त्योहार न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक संदेश वाहक बन कर आते हैं। यह आयोजन न केवल हमारे तीर्थों, नदियों का संरक्षण के बारे में जागरूकता फैलाता है, बल्कि यह नदी संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए भी प्रेरित करता है। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि महाकुंभ के आयोजन को भव्य दिव्य बनाने में जुटी योगी सरकार द्वारा महाकुंभ 2025 में नदी संरक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया जारहा है। इस आयोजन में नदी संरक्षण के बारे में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे. इसके अलावाइस आयोजन में नदी संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाने के

लिए भी प्रेरित किया जा रहा है। देश दुनिया को इस दिव्य आयोजन का निमंत्रण देना इसी भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा है।

भारतीय संस्कृति में महाकुंभ का महत्व आप भली प्रकार से जानते ही हैं कि महाकुंभ भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रयागराज शहर में होने वाला यह आयोजन न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व का है, बल्कि यह हमारी संस्कृति और परंपराओं का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। महाकुंभ में देश विदेश से करोड़ों लोग आकर संगम में स्नान करते हैं और वे इस आयोजन में होने वाले विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम में सम्मलित हो रहे हैं। इससे न केवल हमारी संस्कृति और परंपराओं को प्रदर्शित करता है, बल्कि यह हमें अपनी जड़ों से जुड़ने का भी सुअवसर प्रदान करता है।

पर्यावरण की दृष्टि से नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों का महत्व : भारतीय संस्कृति में पवित्र नदियों, गाँवों के तालाबों और प्राचीन कुंडों का पर्यावरण की दृष्टि से बहुत महत्व है। ये जल स्रोत न केवल जल की आपूर्ति करते हैं, बल्कि ये जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने, जल प्रदूषण को कम करने और जैव विविधता को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आप जानते ही हैं कि नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों को पूजने वसरंक्षणका प्रचलन भारत में बहुत पुराना है। यह पूजना न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व का है, बल्कि यह पर्यावरण की दृष्टि से भी बहुत उपयोगी है। नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों को पूजने से जल संरक्षण, जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करना, जैव विविधता को बनाए रखना और जल प्रदूषण को कम करने जैसे कई पर्यावरणीय लाभ होते हैं। इसलिए, हमें नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों को पूजने/सरंक्षित करने के महत्व को समझना चाहिए और पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

जानिये क्या होते हैं नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों को पूजने से पर्यावरणीय लाभ :

1. जल संरक्षणः नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों को पूजने से लोगों में जल संरक्षण की भावना जागृत होती है। इससे लोग जल का संचयन करने और जल प्रदूषण को कम करने के लिए प्रेरित होते हैं।

2. जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करनाः नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों को पूजने से लोगों में जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूकता बढ़ती है। इससे लोग जलवायु परिवर्तन को अनुकूल करने के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रेरित होते हैं।

3. जैव विविधता को बनाए रखनाः इस आयोजन से लोगों में नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों को पूजने से लोगों में जैव विविधता को बनाए रखने की भावना जागृत होती है। इससे लोग जलीय जीवन को संरक्षित करने और जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए प्रेरित होते हैं।

4. जल प्रदूषण को कम करनाः हमारी परम्परा है कि नदियों, तालाबों और प्राचीन कुंडों को पूजने से लोगों में जल प्रदूषण को कम करने की भावना जागृत होती है। इससे लोग जल प्रदूषण को कम करने के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रेरित होते हैं।

पूज्य योगी सरकार ने महाकुंभ के दौरान पर्यावरण के लिए कई कदम उठाए हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कदम हैं:

- **स्वच्छता अभियानः** महाकुंभ के दौरानप्रशासन ने स्वच्छता अभियान चलाया है, जिसमें श्रद्धालुओं को स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- **प्लास्टिक मुक्त जोनः** आयोजकों ने महाकुंभ के क्षेत्र को प्लास्टिक मुक्त जोन घोषित किया है, जिससे प्लास्टिक कचरे को कम किया जा सके।
- **जल संरक्षणः** महाकुंभ के दौरान, आयोजकों ने जल संरक्षण के लिए कई कदम उठाए हैं। इसमें जल संचयन प्रणाली की स्थापना, जल के दुरुपयोग को रोकने के लिए जागरूकता अभियान चलाना और जल स्रोतों की सुरक्षा करना शामिल है।
- **वृक्षारोपणः** महाकुंभ के दौरान, आयोजकों ने वृक्षारोपण अभियान चलाया है, जिससे पर्यावरण को हरा-भरा बनाया जा सके। यह अभियान न केवल पर्यावरण को

स्वच्छ बनाता है, बल्कि यह जलवायु परिवर्तन को भी नियंत्रित करने में मददगार है।

ऐसे में आसानी से समझा जा सकता है कि महाकुंभ के आयोजन से पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों का अधिक बल मिला है बलिक इससे लोग भारतीय संस्कृति के अनुरूप पर्यावरण सरंक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे। साथ ही सरकारी स्तर पर महाकुंभ के पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों से यह स्पष्ट होता है कि महाकुंभके आयोजक को भव्य दिव्य बनाने में जुटी योगी सरकार पर्यावरण संरक्षण के प्रति गंभीर हैं और इसके लिए कार्यरत हैं।

नदी और जल स्रोतों के संरक्षण के लिए जरुरी सुझाव

1. नदी और जल स्रोतों का सर्वेक्षण: सरकार नदी और जल स्रोतों का सर्वेक्षण कर सकती है, जिससे उनकी स्थिति और आवश्यकताओं को समझा जा सके।

2. नदी और जल स्रोतों का संरक्षण: सरकार नदी और जल स्रोतों का संरक्षण करने के लिए योजनाएं बना सकती है, जैसे कि नदी के किनारे पेड़ लगाना और जल स्रोतों को साफ रखना।

3. नदी और जल स्रोतों के प्रदूषण को कम करना: सरकार नदी और जल स्रोतों के प्रदूषण को कम करने के लिए कठोर कदम उठा सकती है, जैसे कि प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर कठोर जुर्माना लगाना।

4. नदी और जल स्रोतों के लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण: सरकार नदी और जल स्रोतों के लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण कर सकती है, जैसे कि जलाशय, नहरें और पाइपलाइनें।

आम भारतीय का संकल्प

1. नदी तालाबों के प्रदूषण को कम करने का संकल्प: भारतीय लोगों को नदी तालाबों के प्रदूषण को कम करने का संकल्प लेना चाहिए। इसके लिए वे अपने दैनिक जीवन में कुछ बदलाव कर सकते हैं, जैसे कि प्लास्टिक का कम उपयोग करना और कूड़ा–कचरा सही तरीके से निपटाना।

2. नदी तालाबों के संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने का संकल्प: भारतीय लोगों को नदी तालाबों के संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने का संकल्प लेना चाहिए। इसके लिए वे अपने समुदाय में जागरूकता अभियान चला सकते हैं और लोगों को नदी तालाबों के महत्व के बारे में बता सकते हैं।

3. नदी तालाबों के संरक्षण के लिए सामुदायिक भागीदारी का संकल्प: भारतीय लोगों को नदी तालाबों के संरक्षण के लिए सामुदायिक भागीदारी का संकल्प लेना चाहिए। इसके लिए वे अपने समुदाय में सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं और लोगों को नदी तालाबों के संरक्षण में शामिल होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

4. नदी तालाबों के संरक्षण के लिए सरकारी नीतियों का समर्थन करने का संकल्प: भारतीय लोगों को नदी तालाबों के संरक्षण के लिए सरकारी नीतियों का समर्थन करने का संकल्प लेना चाहिए। इसके लिए वे अपने स्थानीय नेताओं से संपर्क कर सकते हैं और उन्हें नदी तालाबों के संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

इन संकल्पों को पूरा करने के लिएलोगों को निम्न कदम उठाने चाहिए:

1. जागरूकता अभियान चलाना: भारतीय लोगों को नदी तालाबों के संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। इसके लिए वे अपने समुदाय में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं और लोगों को नदी तालाबों के महत्व के बारे में बता सकते हैं।

2. सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित करना: भारतीय लोगों को नदी तालाबों के संरक्षण के लिए सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए। इसके लिए वे अपने समुदाय में सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं और लोगों को नदी तालाबों के संरक्षण में शामिल होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

3. सरकारी नीतियों का समर्थन करना: भारतीय लोगों को नदी तालाबों के संरक्षण के लिए सरकारी नीतियों का समर
हर भारतीय की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण महाकुम्भ हमें यह सन्देश देता है कि देश की हर नदी पवित्र है. देश में नदियों और तालाबों का संरक्षण न केवल पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हमारी जीवन शैली के लिए भी आवश्यक है।

आप भी कुछ उपाय नदियों और तालाबों को संरक्षित करने

के लिए कर सकते हैं :

1. जल प्रदूषण को कम करना

वर्तमान में बढ़ता जल प्रदूषण नदियों और तालाबों के लिए एक बड़ा खतरा है। आम व्यक्ति जल प्रदूषण को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय कर सकता है:

- घरेलू कचरे को सही तरीके से निपटाना चाहिए।
- उद्योगों से निकलने वाले प्रदूषित जल को नदियों और तालाबों में नहीं मिलने देना चाहिए।
- वाहनों के धुएं को कम करने के लिए पेड़ लगाना चाहिए।

2. जल संरक्षण

जल संरक्षण नदियों और तालाबों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आम व्यक्ति जल संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय कर सकता है:

- पानी की बचत करने की आदत डालनी चाहिए।
- वर्षा जल का घरों, तालाबों में संचयन करना चाहिए। यह पूरी तरह से प्राकृतिक उपाय है।
- पानी के उपयोग को कम करने के लिए पानी के संचयन के लिए पाइपलाइनों का उपयोग करना चाहिए।

3. वनस्पति वृक्षारोपण

वनस्पति वृक्षारोपण नदियों और तालाबों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आम व्यक्ति वनस्पति वृक्षारोपण के लिए निम्नलिखित उपाय कर सकता है:

- फलदार और छायादारपेड़ लगाने के साथ उनकी पौधों की देखभाल करनी चाहिए।
- वनस्पति वृक्षारोपण के लिए समुदाय को प्रेरित करना चाहिए।

4. समाज को नदियों और तालाबों के महत्व के बारे में बताना चाहिए:

- समाज को जल प्रदूषण और जल संरक्षण के बारे में जागरूक करना चाहिए।
- समाज को वनस्पति वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करना चाहिए।

5. सरकारी नीतियों का समर्थन करना

- सरकारी नीतियों का समर्थन करने के लिए समाज को जागरूक / प्रेरित करना चाहिए।
- सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन की निगरानी करनी चाहिए।

नदियों और तालाबों के संरक्षण के लिएजरुरी हैं ये कदम:

1. नदियों और तालाबों के प्रदूषण को कम करने के लिए कठोर कदम उठाना: सरकार को नदियों और तालाबों के प्रदूषण को कम करने के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए, जैसे कि प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर कठोर जुर्माना लगाना।

2. नदियों और तालाबों के अवैध निर्माण को रोकने के लिए कठोर कदम उठाना: सरकार को नदियों और तालाबों के अवैध निर्माण को रोकने के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए, जैसे कि अवैध निर्माण को तोड़ने के लिए कठोर कार्रवाई करना।

3. नदियों और तालाबों के संरक्षण के लिए पर्याप्त धन की व्यवस्था करना: सरकार को नदियों और तालाबों के संरक्षण के लिए पर्याप्त धन की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे इन कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक चलाया जा सके।

4. नदियों और तालाबों के संरक्षण के लिए जन जागरूकता अभियान चलाना: सरकार को नदियों और तालाबों के संरक्षण के लिए जन जागरूकता अभियान चलाना चाहिए।

सरकार जल संरक्षण, नदी और जल स्रोतों को बनाए रखने के लिए कई कदम उठा सकती है। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं:–

पर्यावरण / जल संरक्षण के लिए सुझाव

1. जल संचयन को बढ़ावा देना: सरकार जल संचयन को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं बना सकती है, जैसे कि वर्षा जल संचयन प्रणाली को बढ़ावा देना।

2. जल प्रदूषण को कम करना: सरकार जल प्रदूषण को कम करने के लिए कठोर कदम उठा सकती है, जैसे कि प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर कठोर जुर्माना लगाना।

3. नदी और जल स्रोतों का संरक्षण: सरकार नदी और जल स्रोतों का संरक्षण करने के लिए योजनाएं बना सकती है, जैसे कि नदी के किनारे पेड़ लगाना और जल स्रोतों को साफ रखना।

4. जल संचयन के लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण: सरकार जल संचयन के लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण कर सकती है, जैसे कि जलाशय, नहरें और पाइपलाइनें।

5. जल संरक्षण के लिए जन जागरूकता अभियान: सरकार जल संरक्षण के लिए जन जागरूकता अभियान चला सकती है, जिससे लोग जल संरक्षण के महत्व को समझ सकें।

6. जल संचयन के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग: सरकार जल संचयन के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकती है, जैसे कि जल संचयन के लिए सेंसर और ड्रिप सिंचाई प्रणाली।

7. जल संचयन के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी: सरकार जल संचयन के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा दे सकती है, जिससे जल संचयन के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध हो सकें।

8. जल संचयन के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण: सरकार जल संचयन के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम चला सकती है, जिससे लोग जल संचयन के महत्व और तकनीकों को समझ सकें।

भाजपा संगठन लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप : तावड़े

भारतीय जनता पार्टी संगठन पर्व–2024 चुनाव प्रदेश कार्यशाला राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री बीएल संतोष एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री विनोद तावड़े की उपस्थिति में संपन्न हुई। कार्यशाला में प्रदेश चुनाव अधिकारी डा. महेन्द्र नाथ पाण्डेय, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी, प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री रमापतिराम त्रिपाठी, श्री स्वतंत्र देव सिंह तथा प्रदेश सह चुनाव पर्यवेक्षक श्री संजय भाटिया व श्री संजीव चौरसिया उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री बीएल संतोष ने संगठनात्मक चुनाव के अगले चरण की कार्ययोजना साझा करते हुए कहा कि विचारधारा, संस्कार और संगठनात्मक पद्धति ही लम्बे समय तक संगठन को जीवन्त रखते है। भाजपा मेरा संगठन है इस विचार से जिलो में जाकर वर्तमान से अच्छा संगठन तैयार करने की समझ के साथ रायसुमारी करें। गुणात्मकता के साथ हमारे संगठनात्मक चुनाव के चार चरण पूर्ण हो चुके है। हम अगले चरण के लिए आगे बढ़ रहे हैं। दायित्व परिवर्तन प्रदेश चुनाव अधिकारी डा. महेन्द्र नाथ पाण्डेय ने कहा कि पार्टी के कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ताओं को मंडल अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई है। बड़ी संख्या में पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित वर्ग तथा महिला कार्यकर्ताओं का मंडल अध्यक्ष के रूप में निर्वाचन हुआ है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि भाजपा ने अनुच्छेद 370 की समाप्ति, श्रीराम जन्मभूमि भव्य मंदिर निर्माण, सहित अपने सभी संकल्पो को पूर्ण किया है। यही कारण है कि देश में भाजपा तथा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रति देश के जनमानस का विश्वास अटल है। उन्होंने कहा कि भाजपा तथा भाजपा नेतृत्व के साथ ही भाजपा के एक–एक कार्यकर्ता की छवि भी समाज में राष्ट्रवाद के अग्रदूत के साथ ही संस्कारी तथा सेवाभावी व्यक्ति के रूप में होती है। यही भाजपा के निष्ठावान, अन्त्योदय विचारधारा के संवाहक तथा लोकसेवा में समर्पित कार्यकर्ता विभिन्न दायित्वों पर पहुंचकर संगठन का नेतृत्व करते है। संगठनात्मक चुनाव से

संगठनात्मक व्यवस्था है और इसके अनुरूप ही समय–समय पर प्रत्येक कार्यकर्ता के दायित्वों में परिवर्तन होता है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री विनोद तावड़े ने कहा कि भारत में सिर्फ भाजपा ही एक मात्र राजनैतिक दल है जो संगठन की संरचना भी संगठनात्मक लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप करता है। यही कारण है कि भारतीय जनता पार्टी में बूथ का कार्यकर्ता भी अपनी योग्यता और क्षमता के आधार पर किसी भी शीर्ष पद पर पहुंच सकता है। संगठन पर्व के तहत पार्टी के पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों तथा कार्यकर्ताओं ने अपने परिश्रम से सदस्यता अभियान में कीर्तिमान स्थापित किया है। अब संगठन बूथ समितियों के गठन, मंडल अध्यक्षों के निर्वाचन के साथ जिलाध्यक्ष निर्वाचन की प्रक्रिया की ओर बढ़ा है। आगामी समय में पार्टी के समर्पित कार्यकर्ता जिलाध्यक्षों के रूप में निर्वाचित होगें और संगठन के अबतक के कार्यों को आगे बढ़ाते हुए पार्टी के अभियानों, कार्यक्रमों और विचारधारा को गति प्रदान करेगें। 2027 विधानसभा चुनाव के लिए नेतृत्व चयन का कार्य पूर्ण होगा। केन्द्रीय नेतृत्व के दिशा निर्देश में संगठन चुनाव की प्रक्रिया आगे बढ़ रही है। जो आम सहमति से योग्य कार्यकर्ताओं को नेतृत्व सौंपने का कार्य कर रही है।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि संगठनात्मक लोकतांत्रिक प्रक्रिया का पालन करते हुए आम सहमति के आधार पर जिलाध्यक्ष चुनाव प्रक्रिया को पूर्ण करना है। उन्होंने कहा कि जिलाध्यक्ष की आयु 60 वर्ष से अधिक ना हो यह ध्यान में रखना है। सभी जिला चुनाव अधिकारी अपने जिलो में चुनाव की तिथि तथा स्थान पूर्व में घोषित करेंगे। वैचारिक पृष्ठभूमि के साथ ही दो बार सक्रिय सदस्य रहे भाजपा के दायित्वधारी कार्यकर्ता भाजपा जिलाध्यक्ष के नामांकन के लिए अर्ह होगें। इसके साथ ही संविधान गौरव अभियान के तहत पार्टी के कार्यकर्ता घर–घर संपर्क करेंगे। पार्टी के सभी पदाधिकारी, कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि, स्थानीय नागरिकों के साथ संविधान गौरव अभियान में सम्मिलित होगें।

अटल जी एक समर्पित स्वयंसेवक

रामाशीष

1961 में जब मैं कक्षा 5 में पढ़ता था पहली बार अटल जी को देखा। वे मेरे घर पर आए हुए थे। बाद में कई बार उनके मिलने का अवसर मिला।

अनेक पुराने कार्यकर्ताओं ने बताया कि संभवतः 57 या 58 में श्री गुरुजी का बलरामपुर आगमन हुआ था। तो बौद्धिक के पहिले अटलजी का ही गीत हुआ था। गगन में लहरता है भगवा हमारा स्व रचित कविता का गान किये थे।

1973 में जब मैं प्रचारक हो गया, तब किसी सभा के लिये अटल जी बलरामपुर आये हुए थे। मुझको उनके साथ भोजन करना था। उसी समय कुछ विशेष वार्ता के लिए स्व. राम प्रकाश गुप्त, नानाजी देशमुख, माधव प्रसाद त्रिपाठी, गंगा बक्स सिंह आदि वरिष्ठ कार्यकर्ता भी आए हुए थे। वे सभी लोग भोजन पर साथ ही बैठे थे। परन्तु भोजन के समय अटल जी केवल मुझसे ही बात करते रहे। गट व्यवस्था और गट नायक उनका विकास आदि विषयों पर लगभग एक घंटा मुझसे बात करते रहे। यह घटना जब मैंने उस समय के जिला कार्यवाह को बताया तो उन्होंने कहा कि अटल जी को प्रातः शाखा पर आने के लिए निवेदन करो। उस समय रात्रि में 11:45 बज रहे थे और जाड़े की रात थी। मैंने उससे कहा कि यदि वे तैयार हो गए तो संख्या कैसे करेंगे। तो जिला कार्यवाह जी बोले इसकी चिंता मत करो, केवल प्रार्थना करने वाले की चिंता कर लेना।

मैं गया अटल जी से कहा कि यहां के जिलाकार्यवाह जी चाह रहे हैं की कल प्रातः आप शाखा पर रहे। उन्होंने का ठीक है, रहूंगा। अब रात्रि भर सूचना होती रही। वहाँ के कार्यालय में एक हाल है। उसी को रात्रि में ही व्यवस्थित किया गया। प्रातः अटल जी समय पर आ गए। उनका एक उद्बोधन भी हुआ। लेकिन विकिर के पश्चात एक विशेष दृष्य देखने को मिला। स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्ता जो अटल जी को अपना चेहरा दिखाने और नमस्कार करने के लिए लालायित रहते थे। आश्चर्य ,उनमें से अनेक बिना उनको नमस्कार किए ही चुपचाप निकल गए। कारण यह था की अटलजी सफेद कमीज और खाकी निक्कर में थे, परंतु स्थानीय कार्यकर्ता धोती कुर्ता या पजामा कुर्ता में थे। इसलिए उनको अटल जी सामने आने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने अटल जी को जब यह हंसते हुए बताया तो उन्होंने कहा कि मेरी अटैची मैं हमेशा निकर कमीज रखा रहता है।

एक बार नागपुर के प्रतिनिधि सभा में प्रातः काल दो व्यक्ति निकर पहने मैदान में टहल रहे थे, सभी ने एक को पहचाना वह माननीय गोखले जी पुराने प्रचारक थे। दूसरा कौन है जब घूमते–घूमते वह लोग पास में आये तो दिखाई पड़ा अटल जी ही थे। 1985 में कानपुर में द्वितीय वर्ष संघ शिक्षा वर्ग लगा था उसमें अटल जी का लोक शक्ति और राज शक्ति विषय पर बौद्धिक था। सभी स्वयंसेवक बहुत प्रसन्न थे कि आज अटल जी का भाषण नजदीक से सुनने को मिलेगा पर अटल जी लगभग 1 घंटे हाथ को पीछे ही किये हुए बिषय पर ही बोलते रहे।मैंने बाद में चाय के समय हँसते हुए कहा कि शिक्षार्थी बहुत प्रशंसा कर रहे हैं ,तो उन्होंने कहा कि उनका सारा ध्यान तो हाथ पर ही था । कहीं चलने न लगे ।

वर्तमान में काशी प्रांत के प्रांत प्रचारक श्री रमेश जी ने बताया कि जब वह काशी में एक भाग के भाग प्रचारक थे। उनका क्षेत्र वाराणसी में हवाई अड्डा से सर्किट हाउस के रास्ते में पड़ता था। ये घटना 97 की है। जब वे 13 दिन प्रधानमंत्री रह चुके थे। इसलिए पूर्व प्रधानमंत्री का प्रोटोकाल मिला हुआ था। एक बार अटल जी वाराणसी, वायुयान से आये। हवाई अड्डे से सर्किट हाउस जाते समय रास्ते में अटल जी ने अपनी कार यकायक रुकवा दिया, पीछे गाड़ियों का लम्बा काफिला रुक गया। सेक्युरिटी वाले सतर्क हो गए। अटल जी गाड़ी से उतरे सड़क के किनारे ही संघ की शाखा लगी थी, सीधे शाखा पर गए, भगवा ध्वज को प्रणाम किया, शाखा पर अधिकारी जो कक्षा 11 का छात्र था उसको भी प्रणाम किया। वह विद्यार्थी उनको पहचानता ही था उसने तुरंत मंडल बनवाया और सभी स्वयंसेवकों का परिचय कराया। फिर कुछ बोलने के लिए आग्रह किया। अटल जी वहीं पर जमीन पर बैठ गए और सभी को एक कहानी भी सुनाया।

||सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः||
महाकुम्भ प्रयागराज 2025

स्वच्छ, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित महाकुम्भ 2025

'वोकल फॉर लोकल' के तहत ओडीओपी कार्यक्रम

स्थानीय शिल्पकारों के उत्पादों को मिली वैश्विक पहचान

विकसित भारत-विकसित उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2024-26
जनवरी प्रथम महाकुम्भ विशेषांक 2025 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।